मीनायण

[मीना जाति का अनुपम ग्रन्थ]

लेखक—रचयिता

श्रीमौक्तिकराम दर्भ (परमारमारण क्षत्रिय)

सीमल खेड़ी

PDF BY - मोहर सिंह मीना
7014697306

सौजन्य - श्री सुग्रीव सिंह मीना
(Retd IRS)

प्रकाशक :

श्रीसीताराम शरण

सीमल खेड़ी

पो. सोजपुर

जि. झालावाड़ (राज.)

एक न मानी शाह ने, भेजदिये फर्मान।
मिश्रदेश कंधार अरु, रूम-श्याम-खुरसान॥
ईराँ-तूराँ-कटक से, काबुल और कश्मीर।
बलख-रुहंग-फिरंग से, आये अगणित वीर॥

हिंदू क्षत्रिय भूप बहु, आये यवन सहाय।
भारतीय नृप फूट लखि, हर्षित मुस्लिम राय॥

हिंदू नृप दल था सातलाख, यवनों का बीस लाख कुल था।
अष्टादश लाख अन्य परिकर, एवं पैंतालिस लख दल था॥
उसमें थे पाँच लाख घोड़े, अरु पाँच सहस्त्र वर हाथी थे।
रणथम्भदुर्ग के नाशन हित, और भी शाह के साथी थे॥
ऋषि लाख क्षत्रियों को तादम, चौहान-खून के प्यासे लख।
विद्वान यवनपति कहँ अपार, आनंद उस काल था बेशक॥
वह मनही मन यों कहता था, हिंदू सम मुर्खा जाति कहीं।
दीपक लेकर यदि ढूढ़ें तो, मुमकिन उपलब्धी होय नहीं॥
हम भी कहते है हिंदुओं में, यदि मिथः विरोध नहीं होता।
तो भारत इतर देशियों से, दुर्गति को प्राप्त नहीं होता॥

★

※ तर्ज तुलसी कृत ※

दिल्ली पति लै कटक अपारा। आयो देश-हमीर मझारा॥
प्रथम कीन्ह मेवात विध्वंसा। कोलाहल तहँ मच्यो गरिसा॥
बरबस हिंदू यवन बनाये। धर्म्म हेतु कई प्राण गवांये॥

※ मीनाराजा सक्ता जी पाकल ※

मेव देश को बीर नराटा। गयो देश जीतन बैराटा॥
नाम भूप को सक्ता पाकल। भूप बिना जंता सब व्याकुल॥
कायर क्षत्रिय बनगये यवना। वीर धरम हित सुरपति भवना॥

किहुँ प्रकार खबरि सुन पाई। मेव देश विपत्ति अधिकाई॥
यह सुनि सक्ता आतुर धायो। शाह फौज में लूट मचायो॥

लुटी रात ही रात में, शह की रिद्धि अपार।
तब दिल्लीपति सों कहै, मंत्री बारहि बार॥
हजरत देश हमीर को, निपट अटपटो जानि।
भिल्लकोल तस्कर बसें, यहाँ रहे अति हानि॥

★

सक्ता नृपने दिल्लीपति को, चर द्वारा साफ चुनोती दी।
यदि ब बस हिंदुन को मुस्लिम, करने कि यहाँ जो मस्ती की॥
तो यथा फौज को लूटा है, वैसे लूँ लूट देहली को।
महिमा को क्षण में छीनि देउँ, तुव बेगम शाह मरेठी को॥
सक्ता की धमकी से डर कर, दिल्लीपति व्हाँ से निकल गया।
हिंदू को यवन न करने का, प्रण भी उसने बस कर ही लिया॥

भूपति सक्ता धन्य तोहि, रक्खा मान मेवात।
तव अनुपस्थिति में बने, यवन करोड़ सु सात॥
मेव देश ते निकल कर, मल्लहारणा शहर।
लूटा यवनाधिपति ने, चला न कीन्ही गहरू॥

मैंना रावत पदवी वाला, था दुर्ग पति मल्लारने का।
पैंतालिस लक्ष शाह दल को, हौंसला न हुआ बारने का॥

रावत क्षत्रिय ते सुना, मलारने का हाल।
क्रोध विवश हम्मीर नृप, सका न देह सभाल॥

परमार अभयसिंह-भूरसिंह राठौर-हरीसिंह बाघेला।
अजमतसिंह शिहरा बीर और, चौहान बंश का सादेला॥
इन पाँचो ही रणधीरों को, भेजा शह से करने को हठ।
तिन बीस सहस्र मीनों को लै, शह को रोका बनास के तट॥

मारण क्षत्रिय सब हर हर कह, टूटे यवनों की सेना पर।
सहसकों मारि नहिं यवन धारि, परिहर रणखेत भगी सत्वर॥
मारण छत्रिनने रण अंदर, शहके हनि सार्द्ध शतम घोड़े।
सैनिक गण तीस हजार वधे, उमराव अमीर वधे थोड़े॥
हम्मीर के सव्वा सौ सैनिक, दश सरदारों युत खेत रहे।
इनमें अजमत सिंह शीहीरा, मुखिया था मारण चेत रहे।
शीहरा पुरातन छत्रिन् को, इक शाखा मारण वीर सुनो।
माँची इनकी रजधानी थी, अजमतसिंह माची भूप गुनो॥
मांची की वर्त्तमान संज्ञा, जयपुर में नगर रामगढ़ है।
जेतारन के अविचारों से, शीहराऽपि निम्न स्तर पर है॥
शीहरा चंद्रवंशी चाँदा, क्षत्रिन का वंश तंतु इक है।
था परम उदार रावमेदा, नृप इसो वंश अंतः इक है॥
सागरमें फँसे पोत बेड़े, नृपवर के नाम मात्र से ही।
डूबते हुये उतराते थे, इस नृप प्रति प्रथित बात ए ही॥
स्वारथी और विश्वासघात, करने वाले कछवाहों ने।
परिवार सहित कर नष्ट दिया, शीहरा वंश कछवाहों ने॥
शीहरा वंश में अब कोई, ऐसा नर पानोदार नहीं।
बिगड़ी को बहुरि बनालेवे, ऐसा कोइ हिम्मत दार नहीं॥
यवनाधिप ने निज कटक, बनास नदी ते हटाय।
दर्रे के अभिमुख रखा, भाग अनेक बनाय॥
यावनी फौज में द्वौलख तो, हिंदु वनिये व्यापारी थे।
पुनि एक लाख सौलह हजार, इस्लामी ठेकेदारी थे॥
थे चार लक्ष वर सूपकार, इतने ही बेलदार मानों।
द्वौ लक्ष कपट में घौंसी थे, श्रुति लक्ष पाहरू थे जानों॥
इक सहस्त्र चिकित्सक सेना में, मरहम पट्टी करने वाले।
इतने ही हरकारे गुनिये, पत्री-चिट्टी देने वाले।

अयन द्वौ लरत रहा।
इतना दल दर्रे के अभिमुख, अनवरत
लाखों मलेच्छ संहार हुए, तद्यपि दर्रा नहिं फतह हुआ॥
पुनि नाम उलगखाँ सेनप ने, दल के चौरासी हिस्से कर।
अपने भाई नसरत खाँ को, त्वर भेज दिया मंडी पथ पर॥
म्होलण इक हिन्दू राजा को, संधी मिस रणतभवँरगढ़ को।
प्रस्ताव संधि से बहलाये, कुछ दिन हम्मीर वीर वर को॥
इत हिंदी घाटी मुखसे जब, सेना कुछ दूर हटाइ गई।
भोलें हिंदू रक्षक समुझे, वीरों अब बंद लड़ाइ हुई॥

विजय दुंदुभी दे चले, दुर्ग रणस्थंभोर।
धर्मसिंह अरु भीमसिंह, द्वौ सेनय वर जोर॥
धर्मसिंह बोला सुनहु, भीमसिंह सरदार।
दोनों का गढ़पर गमन, ठीक नहीं गमख्वार॥

इसलिये सेनयुत सजग रहो, तुम वीर हिंद की घाटी पर।
हम माल लूट का पहुँचाने, जाते हम्मीर राव-गढ़ पर॥

●

* तर्ज तु० कु० *

फर्मसिंह इतना वच कहिके। निजघर चला लूट धन लंके।
भीमसिंह हिंदावत घाटी। रहेउ ससैन मोरचा डाटी॥
धर्मसिंह गा कटक समेता। अर्द्ध कटक लखि शह-दल चेता॥

अभिसे हमला कर दिया, भीमसिंह पर आय।
इस रण में अति युद्ध कर, भीम वीर गति पाय॥
सुनाराव हम्मीर ने, जब यह अत्याचार।
धर्मसिंह कहँ रावजो, बहुत दिया धिक्कार॥
उसके पद पर इत किया, भोजदेव नीयुक्त।
तोड़ मोरचा उत घुसा, शाह कटक संयुक्त॥

इस अवसर पर दिल्लीपति की, सेना अति वृद्धी युक्त हुई।
उसमें बाहर से बहु सेना, विविधेच्छा से संयुक्त हुई॥
तैलंग-मगध-मैसूर-भोट, पंचाल-कलिंग बंग राजा।
वाहल नेपाल रु मेडपाट, हिमगिरि सरदार अंग राजा॥
इन राजाओं ने अपना दल, यावनी फौज में मिला दिया।
विविधेच्छा अपने मनमें रख, दल को बहुरंगी बना दिया॥
इनमें कुछ तो यवनाधिप के, हमदरदी बन कर आये थे।
कितने नृप लूट-पाट ही को, इस सेना में प्रविशाये थे॥
कितने कौतुक की इच्छा से, सेना के इर्द गिर्द ठाढ़े।
हम्मीर की नाक रहै न आज, ऐसे बेदरद बचन काढ़े॥
गज अश्व पदाति मनुष्यों की, सेना वह बहुत भयावह थी।
उस टिड्डी दलवत सेना में, इक तिल भरकोऽपि जगह नहिं थी॥

※ दोहा ※

इसी समय शह दूत बन, म्होलण रणथंभोर।
आकर के कहने लगा, सुन राजन् शिरमौर॥

※ गाना ※

सुनो नृप दिल्लीपति संदेश।

कहना उनका तुमसे राजन्। नहिं हम्मीर हमारा दुश्मन।
चौर हमारा महिमा काफिर, दे उसको नरपेश॥१ सुनो०
अथवा इक लख मुद्रा स्वर्णी, चंद्रकला निज शशि द्युति हरणी।
कन्या हमको देहु विवाही, तो लौटें निज देश॥१ सुनो नृप०

※ दोहा ※

सुन कर इस संदेश को, कह नृप चुप बदमाश।
बरना तेरी जीभ में, खोसौं कलम तराश॥

कहना उस नीच यवनपति से, हम्मीर उसी कुल में से है।
जिसने यवनों के कई बार, कर दिये दाँत खट्टे से हैं॥

※ दोहा ※

ख्वाजामीरां यवनका, एक लक्ष उपरंत।
असीसहँस दल का किया, चौहानन ने अंत॥

मेरे पुरुषा पृथिराज कि तू, रे नीच न ताकत जानता है।
सत बार जनाना भेष दिया, गोरी को क्यों न पिछानता है॥
अर्बुद गिरि अग्नि होत्र द्वारा, मैंना जिमिदारन दीक्षित कर।
मुनियों ने श्रुति कुल प्रगट किये, रे यवनबंधु सुनले चितधर॥
चौहान प्रथम परमार द्वितिय, सौलंकी गुन पडिहार चतुर।
इनमें चौहान वंश से है, हम्मीर वीर रणधीर प्रखर॥
महिमा शरणागत रक्षणका, जो मम प्रण है वह तो मणि है।
भारी विषधर पौनिया असल, उस मणि रक्षक हमीर फणि है॥
ज्यों अहि के रहते अहि मणि को, कोई भी नहिं ले सकता है।
त्यों मेरे रहते महिमाको, तू यवन नहीं पा सकता है॥
पुनि सिंधु तजै मर्यादा को, रवि त्यागें अपनी आतप को।
संभव पृथ्वीको शेष तजें, तो भी न तजौं शरणागत को॥
हां यदि अल्लाउद्दीन यवन, वैश्या स्वरूप निज बेगम को।
हम्मीर राव की भेंट करे, अरु ख[illegible] प्रहार सहे करको॥
तबतो इसमें संदेह नहीं, महिमा को वह पा सकता है।
पुनि महिमा से प्रति शोध पूर्ण, वह हो स्वतंत्र ले सक्ता है॥
म्होलण अति शंकित हुआ, चला शाह के पास।
बाँचि पत्र अमरस बढ़ा, ज्यों अगूनो पा घास॥
बोला मलेच्छ पति रण वीरों, अब सत्वर रणहित गमन करो।
करदो रणथंभको नष्टभ्रष्ट, हम्मीर सुता का हरण करो॥

इस प्रकार बकता यवनाधिप, दलयुत गढ़ अभिमुख आया।
चौहान शिरोमणि ने भी इत, निज क्षत्रिय दल तय्यार किया॥
पुनि शिवमंदिर में विजय हेतु, हम्मीररावजी गये तुरत।
अर्चन वंदन पुनि स्तवन पर, शिव बोले विजय-२ हो सुत॥

* सोरठा *

कीरति युग युग तोर, शंभु कह्यो इतिहास में।
चलिहहिं आशिष मोर, रण में भय नहिं व्यापहहिं॥
मुहु मुहु शिवहिं प्रणाम, कर हमीर हर्षित भये।
लगे युद्ध के काम, हर मंदिर ते निकरि कैं॥

नृप हमीर आज्ञा जब पाये। मित्र अमात्य बंधुगण आये॥
रावत-भड़ बाँके सरदारा। स्वामिभक्त सब समर जुझारा॥
रावत पदवी वाले मैंना, अरु भड़-पचभड़ के पचवारा।
प्राचीन क्षत्रियत् की शाखा, द्राविड़ वीर अति बरियारा॥
भड़ के प्रति विश्व कोष लिखता, इस वंश ने कई पीढ़ियों तक।
शासन था किया अयोध्या का, इस वंश ने कई पीढ़ियों तक॥

* दोहा *

भड़के पुरखन के प्रति, लिखा जोधराज कविराय।
तिसको अविकल रूप से, नीचे देखो भाय॥

* जोधराज कविकृत चौपाई *

काछ वाछ दृढ़ वज्र शरीरं। माया मोह न लोभ अधीरं।
अमृत बचन सबन ते भाखें। जाचत आपन प्रानन राखें॥
रणथम्भनाथने भिन्न भिन्न, स्थलों के रक्षण कारण हित।
योग्यता-पराक्रम युत सेनप, त्वर किये नियुक्त महारण हित॥
गढ़ की प्राचीरों पर नृप ने, गढ़-गोप्ता-धर्म निवारण हित।
तनवाये तंबू इतस्ततः, अपनी सेना की सुविधा-कर॥

मार्मिक स्थलोंपर तेल-राल, धरवाया गर्म उबलता सा।
संभव रिपु निकट चला आवे, तो छोड़ें उस पर जलता सा॥
उपयुक्त स्थानों पर तोपें, रणथंभनाथ चढ़वाय दईं।
इतने में रिपु की सेना भी, रणहित गढ़ सन्मुख आय गई॥
दिल्लीपति का हुक्म पा, छिड़ा घोर संग्राम।
द्वौ सेनापति शाह के, इसमें आये काम॥

हम्मीर राव के पितृव्य, रणधीर छाणगढ़ अधिपति ने।
मुहम्मद अजमतखाँ सेनप युत, और भी वीर मारे कितने॥
मारण क्षत्रिन् की सेना ने, यवनों के पैर उखाड़ दिये।
दिल्लीपति ने तब निज दल के, सेनापति वादित खान किये॥
वादित ने बिखरा दल बटोर, रणधीर से घोर मशान किया।
अन्ततः छत्रि कर तीरथमें, उसने भी अपना प्राण दिया॥
सैनप वादित के मरते ही, खिल्जी-सेना रण तज भाजी।
दूसरे योम खुद शाह लड़ा, तौ भी न विजय दुंदुभि बाजी॥
पिच्चासी सहस्र शाह का दल, इस महायुद्ध में खेत रहा।
यों उभय पक्ष थक जाने से, मारण! कुछ दिन रण लेट रहा॥
अवसर रण अनध्याय पाकर, दुसरा मुहम्मदखाँ सेनापति।
बोला हमीर से यों सन्मुख, रण करन विजित हों दिल्लीपति॥
अतएव यहाँ कछु सैनिक रख, चढ़ चलो छाणगढ़ के ऊपर।
पहले हंमीर से खतम करो, रणधीर राव कहँ युत परिकर॥
खिल्जी बोला ठीक है, चलहु छाणगढ़ वीर।
पकड़ो या मारो प्रथम, वीर राव रणधीर॥
चले शाह लै विपुल दल, जबं छाणगढ़ तीर।
मारण चहुवानी कटक, लै धाये रणधीर॥
करि मन कोप चले रणधीरा। सजि निज सैनिक सैनप बीरा॥
गजराजन पर परीं अँबारी। भट मन चाव हर्ष अतिभारी॥

चंचल घोड़ों की बाग लिये, अश्वप पैदल अनु जाते हैं।
हम्मीर रावको कर प्रनाम, रणभेरी धीर बजाते हैं।

※ यथा-कवि जोधराज कृत छंद ※

हल्ला करि वीर चढ़ै दलपे। मनु राघव कोप कियो खल पै॥
उत शाह सु हुक्म कियो रिसमें। सब सैन जु आय जुरी छिनमें॥
विफरै सब वीर सुधीर मन। सब स्वामि सुधर्म्म सुकीन पन॥
दोउ ओर सु तोप सु कोपि छुटैं। गढ़ कोट न रुंधत पार फुटैं॥
बरषै घर आगि सुधूम उठी। भुर अम्बर भूमि कराल वुठी॥
बहु गोलन गोलन गोल परै। गजराजनसों गजराज जुरै॥

※ दोहा ※

हयसों हय पैदक्कन सों, पैदल जोरी जानि।
लरहिं सुखेन विशाल भट, जै जै कार बखानि॥

बहु बान दुहूँ दल माँझ परै। धर शीश कहूँ कर पाँव झरै॥
बहु शोर अँधेर सु घोर भयो। निशि बासर काहु न ज्ञान रह्यो॥
कर कुंडिय वीर कमान कसैं। गज वाजिन फुट्टत पार लसैं॥
बरसै मनु पावस बुंद अयं। बहु फुट्टत पोखर कंगलयं॥
तह लागत सेल सुपार हियं। मनु श्रोत पनारन ते बहियम्॥
लगि तेग करैं दुव टूक तनं। जिमि शीश परै तरबूज घनं॥
तहँ शाह सु सैन मुरक्कि चली। चहुवान तबै करि कोप बली॥
मुरकी पतशाह तनी जु अनी। मुख बात सबै पतशाह भनी॥

※ चौपाई ※

निजदल द्रुत दिल्लीपति जाना। अति रिस तिन प्रतिवचन बखाना॥
मम धन खाय खराब्यो नाना। समरभूमि अब प्रिय लगु प्राना॥
मोंहिं अछत जौ रण तजि जाई। मोरे कर वध तिनको भाई॥

बकसी तब आय सलाम कियं। लखि रूमिक अप्प सुसंग दियं॥
रणधीर तबै सनमुक्ख पिले। बकसी करि कोप सु ओप मिले॥
गुरजें रणधीर के शीश दई। तिन ढल्ल सु ऊपर ओटि लई॥
बरछी रणधीर सु अंग दियं। धर फुट्टि सो बाजि को पार कियं॥
हय तैं बकसी धर माँहिं परयो। तेहि संग सु मीर पचास गिरयो॥
इक रूमिय धीर सु आय जुरयो। किखान लिये मन नाहिं मुरयो॥
रणधीर इतै उत खात बलम। लतपत्थ हुये भय देख बलम्॥
रणधीर कटार सूँ पार कियो। बलखान सु तेग जु कंध दियो॥
सिर टुट्टत धीर उठ्यो धड़यं। बलखानहिं आय गह्यो करयं॥
भिर बत्थ सु हत्थ पछारि बलं। हिय पार कटार किये सु खलं॥
परयो खेत बलखाँ दुच्चारो। अपर संग दल बीस हजारी॥
मीर पचास संग तेहि के सुत। इक लख रूमि विहस्तहिं पहुँचत॥

★

तीस सहँस रणधीरके, अच्छे साथी जान।
धीर रुण्ड दो प्रहर लौं, महि नाँच्यों रण तान॥
एक सहँस गज नष्ट करि, परयो मेदनी रुंड।
वीरोचित गति धीर गे, महिमा रह्यो अखंड॥
पक्ख उजारो चैत्र सुदि, तिथि नौमी शनिवार।
बीस सहस्र छत्री मरे, अबला जलीं हजार॥

※ रणथंभोर पर चढ़ाई ※

※ गाना ※

विजय कर छाणगढ़ कहँ शाह दल रणथंभ कहँ आया।
दुरग अभिओर घेरा डाल, नृप ढिग दूत भिजवाया॥
कहा उसने सुनहु राजन्, अजी अब भी दे महिमा को।
एक के वास्ते मत नष्ट कुरु धन-धाम-गरिमा को॥

कहा हम्मीर ने अनुचर तू जाकर शाह से कहदे।
अरे ! हम्मीर महिमा को न देगा शाह से कहदे ॥
अहो ! रणधीर से चाचा और कुल दीप द्वौ बालक।
समर तीरथमें जब तीनों चुके मर शत्रु के शालक ॥
बता पुनि शोच अब किसका अधम उस शाह से कहदे।
कि आगे किस विषय का भी, मुझे संदेश नहिं भेजे ॥

* सोरठा *

ज्यों का त्यों संदेश, सुना दिया जा दूत ने।
सुनि अति कुपित मलेच्छ, बोला गोलन्दाजते ॥
ऐ मेरे गोलंदाजों अब, गढ़ पर तोपें ऐसी मारो।
जिससे गढ़-तोपें ठस होवै, चर्खों से उन्हें नीचे डारो ॥

यवनों से शह की आज्ञा का, यद्यपि पालन भरपूर हुआ।
लेकिन उलटा परिणाम रहा, शाही दल चकना चूर हुआ ॥

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० *

दुर्गोपरि उत्तर की ओरा। सभा भवन इक चित कर चोरा ॥
एक दिवस हम्मीर नृपाला। तहँ करि बैठे सभा विशाला ॥
मैंना क्षत्रिय क्षत्तिस कुल मधि। राजत नृप हमीर जनु सुरपति ॥
नृप अभिमुख तिलोत्तमा सरवरि, नृत्यति चंद्रकला इक पातुरि ॥
सा बरोरु गावत अस रागहिं, तेहि सुनि शाह हृदय रिस जागहिं ॥

पुनि पातुरि पद-घात करि, अनुपम कीन्ह कटाक्ष।
सब छत्रिन् अवलोकि तेहि, हर्षि कह्यो शाबाश ॥

शाह सक्यो नहिं सहि अपमाना, मंत्रिन बोलि मंत्रणा ठाना ॥
को तुम मधि अस चतुर सुजाना, पातुर कहँ मारै अस वाना ॥
रंग-भङ्ग कर दे हमीर को, हमरे दल अस कहऊ वीर को ॥
तिस कहँ पुष्कल जागीरी युत, अवशि देऊँ बहु दौलत संपत ॥

शाह वचन सुनि गबरुसिंह, कहा सुनो मम बत्त।
अबलावध अनुचित अहैं, तदपि सुनिय हजरत्त ॥
लो करता हूँ रंग में भंग, ऐसा कह एक तीर फेंका।
पद-तल में लगने से सबने, पातुर को लोट पोट देखा ॥
हो गया रङ्ग में भङ्ग तुरत, पातुर स्वर पूरा दय्या का।
महिमा बोला नृप शिरोमणे, यह काम है मेरे भय्या का ॥
वह मारण क्षत्रिय मेरा ही, सौदर है छोटा भाई है।
हे शरणागत रक्षक हमीर, यह गबरू-शर-निपुनाई है ॥
यदि आज्ञा हो तो भाई के, शर-जौहर का उत्तर देदूँ।
नृप बोले हां अवश्य तबतो, मैं बल की बलिहारी लेलूँ ॥

* दोहा *

मारण क्षत्रिय महिमने, सत्वर लै धनु बान।
शाह-मुकुट का लक्ष्य कर, हता करण-लगि तान ॥

शर के लगते हीं शाह मुकुट, टुकड़े-२ हो जुदा गिरा।
यवनाधिप के छक्के छूटे, विस्मित मूर्छित या खुदा मरा ॥
विस्मित महरमखाँ जहँपनाह ! यह महिमा-तीर कुशलता है।
पुरतः भक्षित तव अन्न नमक, कर चुकता वीर पुलकता है ॥
भूपति हमीर की आज्ञा पा, वह वीर जु अबके वार करै।
तब झूठ नहीं यवनाधिपका, इक क्षण में बेड़ा पार करै ॥
इसलिये उचित है अब ह्यां से, सेना हटाय इँदपथ चलिये।
महिमाको पाने की इच्छा, हजरत अब बिल्कुल मत करिये ॥

* सोरठा *

महरमखाँ की बात, मानि शाह ने कूच की।
आज्ञा दी अचिरात्, शाही-दल सजने लगा ॥

सुरजनसिंह वंदजात, कोषाध्यक्ष हमीर को।
मिल शह से नतरात, तिष्ठु तिष्ठु काहे भगो॥
छाणदुरग को राज, जौं दिल्लीपति देहु मोंहि।
विजय तुम्हारी आज, करवाऊँ रणथंभ पे॥

* सोरठा *

एवमस्तु सरदार, छाणदुर्ग व्यतिरिक्त सुन।
दौलत अपर अपार, तुम्हैं देहुँ अल्लाकसम॥
शाह-वचन-विस्वास, मानि दुष्ट सुरजन्नने।
दुर्ग-विजय-प्रण भापि, आय दुरगरणथंभ में॥

जौंरा-भौंरा नामक सुरम्य, अन्तरगृह गढ़थँभरणमें था।
यह रण-सामग्री की चीजों, से रिक्त नहीं था पूरण था॥
तद्यपि कृतघ्न इस सुरजन ने, आकर अंतरगृह के भीतर।
सूखा चमड़ा बिछवाइ दिया, इसलिये कि रिक्त गुनैं नृप बर॥
सेनप रतिपाल-रायमल कहँ, सँग लै नृप से बोला डरते।
महाराज युद्ध उपकरण सभी, गोले बारुद हुये चुकते॥
स्वामी-द्रोही इस महिमा हित, नहिं राज्य भ्रष्ट करना अच्छा।
साधारण राजा को शह से, नहिं बैर-भाव करना अच्छा॥
इसलिये उचित अब महिमा को, यवनाधिप ढिग पहुँचा दीजें।
पुनि अख्तियार महाराज के है, दिल में आवे सोई कीजें॥

* दोहा *

सुरजन तेरी बात का, होता नहिं विश्वास।
तब खुद श्री महाराज ही, चल कर करैं तलाश॥
आये नृप पाताल गृह, फेंका दृषद्विशेष।
उठा खड़क सूखा चरम, कुछ नहिं चले नरेश॥

इसी समय सुरजन-सखा, रतिपाल ने जाय।
घोषित ऐसा कर दिया, नृप अंतःपुर मांहि॥

* चौपाई *

चंद्रकला भूपति को बाई। पाय शाह फिर मिटै लड़ाई॥
कवनेहुँ भाँति सिखापढ़ा, भेजी भूप अगारि।
नृप हमीर की आत्मजा, चंद्रकला सकुमारि॥

रतीपाल की सिखाई हुई चंद्रकला हमीर की लड़की
अपने पिता श्री हम्मीर से कहती है

* दोहा *

काँच कणिक इक व्यर्थसा, तात मोंहि करि जान।
राज्य-प्राण पितु आपका, चिंतामणी समान॥
मेरी यह विनय आपसे है, इनके हित मुझे फेंक दीजै।
प्रण-प्राण-राज-हठ अपने को, इस तरह पिता रक्षा कीजै॥
पुत्री की यह युक्ती सुनकर, सुकृति नृप का जी भर आया।
बालिका पुत्री तव दोष नहीं, तुझको सिखलाया सो गाया॥
तुझको मलेच्छ कहँ दे बेटी, सुख पाना मेरा वैसे है।
निज मांस अशन कर जीवन का, यापन करना हो जैसे है॥
ऐसे जीवन के बदले तो, दशसहसबार मरना अच्छा।
ऐसा सँबंधकर पित्रोंका, मुहँ काला करना नहिं अच्छा॥
तेरे ऐसे शिक्षक गुरु को, रिस होता जीभ साफ काटूँ।
जाओ बेटी घबराउ नहीं, मैदान ल्हाश रिपु से पाटूँ॥

* दोहा *

भय-संकोच ते विकल ह्वै, चंद्रकला सकुमार।
भागि भवन पैंठी तुरत, नृप मन सोच अपार॥

नृप को अति शोकातुर विलोकि, महिमा बोला हा धिक्क मुझे।
मेरे कारण मेरे शरण्य, सर्वस्व त्यागि जौं दुःख भजें॥
अब शरणागत वत्सल नृपेश, मेरे कारण नहिं दुख पाओ।
मैं स्वयं शाह से जाय मिलूँ, भूपति कहदो मुझसे जाओ॥
मेरे खून का पियासा जो, दिल्लीपति हराम जादा है।
पीते ही दिल्ली लौटेगा, आपकी मिटै सब बाधा है॥
जब शरणागत महिमा एवं, वच निपट निराश बोल उट्ठा।
तब शरण्य के भी सब तन का, सहसा विशुद्ध खूँ खौल उठा॥
आखें अंगारा रिपु प्रति कर, महिमा को छाती लगा लिया।
माशुचः अहमत्वंचेक अंश, से हैं प्रभूत विश्वाश दिया॥
परवा न मुझे रणथंभ कि है, परवा न प्रिया देवल–सुत की।
परवा नहिं चंद्र कला की है, परवा मुहिं तुझ शरणागत की॥

※ दोहा ※

इतना कह सुत रतनसिंह, भेजा नृप चित्तोर।
पुनि सैनिक गण ते कहा, सुनो सभी कर गोर॥

अब समय उपस्थित सरदारों, सुकृत हित प्राण निछावर का।
मृत्यू प्रेयसी के प्रीतम ही, साथी मम काम न कायर का॥
जिनको निज प्राण पियारा हो, वे अभी खुशी से घर जायें।
जाकर रण में पुनि भग करके, हम्मीर शत्रु नहिं कहलायें॥
जितराव–सुवन जब इस प्रकार, मंत्रणा युक्त भाषण बोले।
तव बाँके मिन–कूरम क्षत्रिय, उत्तर में राजासन बोले॥

※ दोहा ※

सतो-शूर नहिं मौत से, डरते हैं महाराज।
आलिंगन करते हरषि, तजिय सोच नृपराज॥

हम कुल शृंगार कहा करके, नृप कुल अंगार नहीं होंगे।
प्रण टेक कहैं अपने प्रभुके, हम धोखे दार नहीं होंगे॥

प्रभु का जो हमने नमक अन्न, खाया अबतलक खयाल करैं।
आया मौका भाग्य से आज, तेहि सम्यक् भाँति हलाल करैं॥

साधु–२ हम्मीर कहि, होउ सजग सब बीर।
मैं भी आता हूँ अभी, अस कह चले हमीर॥

शौचादि कृत्य से निवृत्त हो, निर्मल जल से अभिषेक किया।
केसर संजुत पीले अंबर, पहने सिर मुकुट विशेष दिया॥
वीरों के छत्तीसों आयुध, नृपराजने धारण किये मुदा।
वखतर-दस्ताने-झिलम टोप, तुर्रा कलँगी सरपेच गदा॥
तेगा-तलवार-तबल-तौमर, तोराँ-कटार-धनु-गंडासी।
गोफन-मुग्दर-मूसल लाठी, लोहेंडी-साँग-सेल-फांसी॥
शर पेशकब्ज-पिस्तौल-परशु, बर्छी और चक्र लिया विछुआ।
वर भिंदिपाल कर भुशुंडि ले, रण हेतु भूप तय्यार हुआ॥
नृप की सब सेना भी नृप इव, जब उक्त भाँति तय्यार हुई।
तव वीरों के स्वागत हित नभ, सुर कन्यन इमि शृंगार ठई॥
सुंदरि आकाश विमानों में, सिरफूल-आड़-ताटंक-तिलक।
स्रक्–अङ्गद–जोशन–पौंच और, पाजेब पहन अति रहीं पुलक॥
नाना प्रकार के वर्ण युक्त, कञ्चुकि-चोली-चौबंदादिक।
वस्त्रा-भूषण से सज्जित हो, नभ में स्थित हैं रंभादिक॥
इस तरह युद्ध के रँगराते, मदमाते वीर इधर से चले।
टीड़ी-दल बत शर बरसाते, रिस खाते यवन उधर से मिले॥
दोनों पक्षों में पहले तो, तुपकों का धुआँ घोर माचा।
अग्न्यास्त्रों की वर्षा द्वारा, प्रलये सा हुआ शोर साँचा॥
अग्न्यास्त्र मिथः जब लड़ लड़कर, उस समरभूमि में शांत हुए।
तब उभय पक्ष के वीरों के, त्वर चन्द्रहास पर हाथ गये॥
सबने सहसा तलवार तबल, तेगा-छुरिका रु कुठार लिया।
विद्युद-भा जैसे शस्त्रों से, वीरों ने युद्ध अपार किया॥

पल में वह मुदमय समरभूमि, करुणा-वी भरत पयोधि हुई।
मृतकों के लगे वृहद दूहे, घायल-मूर्छित बहु शोधि नहीं॥
रथ-अश्व-शफाओं से उत्थित्, पुष्कल सुधूलि नभ पर छाई।
उस प्रगढ़ तन में निज पर का, वीरों को ख्याल नहीं भाई॥

जो सन्मुख पाया हता, नहिं प्रतिपच्छि विचार।
नदी रक्त की बह चली, गज हय मरे अपार॥

उस भीषण रण की सरिता में, गज-हय-नर-शव बहते जाते।
हिंस्रक पशु-पक्षी-गीदड़ादि, मृतकों का सद्य मांस खाते॥
पुनि कैसी वह रण सरिता है, दोनों दल जिसके युग तट हैं।
शोणित का जल अथाह जिसमें, जलचर जिसके मृत-पशु-भट हैं॥
विद्युद सी तलवारें सरि-अहि, तुपकादिक मत्स्य मकर भाई।
मृत वीरों की ढालें कछुए, मदस के झाग कविन गाई॥
सिर-कच की है सिवार नीकी, वीरों के टूटे धनु लहरें।
मरमर कटकट जो वीर गिरें, वे ही सरि-तट के द्रुम गहरे॥
अति युद्ध कुशल उस सरिता के, अच्छे तैराक सुनहु मीनों।
घायल भट नदी किनारे के, अति श्रमितपथिक मानों मीनों॥
गीदड़-वृक-गृध्र नदी तट के, रहने वाले, वक की सम है।
वीरों का रिस है घोर धार, कायर रणसरि की ग्रीषम हैं॥

★

गोमायु गिद्ध वायस कुर्रा, खा मास अंतड़ी खींचत हैं।
योगिनी भूत-वैताल आदि, अपने खप्पर को सींचत हैं॥
नाना विधि से आलाप तान, लै गावैं गीत विचित्र विधी।
नाचें कूदैं उत्साह करें, सब बोलत वाक् विचित्र विधी॥
रुधिरोंपल का बाहुल्य देख, शादी विवाह आरंभ हुआ।
शिव का भी इन भूतों के सँग, अति भीषण तांडव नृत्य हुआ॥

भूतों ने अरु भूतेश ने जब, इस प्रकार दिल अरमाँ खोले।
तब भटरस से उत्साहित ह्वै, हम्मीर शृगालन ते बोले॥
मित्रों क्रोष्ठारों यदि धाता, पृथ्वी पर वीर न निर्माता।
तब तुम लोगों का इस प्रकार, कहु कैसे पेट भरा जाता॥
अब सुनो हमारे वीर मृतक, जो हुए यहाँ रण के सन्मुख।
उनकी रहाशों को खींच खींच, मत करना तुम रण से परमुख॥

वयस्याः क्रोष्टारः प्रतिश्रृणुत बद्धोञ्जलिर्ग्यम्।
किमप्याकांक्षामः क्षरति न यथा वीर चरितम्॥
मृतानामस्माकम् भवतु परवश्यम वपुरिदम्।
भवद्भिः कर्त्तव्यो नहि नहि पराचीन चरणो॥

दुद्धर्ष मार के मचने पर, यवनों की सेना पड़ भागी।
शह का पुष्कल असबाब लूट, क्षत्रियगण भे सब बड़ भागी॥

विजय नगारा दे चले, दुर्ग रणथंभ ओर।
किले माँझ अभिसे मचा, जयति-२ का शोर॥

दूसरे रोज यवनाधिपने, निज दल के चार भाग करके॥
अति कठिन मार बस लगातार, जारी की मार्गरोक करके॥
मारण स्थगित हो जाने से, बह्यागत खाद्य पदार्थ रुके।
देवासुर जैसा रण विलोकि, दर्शकगण सब रह गये थके॥
यह महायुद्ध मधु से नभ तक, अनवरत रात दिन शुरू रहा।
सम्बत् वसु शर-गुण(८५३१)चंद्रादिक, रण बारह वर्ष प्रयंत रहा॥
उपरोक्त पंचमासिक रण में, रण सामग्री सब बीत गई।
अन्नार्घ हुआ स्वर्ण से दुगुन, दुर्भिक्ष दशा भयभीत हुई॥
इस हालत में अनेक साथी, रणथंभनाथके मलेच्छों में।
संयुक्त हुये यह देख देख, नृप पड़े महा संदेहों में॥
नृपने सोचा अति संभव है, महिमा भी प्रत्याघात करे।
इस हालत में मंशा उसकी, क्या है उससे कुछ बात करें॥

अस विचारि महिपाल ने, महिमा लिया बुलाय।
लगे कहन उससे वचन, इस प्रकार समुझाइ॥
महिमा देखो ना विपद समय, मेरे साथी मोहि तज-२ कर।
मेरे प्रति द्वन्द्वी से मिलते, जाते हैं देखो भज भज कर॥
मैं तो प्रण-देशभक्ति के हित, निज प्राण समर्पण पर उद्यत।
लेकिन इसके पहले लेलूँ, तुझ शरणागत की भी संमति॥
संमति क्या लेलूँ शीघ्र बता, ऐसा कोइ स्थान सुरक्षित वह।
हे मित्र कुटुंब युत व्हाँ तुझको, रक्खौं मेरा निश्चय है यह॥

* दोहा *

मेरे जीते जी तुम्हैं, सकुशल युत परिवार।
पहुँचाऊँ आनंद युत, जहाँ तुम रहु गमख्वार॥
महिमासिहने जब सुनो, इस प्रकार नृप बात।
महा व्यथित उतर रहित, लौटा घर अचिरात्॥
कुटुंब धराशायो किया, महिमाने घर आय।
पुनि हमीर ढिग जाय कै, बोला शीश नवाय॥

ऐ राजन् मेरे परिजन हित, मिलगया सुरक्षित थल भारी।
व्हाँ जाने हित सब विस्तर भी, कस चुके सुता-सुत अरु नारी॥
रौरे दर्शन की अभिलाषा, उनको उत्कट पूरी कीजै।
गतव्य स्थलपर रहने की, राजन् समुचित शिक्षा दीजै॥

महिमासिह की बात सुन, बिस्मित रणथँभ नाथ।
महिमा के घर तुरत ही, स्वानुज बीरम साथ॥
टिकट रामपुर का लिये, महिमा का परिवार।
देखि भूप हम्मीर कह, हाय! हाय!! धिक्कार॥

भीभत्सकार्य अति घोर देख, रो पड़े रावजी बालकवत।
परमार महिम तुमने ऐसे, मारण संज्ञा सार्थक की सत॥

ऐ सच्चे स्वामि भक्त तुमतो, कर चुके स्वामि भक्ती पूरन।
हम्मीर का हठ भी रहजाये, दे परामर्श ऐसी शूरन॥

सुनहु नाथ विधि गति प्रबल, महिमा कह बिलखाय।
मम मृत्स्वजनों के लिये, जनि सोचहु नृप राय॥

पुनि कहा रावजी कोई भी, हालत में आप न समझें यह।
प्रभु इतर राजपुत जाती सम, कृतहन मम मारण जाति न यह॥
स्वामी और सच्चे सेवक का, है साथ जन्म-जन्मान्तर में।
महिमा प्रभु का नहिं साथ तजै, इस भव में और भवान्तर में॥
यह सुन नृप का उर आनँद से, प्रफुलित महिमा उर लगालया।
पुनि रोते-२ निज कर से, महिमा-परिजन दशगात्र किया॥
दशगात्र स्थलपर अति सत्वर, वर दंत स्थंभों की छतरी।
महिमा की स्मृती में विरचीं, जितराव सुवन नृपवर अत्री॥
वह आज भि रणतभवँरगढ़ में, महिमा की याद दिलाती है।
मारण क्षत्रिय जाती महिमा, वह पूरण प्रगट कराती है॥

●

तदनंतर अपनी अवशेषित, स्वामी सुभक्त सेना लेकर।
जितराव-सुवन गढ़ से बाहर, निकले रण उत्साहित होकर॥
सत्वर रिपुओं पर टूट पड़े, संग्राम किया अति भयकारी।
उपयुक्त व्यूह युत होने से, इस बार न रिपु सेना हारी॥
प्राणों का मोह त्याग करके, जब मुसलमान करगये गजब।
उत्साहित बीरों को करता, यवनाधिप खिल्जी बोला तब॥
शावास बहुत अच्छा बीरो, दौड़ो-२ मारो पकड़ो।
मगरूरी काफिर नृप हमीर, भगने न पाय जीता पकड़ो॥
वागी महिमा को पकड़ जकड़, जल्दी समक्ष लाओ मेरे।
पुनि भूप-सुता श्री चंद्रकला, को भी बरबस लाओ नेरे॥

जो वीर हमीर रावजी कहँ, वश कर मेरे ढिग लावेगा।
वह रवि सहस्त्र की जागीरी, के सहित बड़ा पद पावेगा॥
अब्दुल सेनप यह सुन करके, निज दल लेकर के अग्र बढ़ा।
रणथंभी-क्षत्रिय सेना हित, यह काल रूप होगया खड़ा॥
इसने छल बल कर अनीति से, अगणित सैनिक सामंत हते।
कतिपय कबंध रण नाँच उठे, गंगाधर-बीरम-जाज हते॥

* कबंध तथा खेचर उठने की हत सैनिक संख्या *

* चौपाई *

दशलख अश्व सहँस दश हाथी। रथी डेढ़शत इमि यम साथी॥
दश करौर पैदल मर जबही। नृत्यत इक कबंध रण तब ही॥
यहि विधि कोटि कबंध उठै जब। खेचर एक नँचत उठिकै तब॥
कोटिन खेचर उठि नभ डोलैं। महाप्रलय सम रण तेहि बोलैं॥
अच्छा रण में अगणित पैदल, दौसौ घोड़े त्रिंशत हाथी।
योधा षट्सहस्त्र वीर बाँके, यमराज काल के भे साथी॥

अब्दुल सेनप ने तीस सहँस, योद्धा लै नृप हमीर घेरा।
बाणों को वर्षाते अपना, हाथी धीरे आगे प्रेरा॥
महिमाने देखा गजब हुआ, राजा पर संकट भारी है।
सत्वर भूपति की रक्षा हित, द्वौकर तल्वार सँभारी है॥

घुस पड़ा यवन दल के अंदर, अगणित म्लेच्छों को काट दिया।
जो सन्मुख हुआ उसे मारा, मैदान ल्हाश से पाट दिया॥
जा गर्जा यवनाधिप सम्मुख, बोला महिमा आ पहुँचा है।
दिल की मुराद पूरी करिये, हजरत मौका यह अच्छा है॥
जितरावसुवनके पास दूत, जब मुझको लेने बहु भेजे।
लो स्वयं आगया अबतो मैं, ताकत हो तो बंधन कीजै॥

अय देश शत्रु तुझको मौका, देता है मारण क्षत्रिय यह।
अपना रक्षक पुकार कोई, वरना तेरा वध करता यह॥
महिमा की घुड़की से काँपा, भागा अल्लाउद्दीन यवन।
सेनप खुरसान के पीछे जा, बोला बन अति गंभीर वचन॥
मुश्फक खुरसान जु महिमा को, त्वर पकड़ बाँध कर लायेगा।
वह तीस सहस की जागीरी, नौबत-निशान-असि पायेगा॥

जागीरी के लोभ से, खुरासानखाँ वीर।
तीस सहस दल लै गया, महिमासिंह के तीर॥
गजारूढ़ अब्दुल यवन, उत हमीर अभिओर।
पहुँचा शर वर्षा करत, घन सम करता शोर॥

अब्दुल मलेच्छ का शर प्रवाह, निज तीरन ते नृप रोक दिया॥
पुनि लाघवता से एक बाण, हत कर अब्दुल का प्राण लिया।
महिमा ने खुरसान पर उत, इक ऐसा खड्ग प्रहार किया॥
सिर भुट्टा सा रिपुका जिससे, उड़गया प्राण झट छोड़ दिया।

* दोहा *

काटि शीश खुरसान का, महिमासिंहने आशु।
भेंट रावजी के किया, राव वत्स शाबासु॥
महिमा पुनि निज माथ को, भूप चरण में टेक।
विनय सहित कछु इक वचन,बोला सहित विवेक॥

शरणागत-प्रण रक्षक महिपति, चौहान शिरोमणि नाथ तुम्हें।
कोटिशः धन्यवादों के युत, महिमा का है प्रणिपात तुम्हें॥
कांचन कामिनी परिवार सबै, तजि भूप धर्म पर खूब डटे।
मेरी रक्षा के प्रण हठ से, सरकार न किंचित आप हटे॥
महाराज की अविचल कीरति यह, इतिहास के सुवरण पंनोपर।
शश्वतः रहेगी रहेगि पुनि, कवियों के मधुकर मंनो पर॥

वह घड़ी मुबारक कब होगी, मैंनी माता से जन्म सु-ले।
आप से मिलौं पुनि बार बार, मैं अपने मन में प्रफुलित हैं॥
महिमा को हिरदय से लिपटा, आश्वासन् दे नृप यों बोले।
हे तात अधीर न हो किंचित्, संसृतिसे वीर नहीं डोलैं॥
मरना जीना तो इस जगका, है मुख्य धरम अनुताप है क्या।
पुनि हम तुम एक अंश से हैं, सुत बता दूसरा बाप है क्या॥
मिन-कूरम कुल दोनों हैं इक, हे तात् समझ के झगड़े हैं।
वैसे तुम-हम ऋषि पद्म करे, उत्तम-विग्रह के टुकड़े हैं॥

खुरासान-अब्दुल जबै, मरे वीर गति पाय।
दिल्लीपति सेना तबै, भागो अति भय खाय॥
इस गड़बड़ में रहगया, दो दिन तक रण बंद।
पुनि गबरूँ सेनप किया, जड़ कुजाति शह मंद॥

गबरू ने अवशेषित दल ले, रणथंभ पे युद्ध निशान दिया।
विजयी रणथंभी सेना से, यवनों से घोर मशान किया।
महिमासिंह रण उत्साही ने, इसदिन भो अगणित मलेच्छ हने।
पुनि रक्तरँगी तल्वार लिये, शह ढिग जा बोला रे अदने॥
तेरा अब्दुल और खुरासान, रण तीरथमें तन त्याग गया।
फिर भी मौका मैं देता हूँ, कोई निज रक्षक ढूँढ़ नया॥

खिल्जी ने अति कुपित हो, गबरूसिंह फिल हाल।
महिमा के प्रतिपक्षमें, खड़ा किया तत्काल॥

यह महिमासिंह और गबरू सिंह, एक ही जठर से जन्मे थे।
शोभनपुर-नृप मित् औरस से, मैंनी महिला में प्रगटे थे॥
ये उभे सहोदर भाई थे, गबरू शह सेनप संप्रति था।
यह महिमा खिल्जी-द्रोही था, यह सारा रण इसके प्रति था॥
गबरूसिंह ने जब अग्रज को, अपने सन्मुख रण हित देखा।
रो पड़ा अचानक बिसुक बिसुक, भाई के पद मस्तक टेका॥

गबरू बोला जेष्ठ मम, निज कर ले तल्वार।
मेरा ही यह शीश तुम, क्षण में लेहु उतार॥
महिमा ने निज अनुज के, मनकी जानी बात।
बरबस लिया उठाय उर लाय कहा सुनु तात्॥

हे तात् लड़ाई से पहले, और तात् लड़ाई के पीछे।
दोनों हम सौदर भाई हैं, रण मध्य मिथः बैरी नीके॥
संग्राम समय सब रिश्तों को, जो वीर तिलांजलि देता है।
वह विजये श्री अधिकारी है, वहि बीरोचित गति लेता है॥
इस समय न तुम मुझको भाई, समझो और मैं भी नहीं तुम्हें।
संप्रति प्रतिद्वन्द्वी तुम मेरे, वैसेही समझो अनुज हमें॥
संप्रति हम निज-२ स्वामी का, भक्षित जलनमक हलाल करें।
हे तात् देह यह क्षण भंगुर, किंचित् इसका न मलाल करें॥
छोटे भ्राता गबरू तेरा, आओ मैं स्वागत करता हूँ।
तुम-हम दोनों सुखमान लड़ें, यह तुमको आज्ञा देता हूँ॥
रण आमंत्रित हो दोनों ने, प्रलये सी मार मचाई है।
जिससे नभ पृथ्वी बसुंधरा, पीपल-दल-वत थर्राई है॥
आखिर महिमा ने गबरू का, निज खड्ग से शीश उतार लिया।
गबरू ने भी मरते मरते, इक तीक्ष्ण-तीर प्रहार किया॥
गबरू के तीर करारे से, महिमा को घनी नींद आई।
इस प्रकार दोनों को इक दिन, सुर-सुंदरि ने स्रक् पहनाई॥
मारण क्षत्रिय भ्रात द्वौ की, जगतीतलमें वर कीर्ति रही।
स्वामी सुभक्त द्वौ भ्रातन की, इस प्रकार गाथा पूर्ति हुई॥

नृप पुंगव हम्मीर ने, निज गज बढ़ा तुरत्त।
अति उदात्त स्वर गर्ज कर, पकड़ा शाह कदर्थ॥

पुनि बोले नृप ऐ देश शत्रु, बतला तेरा क्या हाल करूँ।
अपने मुख से तू ही कहदे, किस तरह तुझे कर-काल करूँ॥

* दोहा *

त्राहि माम् शरणागतम्, ऐ विजयी हम्मीर।
गाय तुम्हारी जानकै, बख्श जान बलवीर॥
खुदाकसम अब कबहुँ नहिं, आऊँ रणथंभौर।
त्राहि!त्राहि!!जिव बख्श मम,नृप जितराव किशोर॥
छोड़ दिया हम्मीर ने, पिशर-शाहबुद्दीन।
शाही झंडा साथ लै, गमन दुरग में कीन॥

निज समर विजय के आनँद में, रावजी शोधि यह भूल गये।
हम दुर्ग प्रवेश तु करते हैं, पर झंडा किसका अग्र किये।
यावनी पताकाओं को जब, गढ़ में आते रानिन देखा।
इन चिन्हों से उनने सचमुच, हम्मीर निधन निज मन लेखा।
ऐसा विचार निज परिजन सह, धृतिशत वीरों की अँगनायें।
बारूद विछाकर बैठ गईं, हो गईं भस्म सब महिलायें।

नृप हमीर ने आयकर, देखा जब यह कांड।
तब तिनने भी दुखित हो, फोड़ा निज ब्रह्मांड॥

★

* बूँदी के मीना राजा श्री जैतसिंह जी *

* दोहा *

तेहरह सौ अट्ठानवे, संबत् की अब गाथा।
बूँदी में उस समय थे, जैतसिंह महिनाथ॥

* चौपाई *

रावसियाजी लै द्विज सेना। निम्न बंश के मारे मैंना॥
गोहिल-मोहिल अरु पडिहारा। सोला-माहिल-देवी-गारा॥
दया-लगा बंशज सब मारे। मारवाड़ महिशुर बरियारे॥

गोहिल अरु सौलंकी हाड़ा। इन मिल नाश्यो मैंनावाड़ा॥
भैंस रोड़गढ़- नृप डूँगरसी। तेहि वध करि चौहान रैंनसी॥
भैंस रोड़ गढ़-नृप बन्यो, छीनि भील ते राज।
तस्य पुत्र कोल्हन हते, पठारस्थ-नीषाद॥

* तर्ज राधेश्याम *

अभिसे नृशंस अविचारों का, व्हाँ नग्न नृत्य अति भारी था।
पुनि भारी लूट खसौट मची, सुनता नहिं कोय पुकारी था॥

कोल्हनसी का पुत्र था, बाँगा नाम प्रसिद्ध।
मीनों से बंबावदा, छीना तिन करि जिद्ध॥

इत्थं पूरब में भैंस रोड, पश्चिम मैंनाल रु बंब नगर।
ये सब पठार हाड़ाओं ने, आधीन किया अपने सत्वर॥
बेंगू बिजोलिया रतननगर,मांडल गढ़ अरु चौरायत गढ़।
मीनों के राज्य छिने कितने,जिनसे हाड़ा सीमा गइ बढ़॥

बाँगा के बारह हुए, पुत्र परम बरियार।
तिनमें देवा राव को, बंब यहि अधिकार॥
यद्यपि हाड़ा राज्य की, सीमा बढ़ी अनंत।
तद्यपि तत-अभि बहुत से, मैंना राज्य स्वतंत्र॥

टोडा के राजा सौलंकी, बंबा के हाड़ा ने मिलकर।
बूँदी के मैंना राजा पर, जो जाल रचा सुनिये चित धर॥
दोनों ने निज कन्याओं के, इस साथ लग्न लिखवा करके।
श्री जैतसिंह नृप बूँदी के, भेजा छल प्रेम बढ़ा करके॥
यदुकुल अंतर्गत मदन बंश, अवतंस उषारा बूँदी को।
सब भाँति श्रेष्ठ लायक गुनकर, हम देते दोनों दुहिती को॥
आइये ब्याह लेजाइयेगा, हमको कर अनुगृहीत भारी।
इसमें सुख सौख्य अपार बढ़ै, बढ़ता यह द्वेष मिटै भारी॥

* गाना *

लिख जैतसिंह पठाया, टोडा व बंब नृप को।
आना न होय व्हाँपर, समये बड़ो गजब को॥
अभिओर से अशांती, फैली है शासनों में।
अतएव राष्ट्र तजकर, भावं न ब्याह हमको॥
इस शर्त्त पर है स्वीकृत, यदि ह्यां सुतायें लाओ।
गंधर्व व्याह अभी कर, पश्चात् वेद-विधि को॥
टोडा व बंब-अधिपति, पाकर के यह संदेशा।
उद्वाह–व्याज–मिस से, बूँदी नरेश वध को॥

आये बूँदी, यौतुक के मिस, व्हाँ युद्ध उपकरण बहु आये।
जिनके रक्षण हित महा दीर्घ, तंबू भूपों ने तनवाये॥
खाद्य पदार्थनके अंदर, घासों के छकड़ों के भीतर।
अग्नी के अस्त्र-शस्त्र आये, प्रीत्यर्थ सफाई बूँदी पर॥
जवनिका युक्त रथ-डोली में, दोनों नगरों से राज्ञी मिस।
सहस्रों सैनिक मय शस्त्रों के, आ पहुँचे बूँदी में हा धिक्॥
दूल्हे के हित बिवाह मंडप, कैसा निर्माण किया इनने।
मंडप जनवासे के नीचे, बारूद बिछाया दुष्टन ने॥
उसके ऊपर मृद शुष्क घास, बिछवाय घनी गद्दे डाले।
नृप-गढ़ से पुनि जनवासे तक, शुचि पटपाँवड़े बिछा डाले॥

पुनि अल्कोहल विषयुत मदिरा, स्वागत हित कनक प्यालियों में।
पुनि नाना व्यंजन भोजन भी, भर रक्खे कनक थालियों में॥

इत चर द्वारा संदेशा पा, जागीरदार उमराओं सह।
बूँदी नरेश श्री जैतसिंह, आ पहुँचे त्वर जनवासे महँ॥
नृपयुत इन वीर उषारों को, यह ज्ञात नहीं धोखा होगा।
यह धोखे बाजों का स्वागत, उनका मृत्यू मौका होगा॥
इन वधिकों की छल रागिनिपर, मोहित मृग ऊषारा पहुंचे।
जनवासा तीर करारे का, हो लक्ष्य सर्व मरने पहुँचे॥

सह समाज दूल्ह निरखि, कल्पित दूल्ही तात।
अति हर्षित दोनों उठे, आनँद उरन समात॥
कपटी भूपों ने किया, स्वागत विविध प्रकार।
जनवासे या विधि गये, सभी मीन सरदार॥
पहला शिष्टाचार यह, मदिरा प्याय अकूत।
जिससे मारण वीर सब, हुये पागली भूत॥

श्री कृष्ण समय से यदुकुल में, मद पीने का रिवाज ही था।
संकर्षण–कृत जारी रिवाज, ऊषाराओं में आजभि था॥
मदिरा–मद से बेहोश जभी, बूँदी के मीना वीर हुए।
तव धीरे–२ शनैः शनैः शत्रूगण व्हाँ से दूर हुए॥
पुनि वम्बावदा महिपति अब, वीरोचित कृत कटिबद्ध हुए।
बारुद में अग्नी दे डाली, मीना सब भस्मी भूत हुए॥
यह वीर-कर्म नहिं भीरुता है, पोचापन नीति हीनता है।
अरि को धोखा दे वध करना, संग्राम शास्त्र विपरीतता है॥
रणधीर-वीर कहलाने का, जो कोई नर अभिमान करै।
तो इसके पहले वह मनुष्य, संग्राम-शास्त्र का ज्ञान करै॥
निरमोही-निरमम-साहसयुत, रणहित निर्भय वपु हो, जावै।
ललकारे बैरी को पहले, जब सावधान रिपु हो जावै॥
आपभी सुसज्जत अरि भी हो, सुखमान धैर्य युत युद्ध करै।
जौं कदाचि रिपु मूर्च्छित होवे, तो उस क्षण उसका वध न करै॥
होकर सचेत सशस्त्रीक शत्रु, जब पूर्ण सँभल रण हित आवै।
तब उसका लक्ष्यवेध करके, तेहि वीरोचित गति पहुँचावै॥
रण-पीठ दिखाये वैरी को, शरणागत आये बैरी का।
पहले को वधे न दुसरे को, त्यागे यह धर्म है क्षत्री का॥

उपरोक्त रीति से हाड़ा नृप, जो जैतसिंह का वध करता।
तबतो अपने राजा के प्रति, मौक्तिक नहिं शोक प्रकट करता॥

* सोरठा *

देकर कै विश्वास, धोका करना अघ महा।
रौरब कल्पों वास, जियें जगत् थूँकै बदन॥

हाडा नृपने इमि धोखा दे, जनवासा भस्मी भूत किया।
अवशेषित उन्मत मीणों को, व्हाँही शस्त्रों से काट दिया॥
पुनि बूँदी पुर में आग लगा, कितनों को जला बला डाला।
मारण-महिला अरु बच्चों को, कुत्तन ते छेद अगिन डाला॥

* दोहा *

इतने पर भी शांत नहिं, हुआ वह देवा राव।
मीना छत्रिन ते अभी, देश भरा यह भाव॥

ऐसा विचार कर पुनि उसने, सहस्त्रों सैनिक फिर मँगवाये।
निरपराध पाँच लाख मैंना, इस देश के नृप ने कटवाये॥
गाँवों में आग लगा करके, महिला-बच्चे बहु जला दिये।
इस तरह रावदेवा जी ने, मारण कुल कितने मिटा दिये॥

मारण-अस्थिन से हुआ, हाड़ पूर्ण यह देश।
हाड़ौती संज्ञा हुई, स्तब्ध रहे मीनेश॥

मीनेश का इसमें दोष नहीं, मैंनाओं ही का है भाई।
जिस चीज से उनको पूर्ण द्वेष, वह ही मीनों ने अपनाई॥
यदि बूँदी के मीनाराजा, मद पी मतवाले नहिं होते।
तो हाड़ा तीनों काल में भी, बस बूंदी वाले नहीं होते॥
इस प्रकार लाखों मीणों को, यह ढाँड़ों सी गति नहिं होती।
मीनों की हड्डिन के द्वारा, हाड़ौती संज्ञा नहिं होती॥

इसलिये मद्य पीना छोड़ो, मारण यह काल तुम्हारा है।
इस मदिरा ही ने छपनकोटि, यदु कृष्ण वंश संहारा है॥

* भैरव लाल काला बादल संगृहीत *

* दारू निषेध गीत *

समझाऊँ रे मूरख दारू पीबो बेगो बेगो छोड़।
यो सड़ियों पाणी पीपी कर,कुल की लाज गवांये।
घर में हाण जगतमें हाँसी,कोमत बिगड़ी जाये॥१॥
धर्म गयो धन भी गयो रे पी गयां मूत हराम।
रोटी बेला टाबर रोवै यह दारू को काम॥२॥
दारू पीबा हाला देख्या रौड़ी लौटे जाय।
आय गँडकड़ो मूँतण लाग्यो, जाणें दुबारा पाय॥३॥
आय कलाल्यो गाली बोले, दे दे म्हारा दाम।
देता तो थारी छाती फाटे, पी गयो मूत हराम॥४॥
थाली बेच बाटकी बेचा बाली कानाँ की बेच।
नांगो होकर चोरयाँ करतो अब भी मूरख चेत॥५॥
कई जणा रा मकान बिकग्या अणि दारू रे महीं।
खाँसी चाल कालज्यो बालै, दारू है दुख दाई॥६॥
हुई हजारों लाखों हत्या या दारू है खोटी।
घर तिरिया ने मारण दौड़े पकड़ हाथ में चोटी॥६॥
समझाऊँ रे मूरख दारू पीबो बेगो-२ छोड़॥

★

* अथ नांदल गोत्रीय मीना राजा भोमपाल *

* दोहा *

मीना कुल मेवाड़ के, भौमपाल महिनाथ।
मीनों अब चित दे सुनो, उक्त भूप की गाथ॥

कछवाहों ने अनीतियाँ कर, ज्यों जैपुर छीना चाँदों से।
मेवाड़ भी त्यों गुहलोतों ने, छीना मिन वंशी नाँदों से॥
मेवाड़ी मीना जाती पर, जो जुल्म और अविचार हुए।
वर्णनातीत वे हैं बेशक, मुझसे न बने उच्चार किए॥
बस स्मरण उनका होते ही, रोंगटे खड़े हो जाते हैं।
पापिन के पाजीपन पर रिस-वश नयन चढ़े से जाते हैं॥

※ दोहा ※

पृथीराज शीशोदिया, रायमल्ल का पूत।
निज पितु से त्यागा गया, जब यह पक्का धूर्त्त॥
भ्रमता-भ्रमता आगया, नांदलोय पुर मध्य।
भौमपाल नृप फौज में, सैनिक बना सु सद्य॥

※ तर्ज तुलसीकृत रामायण की भाँति ※

कपट चतुर यह पृथ्वीराजा। मीना बन निज स्वारथ काजा॥
भौमपाल नृप जानि सजाती। फौजदार कीन्हेसि अचिराती॥

※ दहा ※

स्वारथसाधक कुटिल खल, यह पृथिराज कुमार।
दाव विचारै निशि दिवस, सकौं भूप किमि मार॥

※ तर्ज राधेश्याम ※

पुनि निज सजाति रजपूतों से, मित्रता खूब गाढ़ी करली।
ओझा नामक इक भेदी से, कुछ ठीक जानकारी करली॥
ओझा ने कहा हमारे नृप, श्री भौमपाल होली दिन पर।
भाई-बेटों उमराओं युत, अपने सब शस्त्र विसर्जन कर॥
मद मस्त ह्वै रङ्ग-गुलालों से, होली का पर्व मनाते हैं।
आपस में नर्मकथा कर कर, मस्तानी फागें गाते हैं॥
यदि उसदिन इनका कोई रिपु, मेवाड़ राज्य पर चढ़ आवै।
तो शस्त्र रहित नृप भौमपाल, क्या रिपु सन्मुख बढ़कर जावै॥

मेरे मत से यह होली दिन, इस तरह मनाना अनुचित है।
सुनि अट्टहास युत पृथ्विराज, ओझा से कह सतिहै सति है॥

※ दोहा ※

अस्तु होलिका का दिवस, निकट तुलाया आय।
अति हर्षित नृप भौम कह, सुनो कल्ल तो भाय॥
रंगीली होली का दिन है, अब्बीर गुलाल उड़ाएंगे।
विजया अति गहरी छान छान, आपस में हँसें हँसायेंगे॥
सब गुर्गों को रुखसत करदो, वे भी स्वतंत्र होली खेलें।
मस्ताना फागुन बीता अब, इसकी वे भी बहार लेलें॥

※ दोहा ※

पृथ्वीराज के हर्ष का, रहा न बारापार।
कारण ! स्वारथ पूर्त्ति का, समय हुआ मजदार॥
अधिकृत सब फौज बुलाकरके, बोला सब सैनिक गण सुनलो।
अंदाता जी की आज्ञा है, कल घर जाओ होली खेलो॥
जाते तो हो पर याद रहै, परसों ही हाजिर हो जाना।
परसों-सरसों तक अविशिमेव, वीरों सब वापिस आजाना॥

※ दोहा ※

जो आज्ञा श्रीमान् की, चले मीन सरदार।
इधर खेलने को हुए, होली नृप तय्यार॥
पीले-नीले-पाटलीरङ्ग, की वृहद कटाहें भरवा कर।
सोने-चाँदी की रत्न जटित, पिचकारिन को सब हथवा कर॥
अति गहरी विजया छान छान, नृप सह समाज मद चूर हुये।
आपस में नर्म कथा कह-२, सब रंगीले भरपूर हुये॥
भंग के नशे में मिन भूपति, जब रक्षक सहित शिखंडि हुए।
पृथिराज इसी बिरियाँ रणहित, आया निज सैन अखंड लिये॥

* दोहा *

इक निरस्त्र पुनि मद विवश, मीन छत्रि नृप-शीश।
काटि-पाटि पृथिराज भो, नांदलोय को ईश॥
तदपि मीन नृपरुंड ने, समर भूमि के बीच।
बड़ी बेर लौं रण किरा, पुनि आलिंगन मींच॥
भूप रुंड की वीरता, देखि छका पृथिराज।
आखिर रिपुखर-कुंत ते, गिरा रुंड महि गाज॥
समुझे मीनों मेवाड़ छिना, तुमसे कैसे ? कुछ याद भि है।
ऐसे, तुम्हरे हितु अंधफरम, भोलापन तीसरि माधवि है॥
सदी बीसवीं समुझि जागो मारण वीर।
तीनहुँ देहु तिलांजलि, वृद्धि शिखर चढ़ु वीर॥

* गाना *

जग मारण संतान ! ॥ टेक

को तुम ? कौन ? कहाँ ते आये ?
पुरषा को? तुम्हरे जिन जाये।
करो जरा तो ज्ञान ॥१॥ जग मारण संतान॥
मेदा-सहिरा—सकता-पाकल।
रोल-धुनावत—बीलू-माँदल॥
इनकी तुम संतान ॥२ जग०
तुमही में थे गबरू-महिमा।
तुम बावन गढ़ नृप निर उपमा॥
जाने सबै जहान ॥३॥ जग०
सबै जातियाँ जागीं सोती।
तुम क्यों मानी नींद बपौती॥
धिक्-२ ऐ नादान ॥४॥ जग०

मौक्तिक, नैया डूबी जाती।
मोह उदधि से पेश न जाती॥
लहर कुरीति महान ॥५॥ जग०
शिक्षा की पतवार थमा कर।
मौक्तिक हरि पद प्रीति बढ़ाकर॥
केवट बनो सुजान ॥६॥ जग०

मारण क्षत्रिय जाति के अन्तिम नरेश श्री वीरवर बाधाराव जी

★

* छन्द *

अब हाल मारण क्षत्रियों मिन, भूप बाधा का सुनो।
इसको तुम्हारे वंश का, अवतंस अंतिम नृप गुनो॥
बल-धीरता-प्रण-वीरता, नृप की अनिर्वचनीय है।
राणा महापरताप अरु, हम्मीर तेपि गरीय है॥
कलि कूर्म वंशिन में हुए, परताप नृप हंमीर ज्यों।
अकलंक मीन सुवंश में, अकलंक बाधा वीर त्यों॥
छत्तिस कुली नृप कायरों ने, म्लेच्छ कहँ दुहिता दई।
मिन कुल के बाँके क्षत्रियों ने, धर्म हित बपु तज दई॥

* सोरठा *

बैठ बाल गोत्रीय, नाहनपति बाधा नृपति।
कीरति अति कमनीय, मिन नृप की मैनाल में॥

* दोहा *

भूपति बाधारावथे, अकबर समकालीन।
बल–विद्या अरु लक्ष्मी, संयुत अति परवीन ॥
कच्छावे-यादव-तँवर, हाडे अरु गुहलोत।
देते थे चौहान भी, बाधानृप कहँ चौथ ॥

* तर्ज राधेश्याम *

दिल्लीपति अकबर निज घर का,जितना कुछ मूल्य समझता था।
उतने मूल्य का तु नृपबाधा, घर में इक पट्ठा रखता था ॥
दिल्ली सुविजित कर अकबर ने, भारत में मार मचाई थी।
कुछ बलसे अथवा कौशल से, सम्राटी पदवी पाई थी ॥
पुनि राजपुताना के ऊपर, चढ़गया सैन लेकर भारी।
इसके कायर नृप कितनों ने, तो कछु दिन लड़ हिम्मत हारी ॥
इन नृपाधमोंने धर्म त्याग, निज सुता म्लेच्छ कहँ दे डालीं।
मुहँ पर अपने काला पुतवा, निज पुरुषन की कीरति घाली।
धिक्कार हैं ऐसे छत्रिन को, रण कर मरजाना वाजिब था।
निज क्षात्रधर्म पर इस प्रकार, उनको न उचित यह कालिख था॥
तादम राणाप्रताप जी ने, छत्रिन की कटी नाक ढाँकी।
पुनि बात पुरानी होने से, दब गया दोष कीरति राखी ॥
उस वक्त के यदि राणाप्रताप, हिंदू कुल कमल दिवाकर थे।
तो मिन वंशी बाधा नरेश, इत मिन कुल-कमल प्रभाकर थे॥

* दोहा *

मिन कूरम द्वौ वंश में, ये नृप भये सुपूत।
सुत न ब्याही म्लेच्छ कहँ, डटे धरम मजबूत ॥
हिंदू कुल रवि प्रताप नृपने, ह्यां तक सकुटुंब विपत्ति सही।
घर छूटा बनो वास भोगा, तृण-रोटी भी न नसीबं हुई ॥

ऐसे कितने सङ्कट झेले, पर सुता न ब्याही अकबर को।
ईश्वरी कृपा आतम बलसे, पुनि बिजित किया अपने गढ़ को ॥

* चौपाई तर्ज तुलसी कृत रा० *

बंधु कीह्लशत अरिकी करणी । शुभचिंतक लखि परयो न धरणी ॥
तदपि ईश ने धरम बचायो । सुकृत मूल रसातल गायो ॥
अब मिन नृप बाधा की गाथा । सुनो चित्त दै मारण भ्राता ॥
जहि प्रताप सब कूरम वंशी । नृप परिपंथि भये अघ अंशी ॥
अकबर भरसक युद्ध मचायो । पै बाधा शह हाथ न आयो ॥

* दोहा *

तब अकबर ने एकदिन, किय दहली दरबार।
सर्व छत्रियन मध्य में, बीड़ा धर्यो सँभार ॥

"और कहा कि—"

जो बाधा नृप वश करै, अथवा आवै मार।
कोट पूतली सहित सो, नाहन को भरतार ॥
इसके सिवाय वह सब सेरे,उमराओं का चूड़ामणि हो।
जो कोई भी इच्छा उसकी,दिल्लीपति द्वारा पूरण हों ॥
जागीरी अरु ऊँची पदवी,पाने को तो ह्वाँ हर ही था।
लेकिन उन हिंदू-तुर्कन में,बाधानृप विजयी कोन न था॥

* दोहा *

बीड़ा अरु पट्टा उभय, स्वर्णथाल छः साह।
आम खास की ताक में, धरा रहा नत-शाह ॥
आखिर अपना मुगलीय कटक, अरु अपर स्ववश क्षत्रिय सैना।
देकर नृप भारमल्ल बरबस, कर खड़ा कहा जीतो मैना ॥
ये गये शाह दल को लेकर, रणहित मिन छत्रिय बाधा पर।
जब बाधाने इन कहँ, सोधा तो भागे ये रण आधा पर ॥

इस भूप भगोड़े-कायर को, शह आँख दिखा जब धिक्कारा।
तो निज बेटी उस अकबरको, दे कृपापात्र रहा बेचारा॥

* दोहा *

अब अकबर लिखने लगा, मिरनृप बाधहिं पत्र।
श्रीयुत बाधारावजी, सर्व कुशल हैं अत्र॥

आपकी कुशल परमेश्वर से, ऐ बीर नेक हम चाहते हैं।
नृप अपर छत्रियों जैसा ही, संबंध आपसे चाहते हैं॥
श्रीमती सुता शशिवदनी तव, हमको नहिं नृप सलीम को दो।
इस बैरभावमें रक्खा क्या, संबंध सगाई का करदो॥
टोडरमल के सुत को पाकर, वह तुच्छ रानि कहलावेगी।
शहजादे को देने से नृप, सम्राज्ञि कभी बन जावेगी॥

* दोहा *

श्रीयुतबाधारावजी, मिन क्षत्रिय महिपाल।
चिट्ठी पढ़ते ही बनो, शाह सगे तत्काल॥

यदि मेरी मिन्नत पर भूपति, तुम गौर नहीं फरमाओगे।
तो खुदा कसम खाकर कहता, तुम अपना निशाँ मिटाओगे॥

* चौपाई तर्ज तु० *

भारमल्ल-सुत भगवनदासा। चिट्ठी लै गा बाधा पासा॥
करि प्रणाम सो दीन्ही पाती। कह पढ़ि नाथ जुड़ाइय छाती॥
पढ़ि रिस अति व्यापेउ मिनराजा। भारमल्ल सुत तोहि न लाजा॥
पाती बहत मौत नहिं आई। धिक् धिक् धिक् तोहि अन्याई॥
जा कहदे उस म्लेच्छसे, नहीं करूँ व्यवहार।
निशाँ हमारा मिटाने, लै आ हम तय्यार॥
व्याकुल कंपित भगवानदास,कर दौड़-धूप दहली आया।
बाधाजीका सब संदेशा,दिल्लीपति से कह कर गाया॥

जा कहदे उस म्लेच्छ से, नहीं करूँ व्यवहार।
निशाँ हमारा मिटाने, लै आ हम तय्यार॥
बाधा का संदेश सुन कर बादशाह अकबर
आग बबूला होगया, सुन अकबर इस बार।
अगणित मिश्रितसैन लै, चढ़ा हाय धिक्कार॥

बादशाह अकबर की चढ़ाई देख कर नाहनपति बाधाराव का विचार करना—

* चौपाई तर्ज तु० *

नाहं न पति मन करत विचारा। बंधु, शाह जब शत्रु हमारा।
सब मिलि नाश करैं नाहन को। अब नहिं राज्य मीन छत्रिन को॥

* तर्ज राधेश्याम *

पुनि सोचा जब कूरमबंधू, तजि क्षात्रधरम तव शत्रु हुए।
तब निश्चय है बलिदान तेरा, बाधा निज देश-धरम के लिये॥

* दोहा *

अस विचार मिन मुकुटमणि, बुलवायउ परिवार।
सचिव स्वबांधव प्रजागण, आये सब नर नार॥
बैठन कहेउ सबहिं महिपाला। यथायोग्य बैठे नर-बाला॥

* तर्ज राधेश्याम *

वह मीन प्रजा जब यथायोग्य, सब बैठ गईं निज निज आसन।
तब मिनराजा उससे बोले, इक सार भरा सुन्दर भाषण॥

"बाधाराव का ओजस्वीभाषण"

अस्माकम् स्वजन सज्जनों हम, एकत्र आज किस हेतु हुए।
सुनिये निज धर्म्म सनातन हित,पुनि निज स्वदेश सेवा के लिये॥

वह भी इसकी अन्तिम सेवा, बस आज हमें कर देनी है।
करके रण विजय लक्ष्मी को, पाना या निज बलि देनी है॥

* दोहा *

कलि प्रभाव या देश निज-अपने के दुरभाग।
कूमरकुल भाइन किया,नीति धरम-पथ त्याग॥

ये आज अनार्य मलेच्छों से, संबंध थापि कृत भ्रष्ट हुए।
हाडे कच्छावे-तवँर आदि, राठौड़ सर्व अपकृष्ट हुए॥
नासिका हीन ये स्वयं बने, हमको भी करना चाहते हैं।
हिन्दुत्व शस्य अपने के हित, ये बन तुषार ह्याँ आते हैं॥
भाई हमने तो आज तलक, अनधिकार कश्चित के हक पर।
कब्जा न किया हमला न किया, साक्षी इसका है मीनेश्वर॥
यह मीन देश शश्वत अपना, श्रीहरि ने हमको दीना है।
इसमें निवास होने से भी, बस नाम हमारा मीना है॥
वेआढचगिरीपति होने से, हम बेअढ बाल कहलाये हैं।
वावनगिरि दुर्ग स्थापक से, हम कोटड़िये कवि गाये हैं॥
अब राजशक्ति सबभारत की, मिल हमें नष्ट जो करती है।
तव इसकी भी क्या चिंता है, मुमकिन प्रभु की यह मर्जी है॥
तौभी छोड़िये न हिम्मत को, यह भारत कर्मभूमि भाई।
कर्माधिकार यहाँ तुमको है, फल का मनाक अपि नहिं भाई॥
पुण्यात्मा-वीर क्षत्रियों हित, स्वर्गीय द्वार जब खुलता है।
तब उनको स्वतः भवन बैठे, श्री युद्ध देव आ मिलता है॥
म्लेच्छों से यह अमेध्य पृथ्वी, हम सुरों के काबिल रही नहीं।
पुनि देशभक्ति हित बहादुरो, मरने हतने में दोष नहीं॥
मम पूज्य पिता श्री चंद्रसैन, दिनरात हुमायूँ-बाबर से।
इस धर्मयुद्धमें लगे रहे, मैं भारमल्ल अरु अकबर से॥

अच्छा अब देश-निवासिन हित, निज कोष मैं खोले देता हूं।
वे इस धन शस्त्राऽस्त्रों का, उपयोग करें मैं कहता हूं॥
चारा पानी-खाद्य पदार्थ, हित प्रजावर्ग से बिनती मम।
जब तक यह युद्धारंभरहे, इसमें हिस्सा लेवेंगे हम॥
अब रणप्रेमी क्षत्रिय सैनिक, सब सुनें जरा आगे आवें।
जिसको तन-धन-जन प्यारा हो,वे तो इस समय सदन जावें॥
पुनिरण से पीठ दिखाआना, यह हक में ठीक नहीं होगा।
वहाँ जाकर तो प्रतिद्वंदिन् का, वध करना या मरना होगा॥
अब स्वजाति बंधुन से भी मैं, यह नम्र निवेदन करता हूं।
राज्याशा का दें ध्यान छोड़, आगे को वसीयत करता हूं॥
अब से खेती व्यापार कर्म, वा सेवा श्रेष्ठ सु-गण्यों की।
निज काल क्षेप करिये इनसे,नहिं करना टहल जघन्यों की॥
म्लेच्छन बेटी देना प्रभृति, यह घृणित कार्य कर २ अपनी।
शाश्वतीमीन क्षत्रिय जाती, प्राणान्त कलङ्कित नहिं करनी॥

* छन्द *

वर वीर बाधा राव का, यह ओज पूरण सुन कथन।
आबाल बृद्ध जवान महिला,प्राण मोह तजि कर परन॥
परभात होते सब के सब, युद्धाम्बुधीकूदे सही।
दिनभर प्रलय सा रण रहा, कितते यवन सोये मही॥
उस यावनी दल बीच बाधा, जिधर पड़ते उधर ही।
कुहराम हा हा कार मचता, ठहरती सेना नहीं॥
चूड़ान्त रण दिन भर रहा,क्षत्रिय-यवन मिथ कट मरे।
सब युद्ध भूमि-रक्त-रंजित होके गर्त्त महा भरे॥
निष्कर्ष बाधाराव सब सह रण उचित गति पतगये।
मीनाङ्गनाओं ने सती मारग से जिस्म जला दिये॥

रस-नभ-नभ-यम अब्द शुभ, नभ-असिता दशम्याम्।
बुधवासर कहँ पूर्त्ति गा, मिन नृपकाण्ड ललाम॥

इति श्री मीनायणे मौक्तिक राम दर्भ परमार मिन क्षत्रिय
विरचिते नृपकांड समाप्तम्

※ वंदेमीनम् ※

अथ शिक्षा सोपान प्रारंभाः

★

※ अथ श्लोकाः ※

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं ॥
लक्ष्मीकांतं कमल नयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं ।
वंदे विष्णुम् भवभयहरं सर्व लोकैक नाथं ॥१॥

एकोऽपि मीनस्य कृतः प्रणाम, दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यैः
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्मं मीन प्रणामी न पुनर्भवाये ।
मीनव्रताः मीनमनुस्मरंतो रात्रौ च मीनं पुनिरुत्थितायेतेमीन देहा प्रविशंति मीनं आज्यं यथा मंत्र हुतम हुताशे ।
मत्स्य रूपश्च गोविंदः ,कुरुत्वास्ते सनातनः ।
तस्यान्वय धरा मीनाः क्षत्रिया वीर सत्तमाः ॥१॥

मीन ज्ञातो नरो यस्तु स्वकर्म क्षपणोद्यतः ।
नर रूप परिच्छन्नः स हरिर्नात्र :संशयः ।:२॥
मानुष्यापिच मीनत्वं यः प्राप्य खलु दुर्लभम् ।
नाचरत्यात्मनः श्र`यः कोन्यस्तस्माद चेतन ॥३॥

※ वयम मारण क्षत्रिया किमपि प्रथितः लोकेस्मिन ※

मीनवंशोद्भवास्तत्र क्षत्रिया वेद रक्षकाः ।
संजातास्तेमहावीराः शुद्धाचार परायणः ॥
धर्मविध्वंसकायेतुदस्यवः पृथिवीतले ।
मरितामीनभूपालंमरिणास्तेन प्रोच्यते ॥

※ मीनेश आवाहन प्रार्थना ※

आजा ! ओ आजा !!
आजा ! ओ फिर झट !!
मैंनालये मिनईश । करने को शासन सट्टा लख–
पैंतिश हज्जार बरीश ॥ टेक ॥

शंखा असुर तुमने वधा हमको नहीं जँचता ।
कलियुग में वह छत्तिस कुली के रूप में दिखता ॥१॥
श्रुति-वेद रूपी राज्यश्री अरु सभ्यता हरी ।
ऽहोबत इस मीना जाति की कैसी दशा करी ॥ २ आजा०
कुंदन असल मिनजाति को बर्बाद करदिया ।
दुर नीती से लै स्वर्ण में बहु खोट भर दिया ॥३॥
'मौक्तिक, प्रभो मीनेश क्या कम हीनता हुई ? ।
फिर भी आगे क्या करना है प्रभुको बोलो सही ॥४॥
आजा ! ओ आजा !!

★

शिक्षा-सोपान

★

* दोहा *

मारणवीरों पाँचवाँ, यह शिक्षा-सोपान।
जिसके पाठन श्रवण से, निश्चय उपजे ज्ञान॥
हैं कौन कहाँ से आये हम, कैसे उत्पत्ति हमारी—है।
है कौन हमारा आदि पिता, सब भूले आँख अँधारी—है॥
मारणक्षत्रिय-मैंना-मींना, रावत मीनोत व मेवासी।
देशी-परदेशीराजपूत, मीनाठाकुर-जूनावासी॥

* चौपाई तर्ज तु० कृ० *

कच्छपघात — पुरानेवासी। जमींदार प्रभृत्ति मिनजाती॥
मदना—मयना - मीनाजानौं। एक पिता के पुत्र बखानौं॥
संप्रति हाड़ौती के माहीं। जड़ता वश कछु भेद लखाहीं॥
देशी ते मीनापचवारा। पचवारन ते देशी सारा॥
देशी-पचभड़ पड़िहारन ते। पडिहारे पचभड़ देशिन ते॥
भेद समझते अपने मनमें। खान-पान-दुहिता परणन में॥
कितने भाई अविज्ञता से, पडिहारों पर यह दोष धरें।
इनके शूकर की सौगँध क्यों, यह तो यवनों के हुआ करें॥

* दोहा *

ऐसा अध्यारोप कर, उनते मानें बैर।
इनमें हममें भेद हैं, ये तो हैं कोइ गैर॥

ऐसा मत वाले भ्राताओं, तुम्हारी जड़ता की भी हद है।
है उच्च भाव पडिहारों का, अति उच्च भाव की सौगँध है॥

* पडिहार गर्हित नहीं हैं सुनिये *

सुनु पृथ्वी को जब काँख दाबि,आसन की इव खर हिरण्याक्ष।
वस्तुः रसातल में लै-गा, सब देवगणों के ही प्रतक्ष॥
अभिसे पुरीष का दुर्ग बना, रक्षाहित निज रजधानी की।
अति हो निशङ्क खल बैठ गया,गति जानि न सारँगपानी की॥
पृथ्वी का दुःख मिटाने को, प्रभु बने वराह वपुष धारी।
विष्ठा भीमत्स दुर्ग में घुस, हिरण्याक्ष दैत्य मारा भारी॥
पृथ्वी को अपनी सूँड़ पे रख, हरि लाये पूर्व जहाँ थी ताँ।
पडिहार-शपथ में किरिवता",हो है प्रधान इक कारण ह्याँ॥
प्रभुसे शूकर के तन द्वारा, जगतीतलका उपकार हुआ।
इसलिये किरी पडिहारों की, दृष्टी में परम उदार हुआ॥
किरि को न मारने-खाने की, बस इसी लिये सौगँध लेली।
अब बोलो जराहोश में आ, पडिहार हैं तुमसे अनमेली ?॥
देशी क्षत्रिय कह पचभड़ में, सौर का रिवाज नहीं अच्छा।
देवरिया-रसिया गाते हैं, परजावति को करते जच्चा॥
ये सब अनर्थ-अधर्म्म-पाप, विद्या-वंचित रहने से है।
अश्लील गीत गाने से है, ओछी-संगति करने से है॥
विश्वासअंध करने से है, असलीयत गुम करने से है।
निज जाति-भेद करने से है, सद् ग्रंथ श्रवण तजने से है॥
वारुणी पान करने से—है, मीनेश विमुख रहने से है।
दीरघसूत्री होने से है, शिक्षा न कान करने से है॥

* गाना *

ईर्षा त्यागहु मारण वीर । टेक
मारण क्षत्रिय-सैंना मीना, जूनावासी-ठाकुरमीना।
देशी राजपूत मेवासी, मीनोता रु पुराणावासी॥
कच्छपघातसुवीर ईर्षा० ॥१

परदेशी अरु रावतक्षत्रिय, सब मिल भेद भावना कर क्षय।
मिलकर खान-पान कुरु एका, पुत्री-पुत्र बरो सबही का॥
सब तुम क्षत्रिय वीर ॥ईर्षा० ॥२

'मौक्तिक' शपथ आज यह गहिये।
मीना सब इक है मुख कहिये।
मीनायण कहँ पढ़िये सुनिये।
पढ़ि निज असलीयत मन गुनिये॥
शिक्षित हो रणधीर ॥ ईर्षा त्यागहु मारण वीर ॥३॥

पचभड़ प्रति विश्वकोष लिखता, भड़वंश ने कई पीढ़ियों तक।
शासन था किया अयोध्या का, इस वंश ने कई पीढ़ियों तक॥

* दोहा *

पुनि भड़ पुरषन प्रति लिखा, जोध राज कविराय।
तिसे सु अविकल रूप से, नीचे देखो भाय॥

* चौपाई "संकलित" जोवराज कवि कृत *

काछ-वाछ दृढ़ वज्र शरीरम् । माया-मोह न लोभ अधीरम्॥
अमृतवचन सबन ते भाखैं । जाचत आपन प्राण न राखैं॥
देखी भड़ गोत्री भाईयों, तुव पुरुषों की कथनी-करणी।
अफसोस ! आज तुम करलेते, भौजाई को अपनी घरणी॥

* दोहा *

पाल कछावी पांचवीं, में, तुम्हरे मीनेश।
त्रेता में दशरथ सदन, हुये वे ही सीतेश॥
रामलषन भ्रतरिपुदमन,श्रुतिसुत जगत अधार।
कौशिला कैकयि-सुमित्रा, तिनकी मातु उदार॥

सौतेली माता कैकयि ने, सौतिया डाह कर राम को जब।
चौदह वर्षों का निर्वासन, करडाला जन आराम को जब॥
लक्ष्यावतार जग-जननि सिया, पतिव्रतानारि रघुनन्दनकी।
अपने देवर श्रीलक्ष्मणयुत, बन गवनी सुख परवाह न की॥
ईश्वरवतार इन तीनों ने, आगे भी भारी बिपति सह्यी।
ह्याँ तक इक दुष्ट निशाचर के,द्वारा वह सीता हरण हुह्यो॥
रावण के रथ में विवश सती, नभ में चिल्लाती जाती थी।
निज प्रिय पति की सहि दानी हित,पट-वस्त्र गिराती जाती थीं॥
उनमें से कतिपय पट-भूषण, सुग्रीव बालि के भाई को।
उपलब्ध हुये थे मिलने पर, उसने सौंपे रघुराई को॥

* दोहा *

पट-भूषण वे राम ने, छाती लिये लगाय।
सिय का कुंडल लषण यह, देखो है या नांहि॥

* रामचंद्र के वचन सुनकर लक्ष्मण जी कहने लगे *

मैंने तो चरण निहारे हैं, माता के देखे कान नहीं।
मैं तो बिछुओं का सेवक हूँ,कुंडल की मुझे पहचान नहीं॥
कलियुग के मिन क्षत्रिय देवन, लक्ष्मण-चरित्रसे शिक्षा लें।
बूड़े जे ही बूड़े भाई, अब प्रस्तुत जे यम-पथ नांहि लें॥
कारण भड़ गोत्री गाईयों, देवर की भाभी है माता।

जो इसको घरणी करता है,पितु-तल्पग की वह गति पाता ॥
अब परम पवित्र जाति मिन से,इस कलङ्क को धोओ भाई।
गुरुजन में यदि जेठा भाई, तो जननिन में है भौजाई॥

मिन कूरम क्षत्रियों की आपसी फूट तथा मनसबा-हजारी आदि झूठी पदवियों का परिणाम—

मनसबा हजारी पदवी के, लालच में फँस मूरखपन से।
अपने भारत को नष्ट किया, सर्वथा फूट के अवगुन से॥
निज जाति स्वदेश भाईयों के, खूनसे हाथ अपने धोकर।
निर्बल हो स्वयं गुलामी की, साँकल में बंधे बहुत कसकर॥
अफसोस! एक पितु की संतति,सौदर जिसको कहना चहिये।
जिसको श्रीरामलषन-सदृश, शश्वत् मिलकर रहना चहिये॥
आपसी फूट के सबब बहुत, संकट में फँस इस्लाम हुये।
अगणित मरकर यमलोक गये, अवशेषित पूर्ण गुलाम हुये॥

* फूट वृक्ष का जन्मदाता दुर्योधन था *

* दोहा *

दुर्योधन महाराज ने, बोया था यह बीज।
हो जिसने अंकुरित कृत, कौरव-पांडव खीश॥

जब बढ़कर यह तरु रूप हुआ, तब छाया जयचँद नृप बैठा।
गजनी के गोरी से मिलकर, जिन भ्रात रक्त पी मर बैठा॥
पुनि फूट वृक्ष की शाखायें, भारतके कोने कोने में।
फैली भीभत्स रूप धर कर, शक नहीं नाश अब होने में॥
छोटे छोटे ग्रामों में भी, नर-नारी अज्ञानी शिशु हित।
डंडे-लाठी चटकाते हैं, आपसी बैर बहु प्रेम बिगत॥
उनसे यह तो नहिं होता है, समरथ को डाटें शिक्षा दें।

संतति को मिथः प्रेम पूर्वक, शश्वत वे रहना सिखलादें॥
इसके विरुद्ध तेहि पितु-माता, गंदी शिक्षा सिखलाते हैं।
जिससे भविष्य उनका नशकर, पूरे नगण्य बन जाते हैं॥
बस इसी द्वेश के कारण यह, हिंदू जाती कई वर्गों में।
वितरित हो कर कमजोर हुई, दुख भोग रही अब गुर्गों में॥

* यों तो हम सब ही अभिन्न हैं *

क्योंकि एकही पिता परमेश्वर की सन्तान हैं—

* दोहा *

नारायण-मुख-भुज-उदर, ते द्विजाति कर जन्म।
चरणन ते मानागया, शूद्र जाति कर जन्म॥

मारण तुम्हरे शरीर अंदर, मुख-हस्त-चरण अरु मेढ़्-गुदा।
ये कर्म इंद्रियाँ कहलातीं, हैं ज्ञान इंद्रियाँ इनते जुदा॥
आँखें-जिह्वा-नासिका कान, अरु-त्वचा ये ज्ञान इंद्रियाँ हैं।
मन-बुद्धी अहंकार अरु चित, ये चारों अंतरिंद्रियाँ हैं॥
बतलाओ उक्त दशों में से, तुम कहँ अप्रिये कौनसी है।
उत्तर मिलता है यही हमें, जी साहब बुरी एक नहिं है॥
शुद्धी के अथ सब ही के प्रति, जब प्रेम तुम्हारा एकसा है।
तो अब विचार कर उत्तर दो,इन वर्ण चतुर अंतर क्या है॥
वे भी हिंदू तुम भी हिंदू, पुनि जनक एक है दोनों का।
सौदर का दावा रखते भी,धिक् छुवा छूत का कारण क्या?॥

विद्या-विनय संपन्ने, ब्राह्मणे-गवि-हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पंडिता समदर्शिनः॥
अद्वेष्टा सर्वभूतानां, मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी॥

मेरा उद्देश्य यह नहीं है, उनके शामिल हो खाने का।
मेरा उद्देश्य खास कर है, तज द्वैष प्रेम से रहने का॥
इनकी चरचा अब तजकरके, अपनी जाती पर आओ तुम।
इसके त्रय टुकड़ों को पहले, कृपया, करएक, मिलाओ तुम॥
इक टुकड़ा देशी क्षत्रिनका, दूजा क्षत्रिय पचवारन का।
तीजा क्षत्रिय पडिहारों का,बल छिन्न भिन्न है मारण का॥
सब मैंनालय के वासी हैं, जयपुर है सदनमात्र सब का।
मीनेशपिता के पुत्र हैं सब,पुनि भेद-भाव किस मतलब का॥

"महाराज शूरसिंह तथा रानी बाला बाई"
का परमार्थ विषयक संवाद

※ दोहा ※

अब मारण क्षत्रिय सुनो, मिन दंपति संवाद।
अवशि मिटै इसके सुने,सब भव जनित विषाद॥
मीनो तव कुलमें हुए, शूर सिंह नृप जानि।
बाला बाई नामको, तिनकी विदुषी-रानी॥

मीनायण के नृप कांड में हम, इनकी गाथा लिख आये हैं।
पढ़ने से मालुम होवेगा, द्वै कितने शांत स्वभाये हैं॥
राजा यदि सच्चे योगी थे, तो रानी सच्चो योगिन थीं।
कलियुग के साधु नृपों में से, इनके प्रति उपमा एकन थी॥
नवधाभक्ती-अष्टांग योग, दोनों से दंपति परिचित थे।
इसलिये वे निरमद-निररिपु थे,समभावी सबमें समचित थे॥
इन दंपतिका अधिकांश समय,सच प्रवास में व्यय होता था।
वक्ता नृप थे श्रोता रानी, सत्सङ्ग निरंतर होता था॥

※ दोहा ※

एकबार रानी सहित, गे नृप बद्री धाम।
कछुक काल व्हाँही रहे, भजन हेतु निष्काम॥
राजर्षी को एकदिन, अति प्रसन्न जिय जानि।
बोली बाला साध्वी, सुनहु नाथ विज्ञानि॥

नवधा भक्ती के साथ साथ,पति नीति शास्त्र वर्णन करिये।
मिन जाति हितारथ परमारथ,पुनि कहिये नाथ कृपा करिये॥
राजा बोले अच्छा सुनिये, पहली भक्ती सत्संगति है।
दूसरी भक्ति मीनेश्वर की, गाथा में रखें विमल मति है॥
गुरु-पति-पद के रज की सेवा, तीसरी भक्ति कवि गाई है।
निष्कपट प्रेम से मिन प्रभु के, गुण गावै चौथि बताई है॥
पक्की आस्था मीनेश में रख, बोलै मीनेश्वर मीनेश्वर।
उनका ही भजन कीर्त्तन हो, पाँचवीं कहैं इसको बुधवर॥
इंद्रिय-निग्रह अरु शीलपना, बहिः अंतः से सज्जन होना।
ये छठी भक्ति के लक्षण हैं, रामायण खोल देख ललना॥
इस दृश्यमान सब जगती में, मीनेश्वर को व्यापक देखे।
मीनेश्वर के अनुयायिनको, उनसे भी बढ़कर के लेखे॥
उपरोक्त सातवीं जान प्रिये, आठवीं तुझे बतलाता हूं।
संतोषी, पुनि पर दोषन को, स्वप्ने न लखें समझाता हूं॥
नवमी सीधापान-सरलचित्त, हरि पर विश्वास रखें पूरन।
दीन भी न रहै न इतरावै, यह नवधा का उत्तर अंगन॥
नवधामें से एक भी भक्ति, जिसके समीप सम्यक् होगी।
उस नर-नारी-असु चर-जड़ की,वस्तुतः अवश्य मुक्ति होगी॥

★

"नीति शास्त्र वर्णन"

* दोहा *

नीतिशास्त्रका कछु विषय, मुख्य २ कहुं गाय ।
बहुत बढ़ाने के लिये, समय यहाँ पर नाहिं ॥

* चौपाई तर्ज तु० कृत *

उठि प्रभात मीनेश्वरध्याना । करैं लोग तो हो कल्याणा ॥
सबै ठौर मीवेश्वर व्यापा । अस गुनि कबहुं करैं नहिं पापा ॥
दुष्टा नारी मूरख मन्त्री, उत्तर देने वाला सेवक ।
जिसके घर में नित सर्प रहै,वह अवशि मरै इसमें नाहिं शक ॥
आपद के हित धन को राखैं, धन से रक्षै अपनी घरनी ।
धनसे अरु घरनी दोनों से, शाश्वत रक्षा अपनी करनी ॥
जिस देश में आदर मान नहीं, खाने पीने का योग नहीं ।
बांधव नहिं विद्या प्राप्ति नहीं,तहँ क्षण भी रहना जोग नहीं ॥
पुनि भूप-नदी-वेदज्ञ-विप्र, पाँचवा वैद्य नहिं होइ जहां ।
नीती तो ऐसा कहती है, इक दिनभर भी रहिये न तहां ॥
जल्दी में और विपद काले, जब घिरे शत्रु-दल बिच आई ।
नृप द्वारे अरु श्मशानभूमि, जो साथ रहै वह ही भाई ॥

* दोहा *

उत्तम कुलकी कन्यका, बरै रूप से हीन ।
रूपशील युत नीच की, वरिय न कबहुं प्रवीन ॥

नख वाले अरु विषाण संयुत,पशु-तिय-शास्त्री अरु नृपती का ।
नद्दी का जनि विश्वास करो,प्यारी यह वचन है नीती का ॥
जिस नर की नारी साध्वी है, बेटे सब आज्ञा कारी हैं ।
धन होते भी जो संतोषी, वह यहीं स्वर्ग अधिकारी है ।

* दोहा *

पिता-भक्त वहि तनय है,तनय-पाल पितु सोइ ।
विश्वासी नर मित्र है, तिय जाते सुख होइ ॥
मीठवचन आगे कहे, निंदा करै परोक्ष ।
ऐसे खोटे मित्र को, सत्वर करिये मोक्ष ॥

मनके अंदर सोचा कारज, नहिं कहो किसी से तब तक तुम ।
मणिवत् उसकी रक्षा करिये, पूरा न होय वह जब तक गुम ॥
माँ-बाप वे दुश्मन के सम हैं, जो बालक को न पढ़ाते हैं ।
शिक्षित् समाज नर हंसो में, वे बक सम शोभा पाते हैं ॥
परघर जानेवाली नारी, वे पेड़ जो नदि तट परते हैं ।
बिन मंत्री का राजा तीनों, अतिशीघ्र कभी ये मरते हैं ॥
खल और साँप इन दोनों में, है भला साँप खल नर नाहीं ।
मृत्यू आने पर सर्प डसै, खल नर तो पद पद के माहीं ॥
संवर्त्त समय मर्य्यादा को, वारीश यदपि तज देते हैं ।
साधू लेकिन साधूपनको, तब भी नहिं चाल बदलते हैं ॥
पिक का स्वरूप उसका स्वर है, नारी का रूप पतीव्रत है ।
वदरूप का रूप गुनहु विद्या, तपसीका रूप क्षमाभृत है ॥

* दोहा *

नहिं दरिद्र पुरुषार्थ ते, नाम रटे अघ नाहिं ।
द्वन्द्वविनाशै मौनते, जागरूक भय नाहिं ॥
अति स्वरूप ते सिय हरन, अति मद रावण नाश ।
अति वदान्यता बलि बँधे, अति तजिये सब आशु ॥
दान देहु अति रङ्ग हित, नशैं तासु की पीर ।
भेषज उसको उचित है, जिसके रोग शरीर ॥

अस प्रयत्न क्यों करिये जिससे, अपना कारज नहिं कामिल हो।
गिरि पर यदि कूआ खोदे तो, किस प्रकार पानी हासिल हो॥
मूरख से हित की नहिं कहिये, वरना अपनी हानी होगी।
नकटे को मुकुर दिखाने से, ज्यों भेंट तुम्हें गाली होगी॥
खोटी संगति करकै कोई, निज कुशल चहै हमको हांसी।
सागर सीतेश का बंदीभा, रावण को कर निज प्रतिवासी॥
जिसका मन जिसमें पूर्ण रमा, उसको उस ही से काम सही।
ज्यों अर्क-कीट को पिकवल्लभ, सुंदर रसाल की चाह नहीं॥
कितनी भी करो खुशामद पर, नर दुष्ट न दुष्टपना छोड़े।
सौ बिरयाँ भी धोया काजल, कालेपनसे नहिं मन मोड़े॥

* दोहा *

अपना २ काम ही, आपहिं शोभा देत।
गज-मुक्ता किमि लायगा, गीदड़ गज हत खेत॥

* चौपाई तु० तर्ज *

कुल-बल लखि निज जाति बिचारे। पुनि तैसी मुख बात उचारे॥
नतरु जाय जावै इमि बाता। बनिकपुत्र जिमि गढ़की घाता॥
निज २ काले सब को माना। क्षुत् प्रिय अशन तृषा जल जाना॥
योवन-रूप उच्चकुल तीना। बिनु गुन सुमन ज्यों सुगंध बिहीना॥

* तर्ज राधे श्याम *

मीनेशविष्णु सर्वव्यापी, गुनकर नहिं बैर करो किससे।
जब बैर नहीं तो शत्रु नहीं, बोलो पुनि भीति करो किससे॥
जिस देश में बास करो तहँ के, शासक की रीति प्रथम लखकर।
पुनि उसी रीति अनुसार चलो, यह चतुरन-रीति कही बुधवर॥

झूठे झगड़े वा भूले भी, कोई कैसेहु नहिं पक्ष करे।
कारण झूठे संग झूठा बन, अखिर में बहु पछतानु परे॥
अभ्यास के करते रहने से, जड़ बुद्धि विचक्षण होजाते।
रस्सी के यातायात ते ज्यों, पत्थर पर लक्षण होजाते॥
विधिवश सज्जन सुत खल होता, खल सुत सज्जन देखा जाता।
दीपक का सुत काला जैसे, कीचड़ सुत कमल कहा जाता॥
सज्जन को दुख देते पर भी, वह पूजै दुर्जन की आशा।
चन्दन को यदपि घिसा जाता, तौभी युग कर वासित-वासा॥
जो महान बनना चाहता है, वह सज्जन साथ न तजे कभी।
ताम्बूल संग ज्यों ढाक पत्र, पहुंचे नृप कर यह जान सभी॥
इक वृक्ष सुगंधित से सब बन, ज्यों परिवासित हो जाता है।
वैसे गुणसदन सुपुत्र पाइ, सब कुल शोभित हो जाता है॥
सौ मूरख बेटों के बदले, इक समझदार सुत अच्छा है।
शशि एक सकल तम दूर करै, प्रिय नहीं हजार ये ऋच्छा है॥

* दोहा *

नहिं कछु काल विचार कर, सुरभी सम फल नित्त।
देती, जननि प्रवास में, विद्या सम नहिं वित्त॥

* चौपाई तर्ज तु० कृ० *

प्रथम ग्राम खोटे में बासा। दूसर क्रोध मुखी तिय खासा॥
तृतिय कुभक्ष्य मूर्ख सुत श्रुतिवाँ। युवती सुता पाँचवें विधवा॥
छठे नीच कुल-नर की सेवा। बिन अगनी घट दाहत देहा॥

क्या लाभ है ऐसे बेटे से, जो ना हरिभक्त न गुनि जन हो।
ऐसो गैया ले क्या करिये, जो दूध न दे ना गाभिन हो॥
तप एक से अरु द्वौ से पढ़ना, संगीत तीन से बनता है।

चार से मार्ग पँच से खेती, संग्राम बहुत से ठनता है ॥
शठ मंत्री से राजा नाशै, कुल को नाशै कुपुत्र जैसे ।
बिन विद्या का ब्राह्मण नाशै,व्यसनाधिक से धनाढ्य वैसे ॥
जब तक भय पास नहीं आवै,तब तक उससे डरना चाहिये ।
जब वह भय सिर पर आन पड़े,तब निडर यत्न करना चाहिये ॥
घर आये अतिथिन का आदर, शक्त्यानुसार करना चहिये ।
जड़ तरु भी फल छाया द्वारा, सत्कार करें शिक्षा लहिये ॥
ओछे नर मामूली भय से, निज धर्म्म त्याग कर देते हैं ।
संकट-भय-गिरि कितने टूटें, उत्तम तो डटे ही रहते हैं ॥
पर दारा पर धन पर इच्छा,बिन कारण बैर सभी से कर ।
हित की शिक्षा विषवत् जिसको,वस्तुतः वह है खल खोटा नर ॥

* दोहा *

प्रिये द्रव्य की तीन गति, दान-भोग अरु नाश ।
देने-खाने से बचे, सो धन अवशि विनाश ॥

सब जीव मात्र पर अनुकंपा, पर धन से हो पूरी नफरत ।
इंद्रियजित-नम्रशील पन ये,सब हैं अति उत्तम श्रेयस्-पथ ॥
फल छाया संयुत महा वृक्ष, का सेवक करना उचित प्रिये ।
प्रारब्ध वश्य यदि फल न मिले,तौभी छाया तो अवशिप्रिये ॥
सज्जन-गुणगण में दोष निच्च, दुर्जन अरु कृपण बताता है ।
बिन कारण स्वच्छ गगन कहँ,ज्यों,धूआँ हठि मलिन बनाता है॥
जिस प्रकार दोष जगत अन्दर, फैलता है वैसे गुण तो नहीं ।
शशि को रोगी व कलंकी ही,सब कहैं सुधाकर कोय नहीं ॥
कूप ही मनुज तिरखा हरता, पै सागर हरता कभी नहीं ।
जितना गरीब से हित होता, धनिकों से उतना कभी नहीं ॥
नर शीलवान के सब तन पर, सद्गुन दुगुने शोभित-ऐसे ।
सुंदर बाला युवती का तन, हेमालंकृत छबि युत जैसे ॥

मणि-माणिक हीरा जिते रतन, इस जगतीतल अंदर प्यारी ।
सब वस्तुन का है मूल्य मगर, बुद्धिः अमूल्य दुर्लभ प्यारी ॥

* दोहा *

धन्य धन्य पुरुषार्थी, धन्य दूर दर्शीन ।
किमपि नाहिं जग धन्य है, दीर्घसूत्रि मतिहीन ॥

मूरख की महा प्रशंसा कर, वंचक नर जगमें निश्चय ही ।
उसका सर्वस हरलेते हैं, किञ्चित् इसमें नहिं संशय ही ॥
वंचक यदि साधु स्वरूप धरै,तौभी उसका विश्वास न कर ।
जब तक स्वभाव अवज्ञात न हो,तत आडंबर पर व्यर्थ न मर ॥

* दोहा *

छुद्रन के अपराध से, सज्जन कहँ दुख-बंध ।
दशशिर ने सीता हरी, भौ बंधन में सिंधु ॥

★

* राजा *

* दोहा *

सदा सतर्क स्वराज्य में,भल-अनभल जेहि ज्ञान ।
प्रजाविषे सुत दृष्टि हो, अस नृप उत्तम जान ॥

* मन्त्री *

* छन्द *

मनसे चहैं हित स्वामि का, सब कार्य में जो अति कुशल ।
जंता रहै आनंद युत, जिससे है वह मंत्री असल ॥

* सेनापति *

सब शस्त्र का विधि शास्त्र के, अनुसार जिसको ज्ञान है ।
निज स्वामि हित तत्पर सदा, अस सेन पाल महान है ॥

* दानाध्यक्ष *

* छन्द *

धर्मात्मा-निर्लोभ जिसको, सुज्ञ अज्ञ पिछान है।
शश्वत् चहै महिपाल हित, अस दानध्यक्ष महान है॥

* कर्मचारी *

स्वाम्युन्नति-धन-धरती-वैभव, वृद्धी हित बहुत प्रयत्न करें।
कितना भी लोभ दिखाय कोई, सेवा व्रत ते नहिं नेकु टरें॥

* पुरोहित *

* दोहा *

धर्म्मशास्त्र रत अनवरत, तत्वज्ञ-श्रोत्रीय।
सदा चहै यजमान हित, अस पुरोध कमनीय॥

* शूर *

बलवान-बहादुर-रिपुसूदन, स्वाम्याज्ञा से जो दूर नहीं।
यश कहँ मणिवत् असुकहँ तृणवत्, जो समुझेउत्तम शूर वही॥

* कायर *

संग्राम भूमि में शस्त्र निरख, भय खाय रुदन करके भागे।
ऐसे लक्षण वाले नर को, जगतीतलमें कायर वागें॥

* दूत *

* दोहा *

ऋतवादी-वाणीकुशल, बुद्धिमान मजबूत।
पंडित जन इसको कहैं, जग में उत्तम दूत॥

* सेवक *

स्वामेच्छानुसार अनवरता। निरत रहै प्रभु-कारज करता॥
स्वामि प्रसन्न रहें नित जाते। अस सेवक उत्तम बुध गाते॥

* सारथी *

रिपु-शर वारि जु रथैं चलावै। करि प्रयत्न रिपु-दहिने लावै॥
आपु बचै अरु रथहिं बचावै। अस सारथि उत्तम कवि गावै॥

* वैद्य *

जो वैद्य सँबंधी सकल शास्त्र, उत्तम गुरुवर से सीखा हो।
जिसके कर का अमृत वत फल, औषधि देने में होता हो॥
जो इच्छा रहित कृपालु-धीर, अतिशुद्ध बुजर्ग आयुकारी।
ऐसा वर-वैद्य जतत अन्दर, है सर्व चिकित्सा अधिकारी॥

* गायक *

* दोहा *

स्वर-तालादिक के सहित, रागभेद जो जान।
मन हारक गायन करै, गायक सँव सुजान॥

* कवि (चौपाई तु० तर्ज) *

अलङ्कार रस-व्यंग्य अपारा। शब्द-लक्षणा अरु प्रस्तारा॥
आठौंगण दग्धाक्षर जानै। यति-गतिज्ञ कवि श्रेष्ठ बखानैं॥

* ज्योतिषी (तर्ज राधेश्याम) *

* दोहा *

ज्योतिर्विद्यामें निपुण, प्रश्न कहै सब सत्त।
ग्रह गतिज्ञ-गणितज्ञवर, अस ज्योतिषी महत्त॥

* पंडित *

आचार शास्त्र विधि युत जिसके,निगमागम तत्त्व सु मंडित जो।
व्याकरण सहित निर्जरभाषा, बहु भाषा पाठी पण्डित सो॥

* लेखक *

* दोहा *

शुद्ध पंक्ति युत वर्ण वर, लिखे शास्त्र सु विवेक।
विषय मात्र अति समझ कर,लिखै सो लेखक नेक॥

* गुरु (तर्ज राधेश्याम) *

सब निगमागम तत्त्वज्ञ सदय, निर्लोभी शिष्य सु हित कारी।
इस अखिल विश्वअंदर वप है, सद्‌गुरु बनने का अधिकारी॥

* शिष्य *

गुरुवाणी का दृढ़ विश्वासी, निर्व्यसनी शश्वत् गुरु सेवी।
अति बुद्धिमान विनयी पूरा, वर शिष्य इसी पृथवी देवी॥

* आस्तिक *

* दोहा *

निगमागम गुरु वचन पर, जिसको है विश्वास।
चलै साधु को रहनि लै,सो आस्तिक नर खास॥

* नास्तिक *

नाना प्रकार की दुष्ट तर्क, कर निगमागम मत खंडे जो।
निज कल्पित पथ पर चलता जो,अघ भाजन नास्तिक नर है सो॥

* स्त्री *

मृदुभाषिनि-साध्वी रूपवती, विदुषीः सुशील-गृहकार्य-कुशल।
गुण-सदना अल्पहासवाली, नारी बतलाई नीति असल॥

* पुत्र *

* दोहा *

अपनी कुलरीती चलै, पिता भक्त अति जोइ।
विनयी-शिक्षित बुध कहैं,उत्तम सुत जग सोइ॥

* बन्धु *

सबें स्थल जो साथ दे, मनसे चाहे हित्त।
स्वार्थ रहित निष्कपट जो, सोई भ्रात महत्त॥

* ब्राह्मण(चौ० तर्ज तु०) *

सम-दम-त्यागयुक्त तपशीला। ज्ञान-विराग श्रुतिज्ञ सुशीला॥
निरइषी हरि-भक्ति परायण। विश्व माँहि उत्तम अस ब्राह्मण॥

* क्षत्रिय *

अस्तिक-धार्मिक अरु रणधीरा। दानि यशस्वी वर-बलवीरा॥
अरिशालक घालक वर अत्री। जगत माँहि उत्तम अस क्षत्री॥

* वैश्य *

व्यापार-कुशल अति बुद्धिमान्, सब शास्त्र निपुण धन संयुत जो।
सुन्दर आदर दायक सब कहैं, जगती में उत्तम वैश्य है सो॥

* शूद्र *

* दोहा *

कपट रहित मन ते करै, शीन वरण की सेव।
यथालाभ संतुष्ट नित, श्रेष्ठ शूद्र है सैव॥

* ब्रह्मचारी *

विद्या का पूरा अभ्यासी, निज गुरु का वर आज्ञाकारी।
निर्मलमनवाला-निर्लोभी, ऐसा उत्तम है ब्रह्मचारी॥

* गृहस्थ (चौपाई) *

सहित विवेक पितर ऋषि देवा। महिसुर अभ्यागत की सेवा॥
गृहासक्ति तजि हो अति स्वस्था। अर्चे इन्हें सो श्रेष्ठ गृहस्था॥

*वानप्रस्थ *

* दोहा *

बन बसि साधू की तरह,कर आचरण प्रशस्थ।
कंद-मूल-फल अहारी, अस वर वानप्रस्थ॥

* संन्यास *

आसक्ति रहित है ब्रह्मरूप, जो जापै ब्रह्मपरात्पर को।
वह निःस्पृहहैयति राट अवशि,जगतींतल में उससे वर को॥
हत्तु भवज दुःखानि श्रीविष्णुः केवलं प्रभुः।
शांतिम्र न याति दावाग्निः जल वृष्टि विना क्वचित॥

* सज्जन महिमा (तर्ज राधेश्याम) *

पर हित के लिये छिन्न तरु फिर, बढ़ कर फल-पत्ते देता है।
शशि भी पहले अति क्षीण होय, जग हित प्रकाश बढ़ देता है॥
नदियाँ अपना जल नहिं पीतीं, तरु अपने फल नहिं पाते हैं।
निश्चय बादल नहिं अन्न खाहिं, सज्जन-संपति पर खाते हैं॥

* वित्त महिमा *

जिनके ढिग धन वह ही कुलीन, वे बुध-गुणज्ञ होजाते हैं।
वे दर्शनीय-वक्ता-सब कुछ,गुण धन आश्रय कवि गाते हैं॥

* दोहा *

धन बिहीन कहँ त्यागहीं, मित-सुत तिय अचिरात्।
शरण गहहिं धनवान् की, अर्थ जगति नर भ्रात॥
बूढ़े-तपसी-ज्ञानी सबही, धनवान की आशा करते हैं।
किंबहुना किसी रूप में सब,किंकर बन द्वारे रहते हैं॥

* विद्या महिमा *

तस्कर जिसको नहिं हर सकते, नृप नहिं जिसको छिनवा सकते।
कितनी भी पढ़ो बोझ नहिं कुछ, भाई न जिसे बँटवा सकते॥
विद्या धन-कोष हृदय में से, तुम जितना व्यय कर देखोगे।
तो कोष में अपनी मूल रकम, अब सूद सहित तुम पेखोगे॥
ज्यों ज्यों खचोंगे त्यों त्यों ही, विद्या बढ़ कर होगी सौगुन।
युक्ती-भुक्ती-मुक्ती-दाता, सब में प्रधान है विद्या धन॥

* जरा मौत-महिमा *

* दोहा *

काल दूतिका है जरा, कर्ण-मूल नर आय।
कहती है सुनरे मनुज, पर-धन अरु पर-जाय॥

इनसे सर्वथा त्याग ममता, पुनि क्रोध-मोह अपि शीघ्र तजो।
यदि तुम्हें नरक नहिं जाना हो, तो मीनेश्वर हरिचरण भजो॥
सिर के निज धोले बालों को, जल्दी से देख डरो भाई।
जो मेरा स्थान परम सुन्दर,वह निज परिभव समझो भाई॥
तुम्हारी प्यारी तरुणाई अब, चांडाल कूप वत् दूर भई।
व्याघ्रीवत् गर्जत आई मैं, अधमों न नींद तब पूर हुई॥
रिपुवत् कितने हीं रोग तेरी, काया को क्लेश दे रहे हैं।

फूट घट-जल की भाँति तेरी, अयु-दिन शेष हो रहे हैं।
अफसोस न मुख में दाँत तेरे, चमड़े पर बलियाँ पूर्ण हुईं।
इतने पर भी धिक तू न कहै, हे मीनेश्वर, हा मीनेश्वर।
तब मैं ही काल रूप होकर, तुझको पहुंचाऊँगी यमपुर॥

* काम-महिमा *

प्रथम तो श्वान है अति दुबला, पुनि एक आँख बिल्कुल नहिं है।
कान भी स्वामि ने काट लिये, चारों में पैर तीन कुल—है॥
दोषी बन पूँछ कटायि नहीं, सारा तन कुष्ठ समाकुल है।
अति क्षुत् डाला मुख हँडिया में, जब पिठर-कपाल पड़ा गल है॥
इतने दुख संयुत्त कुत्ता भी, क्वाँर मे काम वश उन्मत हो।
कुतिया के पीछे भगता है, मुर्दा-मन-हारक काम अहो॥

* दुर्जन-महिमा *

* दोहा *

दुष्टानन बांबी गुनो, रसना-बचन भुजङ्ग।
कर्ण-मूल कहँ छुवत ही, प्राण-रहित हो अङ्ग॥

* तर्ज राधेश्याम *

सरसोंवत् भी पर दोषनको, खल खूब गोर कर देखते हैं।
लेकिन बीले सम अपना अघ, देखते हुये न लेखते है॥
करपूरधूल को लेकर के, सुंदर इक आलवाल रचिये।
पुनि उसमें वर कस्तूरी का, लै बहुत घना कीचड़ भरिये॥
अब सुबरणघट जल से उसका, प्रतिदिन उठिके सिंचन करिये।
एवम् ताज्जनित-प्याज बदबू, नहिं त्यागै तथा दुष्ट गुनिये॥

* दरिद्र महिमा *

दारिद्र देव तोय नमस्कार, तेरे प्रसादमैं धन्य हुआ।
मैंने सबको देखा लैकिन, मेरे तन नैन न एक हुआ॥
हे देव शोच मुझको निशिदिन,तू मम शरीर अतः बस कर।
मम दुखिया देह से दुख पाकर,कहँ जायेगा कह समुझाकर॥

* कलियुग-महिमा *

सज्जन दुखपाते हैं कलि में, दुर्जन जन अति बिलसाते हैं।
हो उग्र पिता की बहुत बड़ी, सुत पहले ही मर जाते हैं॥
पर से मैत्री स्वजनों से वैर, सुकृत-तप खंडित सत्य-गता।
महि मंद फला भूपति कुटिला,ब्राह्मण मूरख विद्या रहिता॥
नर नारि-रता नारी चपला, बेटे अपने पित-घाती हैं।
जन कहँ अवनत खल कहँ उन्नत,कलियुग की शक्ति बनाती है॥
साधू कलि भय जग अहहिं कहाँ,यदि हैं भी तो दुख पाते वे।
सच्चे शिक्षित भी कोइ नहीं, यदि हैं भी तो इषी-तर वे॥
राजा भी नहिं यदि हैं भी तो,धन तृष्णाका लाञ्छन उनपर।
दाता भी नहिं कलि में कोई, यदि हैं भी तो वे सेवा पर॥
पर अन्न अशन ते मुल दग्धा, प्रतिग्रह लेने से दोनों कर।
पर स्त्री रति से मन दग्धा,क्यों ऐसा कलि में शाप जबर॥

* प्रारब्ध महिमा *

सर्वत्र फलति है कर्म्मरेख, नहिं विद्या किंचित पुरुषारथ।
जलनिधि मथने अथ हरिहिं रमा,विष हर कहँ क्यों होते समरथ॥
हैं खुद महेश ससुरा नगेश, साथी कुबेर सुत गजास्य हैं।
इतने पर भी शिव भीख माँग, कर खाते परम हास्य यह है॥
इक सर्प सपेरे ने लेकर, निज बाँस-पिटारो बंद किया।
दिनभर उसको भोजन से भी, बिल्कुल वंचित तेहि मंद किया॥
प्रारब्धवश्य अब निशासमय, उस बाँस पिटारी में मूषक।
कर छिद्र साँप के मुख गत भा, प्रारब्ध मुख्य बेशक बेशक॥

... स्वभाव वश आ निकला, कारण-कारज तुमसे है नहीं ॥
अच्छा राजन जय नारायण, ऐसा कह उठ जाने लगे।
राजा अति आतुर दौड़े औ, मुनिजीके चरणों में लगे ॥

* दोहा *

कर-सम्पुट नृप ने कहा, मुझे सहित परिवार।
वैष्णवि दीक्षा दीजिये, हे मुनिराज उदार ॥

* चौपाई त० तु० *

एवमस्तु कहि नारद ज्ञानी। अब तुम नृप आवहु युत रानी ॥
पुर के लोगन कहँ बुलवाओ। तुलसी माला बहु मँगवाओ ॥

* दोहा *

मुनि आज्ञा पा भूप ने, सब पुर में ऐलान।
करादिया सुनकर सबै, हुए इकट्ठे आन ॥
नारद ने तत्काल ही, वैष्णव सब करि लीन।
अशन-पान कर प्रेम से, पितालोक मन दीन ॥

नारायण भक्ती में लागे, सारे पुर के नर-नारि जभी।
नरकों की शासति से छूटे, उनके पुरषा तत्काल तभी ॥

* दोहा *

वैष्णव धर्म्म प्रचार जब, भयो अधिक संसार।
यमपुर अपराधिन रहित,भौ यम करत खँभार ॥

ये नारद की करतूतें हैं, सब दुनियाँ को बहका डाला।
नारायण ने भी उसको ही, वैष्णव का ठेका दे डाला ॥
अच्छा मेरे गणवर आओ, जगतीतलमें हम भी चलकर।
निज पुर जैलों से भर देवें, दुनियाँ को तेरह पंथी कर ॥

कापालिक का भेष धर, गण समाज लै साथ।
ब्वास नगर आये प्रथम, प्रेत लोक के नाथ ॥

लंबे-चौड़े बहु पीठ बना, पाषाण ईंट सुर थाप लिये।
यह क्षेत्रपाल यह भैरुजी, दाताजी आदिक नाम दिये ॥
दूतन ते दुन्दुभी बजवाकर, यम अपनी मूँड हिलाने लगे।
कितने दूतों तन भूत चढ़ा, बहु कौतुक खेल बड़ाने लगे ॥
पुरवासी ब्वास नगरके सब, कौतुक हित आन इकट्ठे हुये।
तब अपना रङ्ग जमाने को, दूतों ने यम से प्रश्न किये ॥

* दोहा *

किस प्रकार कल्याण हो, सो तुम नाथ बताउ।
यम बोले अच्छी तरह, प्रथम मशाण जगाउ ॥

शक्तिः का पुनि पूजन करिये, इससे तिय पुत्र प्राप्त होंगे।
निज मनियाँ देव मनाउ सभी, निर्धन धनवान आप्त होंगे ॥
माता-दाताजी-क्षेत्रपाल, योगिनी प्रेत कहं ध्याओ तुम।
मारण-उच्चाटन संमोहन, सीखो मनमाना पाओ तुम ॥
यदि क्षेत्रपाल को पूजोगे, तो सर्व विघन हर जायेंगे।
नीयोग-प्रचार अवश्व करो, पुरषा तुम्हरे तर जायेंगे ॥
विधवनके दो दो ब्याह करो, संदेह की कोई बात नहीं।
चौका-पट्टा है व्यर्थ सभी, कोइ चीज जाति अरु पाँत नहीं ॥
हरि अर्चन अरु चरणों दकसे, ना पेट भरै ना प्यास मिटै।
अरु दान धर्म्म बहु करने से,फल कछु नहिं अपना कोष घटै ॥
हरि भजन भक्ति दुखदाई है, सुत-दारा भवन छुड़ाती है।
योगादिक की इच्छा करना, नाना दुख क्लेश बड़ाती है ॥
मर्मनिर्मित ये पाषाण देव, तब तुमपर अति प्रसन्न होंगे।

मदिरा अजियासुत-माहिष को,जब बलि दे तुम प्रसाद लोगे॥
ऊती सोहागिन नारिन ते, तुम कहो ठौर सब पूज फिरें।
भैरूजी को बकरा देकर, वह पुत्र-लाभ पावै अचिरै॥
आओ जल्दी सिद्धी दायक, प्रेत की विधी बतलावें हम।
अनुभूत और भी मंत्र तंत्र,विधि सहित तुम्हैं बतलावें हम॥

* दोहा *

कितनों को यमराजने, सुत वित भारी देय।
विमुख किया हरि भक्ति ते, अनृत शिक्षा देय॥
चलो अंध विश्वास प्रिय,तब से जग के माँहि।
अज्ञानी वश याहि के, विद्वज्जनतो नाँहि॥
कह रानी पति ठीक वह,सुनि सुख बढ़चो अनंत।
अब यमपुर-सुर लोक की, कथा सुनाइये कंत॥
कह भूपति हरसाय कर, सुन रानी चित लाय।
सुरपुर अरु यमलोक की, कथा कहूं समझाइ॥

सुरपुर में बसते गीर्वाणं, बैंकुण्ठ में श्री हरि रहते हैं।
मीनेश वहो सीतेश वही, राधेश भि उनको कहते हैं॥
कूरम-कलकी-नरसिंह वही, बाराह परशुधर-राम वही।
बुद्धावतार बामनवतार, ये दश वतार मीनेश वही॥
सुर पुर का सुख अति बढ़कर है,हरिपुर का अति श्रेयस्कर है।
मीनेश किसी को नहिं देवें, यमपुर-दुख अति हेयस्कर है॥
अब यमपुर की ही गाथ तुम्हैं, विस्तार सहित समझाना है।
कर्त्तव्यपतित नरमण्डल को, यमभीति दिखा डर वाना है॥

'नरक वर्णन'

* दोहा *

जब पापी की आयु का, होजाता है अन्त।
तब रविसुत निज गणव कहँ पास बुला सानंद॥

* तर्ज राधेश्याम *

कहते हैं ऐ गणवरों अमुक, प्राणी निज मृत वादे पर है।
अब शीघ्र यहाँ लाओ उसको,उसका बाकी नहिं क्षणभर है॥
यमराज का अनुशासन पाकर,वे यमगण अति खुश होते हैं।
प्राणी को नरक लाने के लिये, अस वाहन जोते हैं॥
कोई कूकर शूकर कोई, भैंसे की सवारी कर करके।
कोई खर पर असवार हुये, कारी विशाल वपु धर धरके॥
कोई शव पर ही बैठि चले, कच ठाढ़े गदा आग की है।
लोहित लोचन भौं तनी हुई, असवारी व्याल-बाघ की है॥
कोई चढ़ चले वृषभ सुन्दरि, फाँसी मुद्गर कर लिये हुए।
इस शान से पापी को लेने, आते हैं यमचर भये हुये॥
माया वे ऐसी जानते हैं, नहिं नजर किसी के आते हैं।
नर या नारी चाहे जो हो, पापी ही को दिखलाते हैं॥

* दोहा *

पापी के सिर शमन-गण, अभिसे परिघ हतान।
उभय घरी के बीचमें, खैंचि निकारत प्रान॥

उस पापात्मा को रविसुत गण,पहले धिक् रे धिक् कहते हैं।
दो चार परिघ शिर से दे पुनि, मुश्के उसकी कस लेते हैं॥
गल में फाँसी न्यारी ही रहे,सिर पर अघ बोझा भारी बहै।
इस स्वांग से रोता हुआ अघी, यमपुरका दुर्गम पंथ गहै॥

इस मृत्युलोकसे सुन रानी, यमपुरी हजारों योजन है।
परमाण शास्त्र से ऐसा है, वह सहस्त्र छियासीयोजन है॥
मग में अति लंबी दूरी की, है आठ ठौर अति दुख दाई।
रानी उन ठौरों का संकट, प्राणी पर आवैं वरि आई॥

* चौपाई त० तु० *

अक्षि सहस्त्र प्रथम मग जोई। अघैं न तहँ दुख सुख कछु होई॥
दिग्शतयोजन तेहि के आगे। भैरव बाघ देखि धृति भागे॥

* दोहा *

दुनियाँ में अवतरहि कै, जिन कृत सज्जन संग।
तिन्हैं भीति लागे नहीं, देखि भयानक सिंह॥

* तर्ज राधेश्याम *

पुनि पाँच सहस्त्रयोजत तक सुन, लोहे के काँटे आते हैं।
पापी के पाओं में चुभ चुभ, अत्यन्त कष्ट पहुंचाते हैं॥
गज रथ शिविका का दान दिये,उस मारग में सुखपाता है।
अन्यथा पतित उन काँटों में, उठता-पड़ता ही जाता है॥
यह दान तो है राजाओंका, आढ्यों का रुपये वालों का।
निर्धनका दान यही है बस, वह पालन करदे नियमों का॥
सबसे अच्छा तो यह ही है, मीनेश भजै सत्सङ्ग करै।
नारी निज पति को ही पूजे,सब ठौर को नमन करै न करै॥
पुनि दो हजार योजन तक प्रिय,तप्ता मरु जंगल आता है।
उत्तप्त गरम सिकता में तन, प्राणी का भुनता जाता है॥
जिसने जीवते जिंदगी में, प्यासों को नीर दिया होगा।
उसको इस ताती बजरी में, रंजरी भी कष्ट नहीं होगा॥
द्वादशयोजन हजार तक हा, यमपथ खाँडे की धारा है।

पापी इस पथको देख देख, करता ह्यां खूब किनारा है॥

* तर्ज तु० रा० *

त्राण करै यहाँ रथ कर दाना। नतु पापी पावैं दुख नाना॥
रामभक्ति जे सादर करहीं। ते नर जम के दुःख न भरहीं॥

* तर्ज राधेश्याम *

पुनि आठसहस योजन तक सुन, जल गंहर भयानक आता है।
अवसान पूर्व महिदान किये, प्राणी यहाँ पर सुख पाता है॥
पुनि योजन तीस सहस तक हा, दुखदाई अन्धकार आवे।
इक सघन तिमिर पुनि कंटोपल, पापी यहाँ दुःख अधिक पावे॥
अवसान पूर्व हरि-कथा निकट, दीपक जिसने बारा होगा।
तुलसी समीप साधू कुटिया, तीरथ में अनुसारा होगा॥
उपरोक्त ठौर श्रद्धा पूर्वक, दीपक जिसने बारा होगा।
उसको इस घोर अँधेरे में, मिलि हैं प्रकाश दुख नहिं होगा॥

* दोहा *

महा भयानक मार्ग है, आगे योजन आठ।
होत यहाँ पापी विकल, बेहड़ भूमि कुघाट॥

पुनि सहस्त्र अठारह योजन तक, सूरज सिर पर अति तपता है।
भूतल नीचे मानिंद तवे, ताते प्राणी को तपता है॥
ऊपर से भी भुन जाता है, नीचे से भी जल जाता है।
तो भी दम नहीं निकलता है, प्राणी दुख पाता जाता है॥

* दोहा *

जिसने मरने से प्रथम, वापी कूप खनाय।
ताल रुचिर बनवाय कै, दी पौसरा बिठाय॥

इन उक्त कुत्त्य के साथ साथ, जो मग में वृक्ष लगाया है।
तो यमपुर के ताते पथ में, उस प्राणी के हित छाया है॥
अन्यथा पतित भुनता जाता, यमपुर-पथ रवि की गोदन में।
इस तरह विविध दुख सह कर के,उन सहस्त्र छियासी योजन में॥
पहुंचे अघ इमि यमपुर तीरा। शोभित तहँ इक नदि गंभीरा॥
वैतरणी तेहि संज्ञा आहीं। अस्थिज शोण भरा तेहि माही॥

* तर्ज राधेश्याम *

जो नारी अपने प्रीतम के, विष देकर प्राण निकारती है।
जो पति से सदा विमुख रह कर,नित कर्कश वचन उचारती है॥
जे निरपराध जग जीवों की, गर्दन पर छुरी चलाते हैं।
वा जे खल हरे भरे वन में, या पुर में आग लगाते हैं॥
ऐसे पापी प्राणिन को तहँ, लगती है कठिन प्यास तृष्णा।
प्यासा कुल तब पीते वह जल, जिसमें मिश्रित मल अरु विष्ठा॥
मदिरा पायिक-आमिष भक्षी, भ्राता तल्पग प्रभृत्ति ही है।
इनका तो वैतरणी माता, सन्तत स्वागत करती ही है॥

ऐसे पापी सरितामें, दुखपावें अधिकाय।
उतरत समय शरीर को, जलचर नोचें खायँ॥

जिसने जग में अवसान पूर्व, निर्धन को दान दिया होगा।
शुभ कर्म्म यज्ञ व्रत के द्वारा, पूजन भगवान किया होगा॥
सज्जन के चरणों में प्रीती, गुरु द्वारा जो दीक्षित होगा।
वह जन तो यम की सरिता में, इन कर्मों से रक्षित होगा॥
गौ का दाता वैतरणी कहँ, गौ-पूँछ पकड़ तर जाएगा।
अन्यथा पतित यम सरिता में, निश्चय ही गोता खायेगा॥

इस प्रकार सरिता उतरि, पापजीव अज्ञान।
आगे यमपुर देखिहहिं, सुन रानी सज्ञान॥

* तर्ज तु० कृ० रा० की भाँति *

दशशत योजन तेहि बिस्तारा। सुन प्रिय ताके चार दुआरा॥
पूरब-पश्चिम उत्तर रानी। चौथा दक्षिण द्वार बखानी॥

* तर्ज राधेश्याम *

परमारथ सुकृत वाला नर, पूरब-पश्चिम-उत्तर होकर।
अरु स्वारथ कुकृत वाला नर, दक्षिण द्वारे जाता रोकर॥
सज्जन-गैया का दुख दाई, जीवों को वह खाने वाला।
पक्षिन का बंधक-वधकर्त्ता, विश्वासघात करने वाला॥
चोरी, स्तेय करने वाला, सबसे ईर्षा करने वाला।
छल करके किसी आतमा को, तीक्ष्ण विष का देने वाला॥
कन्यापर धर लेने वाला, नारायण की निंदा वाला।
वेदों से खल जो है विरुद्ध,अरु रमझो व्यभिचारिन बाला॥
मीनेश भक्त सज्जन जिसने, घर लाकर पूजा कभी नहीं।
अरु पर्व में जिसने अन्नदान, किंचित भी अर्पा कभी नहीं॥
जो एक जाति में कई भेद, करके वैमय फैलाता है।
कन्यायें शिक्षित करने को, जो भारी पाप बताता है॥
उपरोक्त असत पापी नर को, नारि कुविचार कुलक्षणिको।
यम के मजबूत दूत कस कर, लेजाते है दर-दक्षिण को॥

* दोहा *

तहाँ भालु अरु गीध खग, सिंह बसहिं बहु श्वान।
अति माया को तिमिर तहँ, निशिदिन की नहिं भान॥
रानी यमपुर मध्य में, नरक हजारन होइ।
पुष्ट अष्टदश तासु में, सो समझाऊँ तोय॥

卐

* अष्टादशनरक *

पहला है कुम्भीपाक नरक, आकार घड़े सा जिसका है।
मज्जा मल रुधिर पूर्ण है वह, मोटा योजन षट दश का है॥

* दोहा *

दूसर नरक कराल अति, तासु अवीची नाम।
यामें ते नर परत जे, वध कर कन्या बाम॥

* तर्ज राधेश्याम *

सुनु नरक तीसरा रौरव है, जिसको देखे भय लगता है।
आकार में अति दीरघ लंबा, ताती बारू से तपता है॥

* चौपाई तर्ज तु० कृ० रामायण की भाँति *

द्रोह करै हरि से जो बंगा। अरु निंदहि जगपावनि गंगा॥
जाति-भेद का जेहि सिर गौरव। अस पापी पड़ यमके-गौरव॥

* तर्ज राधेश्याम *

चथा दोजख गुरुजिम जामें, गुड़रस सा रस गरमाता है।
च री करने वाला मनुष्य, गुरुजिम में भूना जाता है॥

* दोहा *

कूप नरक पंचम महा, कह्यो कूप अनुहारि।
पीप रक्त कृमि तासु में, भरे सुनो बर नारि॥

* तर्ज तु० कृत रा० *

कूप जगत बैठे बहु कागा। रानी अपर भयानक नागा॥
कूप माहिं जब अघि उतराई। काग चोंच हति तल पहुंचाई॥

कह्यो सुन्यो नहिं हरि सुयश, मानुष देह कहँ पाय।
अरु दासी सँग जे रमै, कूप नरक ते जाय॥

* तर्ज राधेश्याम *

छठवाँ है नरक कीट नामक, जिसमें हैं कीड़े भरे हुए।
प्यारी जिसको लखि वमन होय, ऐसे में पापी पड़े हुए॥
सातवाँ नरक असि पुरइन है, पत्ते जिसके युगधारे हैं।
पापियों द्वैषियों ही के लिये, रविसुत ने जो निरधारे हैं॥
गण जब पद पकड़ घसीटत हैं, तब अघतन होहिं लरारे हैं।
दुख पावे मृत्यु नहीं होवै, वन पुरइन बड़े करारे हैं॥

मृत्यु क्यों नहिं होती है ? इसका यह कारण है कि मनुष्य का सूक्ष्म शरीर अकाट्य, अछेद्य-अदाह्य, अक्लेद्य एवं अशोष्य है किन्तु दुःख सूक्ष्म शरीर को भी स्थूल शरीर जैसा ही प्रत्य अर्थात् मरने के पीछे भी होता है.......यथा श्रीमद्भागवद् गीता का श्लोक देखिये—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
गीता अ० २ का २३ श्लोक

अच्छेद्योऽयम दाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयम् सनातनः॥
–,,–का २४—

अस्तु !

* तर्ज राधेश्याम *

इसका अधिकार उन्हीं को है, जो खोटी बुद्धी वाले हैं।
कैसे–कामी कपटी क्रोधी, निंदक गुरुजिद्दी वाले हैं॥

* दोहा *

दोजख सुन अब आठवाँ, दारुण ताकर नाम।
इसका दुख ते लहतु हैं, जे कामी बर बाम॥

अगणित खंभे नर-नारि खप, दारुण में नीके गड़े हुए।
वे पावक ते सब पावक मय, दारुण अन्दर सब खड़े हुए॥
पर नारी को जे मूरख नर, अपने हिय-गले लगाते हैं।
उनको दारुण में नारि रूप, खंभे से बाँह भराते हैं॥

और कहते हैं

चोन्हि लेहु खल यह सोइ बामा। जिन सँग बहुत कियो आरामा।
जे तिय अपर पुरुष रति करई। ते तस भाँति कठिन दुःख भरई॥

※ तर्ज राधेश्याम ※

नारी से भी गण कहते हैं, प्यारी प्यारे को चिन्हलो तो।
हां बड़ी खुशी से एक बार, पुनि निज प्यारे से मिललो तो॥
पहचानों वह ही है या नहीं, यदि है तो क्यों चिल्लाती हो।
अब निज हमदम से मिलने में, कुलटा क्यों शंका खाती हो॥
अच्छा तुम शंका खाती हो, तो हम बरबस भेंटाएँगे।
पापियों तुम्हें निज करणी का, हम बरबस मजा चखाएँगे॥
इतना कह यम के दूत पकड़, नारी को नर वत् खम्भे से।
भेंटा देते हैं बरबस पुनि, नर को नारी वत खम्भे से॥

※ दोहा ※

भेंटाते ही खम्भ से, त्वचा मांस जलजाय।
चर्बी चट चट कर जलै, प्राणी प्रति चिल्लाय॥

पुनि और सुनो जे पर्व समय, या व्रत रहकर रति करते हैं।
ऐसे महान अज्ञानी भी, दारुण खंभो में जरते हैं॥

कह गण नर तन पाय कर, कर मैथुन दिय खोइ।
राम भक्ति जब नहिं करी, भेंट खम्भ कत रोइ॥

नवमा नरश्वास नरक रानी, नरश्वास में श्वास नहीं आता।

प्राणी का दम घुटता इसमें, तड़पाता है, नहिं मरपाता॥
गुरु का अरु विधवा नारी का, जे पापी अंश चुराते हैं।
अरु दुष्ट वचन कहने वाले, नर श्वास में घोटे जाते हैं॥
कुल संकुल नाम नरक दसवाँ, जिसमें प्राणी पूर्णाकुल हैं।
रानी! वह कथित नहीं होता, जो दुख उस कुल संकुल में है॥

※ तर्ज तु० कृत रा० ※

कुल संकुलका बाग सुहाया। पावक तरु फलयुत निर्माया॥
योजन पाँच श्राज चौड़ाई। तिसकी दश योजन लम्बाई॥
अधः सश्रृङ्खल मेख गड़ाई। तरु फल की वर्षा तहँ गाई॥

※ तर्ज राधेश्याम ※

उन गर्म लोह जंजीरों में, अगणित पापी तहँ बँधे हुए।
संतापी बोलें हाय! हाय!!, उन जंजीरों में फँदे हुए॥
ब्राह्मण क्षत्रिय कोई भी हो, बनियाँ हो अथवा यवना हो।
इनमें से अवशि जीव घातक,कहँ कुल संकुल में जाना हो॥
क्षत्रिय रु वीर हित यह बंधन,रण काले कभी नहीं रानी।
उस समय वह वीर धर्म वर्त्ते, कितने भी मरें नहीं हानी॥
ग्यारहवाँ नरक सूचीमुख है, जिसमें सुईयाँ गुपकी जावें।
रानी कोई ऐसा धीर नहीं, जो सूचो गुपका सह जावे॥
पुनि एक नहीं दो चार नहीं, अगणित गुपके वहँ होते हैं।
रानी कहु कैसे सहै कोई, पापी वहाँ अतिशय रोते हैं॥
नारी हंता हरिजन निंदक, साधू कलंक दा गुरु बूषक।
तीरथ अरु वेदों का निंदक, जाता है दोजख सूचीमुख॥

※ दोहा ※

नरक बारहवाँ सुनहु प्रिय, घोर नरक तेहि नाम।
देखि दुःख उर बिदरहीं मसा भयानक ठाम॥

पर नारिहिं जे पायकी, देखहिं अशुभ निगाह ।
तिनकी आँखें धोरिहैं, घोर नरक कागा ह ॥

* तर्ज तु० *

जग मृदु वच जेहि मुख न निकाला । तेहि मुख साँप लगावत काला ॥

* तर्ज राधेश्याम *

बन जीवों के घातक का व्हाँ, पंचानन उदर फारते हैं।
हरि चरित शून्य नर कानों में,गण शोशा गरम डारते हैं ॥
अमिष खाने वाले को व्याँ, गण गोला लाल पिबाते हैं।
जब रोवे पापी चिल्लावे, तब यम यों त्रास दिखाते हैं ॥
रे दया रहित निर्दय पापी, तब भक्षण कियो अपर मांसू ।
जब दया नहीं आई तुझको,अब किमि रोवत डारत आँसू ॥

* दोहा *

घास फूँस चुनि खात जे, दंड न काहुनि देत ।
निरपराध बन जीव तें, भक्ष रसना हेत ॥

नर तन पाकर जस कर्म्म किये, तस ह्याँ पर भोगहु पापी ।
अब घोर नरक के अग्नीमय, गोले को लीलहु संतापी ॥
नारक तेरहवाँ शूली वागैं । तामें अघि कहँ शूली लागैं ॥
अब नरक चतुर्दशवाँ रानी, सुन अग्नी कुण्ड कहाता है ।
साक्षात् अग्नि सी तो डपरा, इसका दुख क्या बताता है ॥

* दोहा *

अग्नि कूप में बहुत जीव, परे-परे चिल्लाहिं ।
प्यासाकुल हो यों कहैं, पानी दीजै प्याहिं ॥

अति आरत है बोलैं पापी,प्रभु बिनय हमारी श्रवण कीजै ।

पहले कछु नीर पिला करके,पुनि त्रास हमें गण वर दीजै ।
पापिष्ठ निवेदन सुनकर गण, कहते हैं अहो मती हीना ।
निर्दयी बता नर तन पाकर, तूने क्या दया धर्म्म कीना ॥
भूखे प्यासे ने प्रश्न किया, बाबा कछु दया हमारी लो ।
प्यासे हैं नीर पिलाउ हमें, पुनि श्रद्धा मुआफिक भोजन दो ॥
तब झिड़क कहा उससे तूने, फिर को ह्याँ आय मरगया है ।
चल हट तेरे प्रति कुछ नहीं ह्याँ,क्या बाप तुम्हार रखगया है॥
इस प्रकार प्यारे अभ्यागत, रे ! पापी तूने धिक्कारे ।
मन चाहे कुकृत व्हाँ करके, मर कर ह्याँ आया नाकारे ॥
तब हमभी बड़े हर्ष से अब, कहते को आन मरगया है ।
जो पापी तुझको जल दें हम,क्या बाप तुम्हारा रखगया है ॥

* तर्ज तु० कृत रा० *

बहु धिक्कार अज्ञ नर तोही । निजकृतकर्म्म भुगुत अब सोई ॥
कौन ज्ञान अब पानी मांगा । अग्नि कूपभय प्रथम न लागा ॥

* दोहा *

नरक पञ्च दशवाँ सुनहु, तेलयंत्र तेहि नाम ।
कोल्हू में जिमि ईख रह, यामें त्यों नर-बाम ॥

* तर्ज राधेश्याम *

जे अन्य फसल की चोरी कर, तस्कर नर निज घर लाते हैं ।
नज पूजनीय माता पितु को, जे नर नित त्रास दिखाते हैं ॥
रानी ! ऐसे पापी प्राणी, सब तेल यंत्र में जाते—हैं
चर्खी में गन्ने की नाई, सुन्दरि ये पेले जाते—हैं ॥

* दोहा *

दुखदाई है सोलहवाँ, दुखदाई तेहि नाम ।
इसके पतितों को नहीं, पल भर भी आराम ॥

पर दोष प्रकाशो निर्धन हा, दुःखदा नरक में जाते हैं।
सब प्राणी अपनी करनी के, कर्मानुसार फल पाते हैं॥
सत्रहवाँ नरक तमकार जान, जिसमें अति निबिड़ अँधेरा है।
कैसा मानो वर्षाऋतु की, मावस का घोर अँधेरा है॥
निश्चर के से आचरणों के, अभिमानी भक्त विरोधी जे।
दुसरों के कंठ छुरी मारक, तमकार की शाशति पाते ये॥

※ चौपाई ※

नरक अष्टदशवां अब रानो। सँज्ञा तासु बिलोचन मानी॥
दृग विहीन कर यामें डालें। नरक बिलोचन दुख अति शालें॥
मीनेश भक्ति नहिं कर नर जो,पर नारि ते बरबस रतिकर जो।
दर्शन हित जाय न हरि हर जो, लखि शीश नवाय न गुरुजन जो॥
विधवा नारी जो परपति हित, कज्जल आंजे बीड़ा खावे।
इसमें शक नहिं उस पापी सह, वह नरक बिलोचन में जावे॥

※ दोहा ※

यही अष्ट दश नरक हैं, सो सब कहे बखान।
अब क्या कहुं वह शीघ्र, मुझसे कह सज्ञान॥

※ सोरठा ※

प्राणेश्वर ममपीव !, पुनि अनुकंपा करि कहो।
नरक भोग यह जीव,कहाँ जाय पुनि कहँ रहै॥

महाराज शूरसिंह प्रसन्न होकर कहने लगे कि अच्छा-सुनो रानी..........

※ तर्ज राधेश्याम ※

पुण्यी-पापी दोउ भाँति जीव, पहले यमपुर में जाते हैं।
सुकृति ह्वै रथारुढ़ जावैं, अधि पैदल मग दुख पाते हैं॥

यमचर दोनों को लेजा कर, सब नरक प्रथम बतलाते हैं।
पुनि दोनों को रविसुत के गण, रविसुत सन्मुख लेजाते हैं॥

※ यमराज का दरबार ※

ऊंचे सिंहासन पर हरि जज, हर्षित मुख बैठे रहते हैं।
यम सन्मुख चारवेद सुबरण, पंनो पर अंकित रहते हैं॥
सिरपर रतनों का जड़ा मुकुट, कानों में कुण्डल लोलित हैं।
मुख कांति भली रवि सी जिनकी,गल तुलसी माल सुशोभित हैं॥
और भी ऋषीश्वर ऋतबादी, यमराज के ढिग शुभ आसनपर।
तिनके दायें अति दिव्यदृष्टि, लेखक श्री चित्रगुप्त बुधिवर॥

※ दोहा ※

छाने चौड़े पाप जो, करत जीव जग माँहि।
मय प्रमाण सो सब लिखैं, तनकौ चूकैं नाँहि॥

※ चौपाई ※

यमगण जब पापिहिं लै जावैं। गहि नविसुत सम्मुख उढ़ियावैं॥

※ तर्ज राधेश्याम ※

लेखक श्री चित्रगुप्त जी तब, जिव-बही उठाय देखते।
यम सम्मुक गत उन जीवों की, भौतिक घटना सब कहते हैं॥
यमराज से वे यों कहते हैं, यह पापी फलाँ पाप का है।
प्रभु अमुख जीव इसका प्रमाण, सचमुच यह कैदी आपका है॥
हे नाथ अमुक सुकृति नर है, कर पुण्य रहा यह नर्मी से।
इसको भेजिये स्वर्ग अबही, कुछ काम नहीं यहाँ स्वर्गी से।
तब रविसुत सादर धर्मी को, यमपुर से यान चढ़ा करके।
पठवाते हैं उसको नाक लोक, स्वागत युत मान बड़ा करके॥
आगे बाजे बजते जावें, स्वर्गी विमान पाछे धावें।
जब कछुक दूर रह जायँ स्वर्ग, तब सुर-पातुर आगे आवें॥

* गाना संग्रहीत् *

मेरा प्यारा दुलारा पै तन-मन निसारा, देखो बनाया है-
फूलों का हार।

बेला चमेली,जूही अलबेली,है यह गुलाब

देखो देखो जनाब जरा पहनो तो हार हम लूटें बहार।
प्यारा दुलारा पै तन मन निसारा देखो बनाया है फूलों का हार॥

* चौपाई *

नृत्य करत स्वागत दिखरावैं। गो मधि लै आसन बैठावैं॥
कहैं कि हम सब तुम्हारी दासी। एक न एक रहि हैं तुव पासी॥

* दोहा *

जो सुख चाहिये आपको, वही यहाँ तय्यार।
करिय भोग मनईच्छित, हम सब ताबे दार॥

* तर्ज राधेश्याम *

यह सुबरण भवन तुम्हारा है, इसमें आजादी से रहिये।
मन चाहे भोग विलास करो, नहिं ह्रास यहाँ सुख से रहिये॥
धर्मी इस तरह पुण्य निज से, सुरलोक सौख्य को पाता है।
पुनि पुण्य नष्ट हो जाने पर, फिर लौट जगत में आता है॥
सत्कर्म्म क्षीण हो जाने पर, स्वर्गीका जन्म श्रेष्ठ घर हो।
यदि फिर भी धर्म्म निष्ठ वह हो,तो फिर उसका सुरपुर घर हो॥
अन्यथा दुष्कर्म करने से, स्वर्गी भी यमपुर गामी हो।
दुष्कर्म का रागी सचमुच हो, कैदी यमपुर स्वामी का हो॥
रानी ने कहा विनय सुनिये, कुकृत से यमपुर मिलता है।
तब कहिये भूप कौन कृत ते, वह स्वर्ग लोक दर खुलता है॥
तीरथ संयम तप यज्ञ किये, श्रुति शास्त्र सुनें व्रत नेम करें।
हिंसा कर्मनतें दूर रहे, छाया हित मारग वृच्छ धरें॥

* दोहा *

अस कर्मन के किये ते, स्वर्ग लोक हो वास।
अब वह सुन बैकुण्ठ में, जेहि ते करै निवास॥

जिसने वर गुरु से दीक्षित हो, मीनेश पिता का भजन किया।
आजन्म करी सज्जन सेवा, सबसे मृदु कोमल कथन किया॥
हो प्रेम ते विह्वल भक्ति करै, मित भाषि रहै शुचि सत्य कहै।
सत्कर्म सभी हरि कहँ अरपै, हरि भक्त सो पावन मुक्ति लहै॥
बैकुण्ठ जाय अस जन रानी, रविसुतपुर न्याय नहीं उसका।
धर्मी-अघि दोनों के मगते, हैं अलग मार्ग श्री हरि जनका॥

* दोहा *

भक्त जाय बैकुण्ठ में, पला न पकड़े कोय।
ना जन्मैं ना मरै वह, ईश माहिं लय होय॥
अच्छा अब वह प्रश्न तब,नरक भोग यह जीव।
कहाँ जाय पुनि कहँ बसै,बरणों सुन मति सींव॥

* तर्ज राधेश्याम *

यह पहले ही होगया कथन, धर्मात्मा स्वर्ग सिधाते हैं।
पापी कहँ यम संयमनी रख, दुख अकथनीय भुक्ताते हैं॥

* तर्ज तु० कृत रा० *

नरक विपद बहु काल भुगाई। पुनि जग में जन्मावत वाही॥
प्रथम जन्म कीन्हे जस कर्म्म। तदनुसार पापी लह जन्मा॥

* यथा—तर्ज राधेश्याम *

बालक-द्विज बधकर्त्ता जगमें, आजन्म निपुत्री रहता है।
मदिरा का सेवक भेक बनै, तस्कर अति रोगी होता है॥

*** दोहा ***

गौ का घातक जगत में, श्वपच केर तन पाइ ।
स्वर्ण चोर जग जन्म लै, अति कोढ़ी हो जाइ ॥

जो ब्राह्मण श्रुति पढ़ता तो है, पर तदनुसार चलता नहिं है ।
पुनि विषयी हरि यश से बंचित, अस द्विज पुनि जग बनता अहि है ॥

*** दोहा ***

निजनारी को छोड़ि जे, गणिका गामी होइ ।
ते नर यमपुर दुःख सह, जन्मैं रासभः होइ ॥

आमिष खाने वाले द्विज को, यजमान जु दान करै कोई ।
तो वह शठ द्विज वह दाता नर, दोनों जनमैं गीदड़ होई ॥
होती कन्या का वध कर्त्ता, गिरगत की देही पाता है ।
झूठा विवादकरने वाला, जग कछुआ हो कर आता है ॥

*** चौपाई ***

देने योग जु दान न देहीं । ते अधि जगतीतल बक ह्वै ही ॥
अस विसर्ग जो बाधा डालै । ते जग लदुवा हय बनि चालै ॥

*** तर्ज राधेश्याम ***

जो नर काहू का सच्चा ऋण, करकै अनीति खा मरता है ।
वह पुनर्जन्म में उस ऋण को, बन देह वृषभ की भरता है ॥
जो धरी धरोहर काहू की, अपनी कर दबा दबू लेते ।
ते विष्ठा कृमि की बपु पाकर, जगविष्ठा कहँ भक्षण करते ॥

*** दोहा ***

लोह अपहरण जे करत, ते हो व्याघ्र जहान ।
अन्न का तस्कर जगत में, बहरा हो सति मान ॥

महिसुर हरिजन संत कहँ, चरण प्रहारे जोइ ।
ते शठ जग में जन्म लै, एक पाद बिनु होइ ॥
जो नर नित क्रोधी रहै, मुखप्रसन्न कहुं नाहिं ।
नरक भोगि अस मनुज पुनि, नकुल होहिं जग मांहि ॥

विश्वास किसी को देकर जे, विश्वास घात खल करते हैं ।
अस नर मरुदेश में मृग होकर, तृष्णाकुल भगते फिरते हैं ॥
मानुष सी उत्तम देही पा, जे नीच करैं पर को पीड़ा ।
ऐसे नर पुनर्जन्म जब लैं, तब होवैं मूत्रस्थल कीड़ा ॥
मुख ते मीठा उर ते कड़वा, अस नर जग विषय होय चीता ।
तामस युत जे कछु दान करैं, ते होहिं द्विरद जग अघमीता ॥

*** दोहा ***

पर प्रमदन ते जे अधम, करहिं रती वर जोरि ।
ते यमपुर ते आयकै श्वान होहिं कृत खोरि ॥

दोष को जानते बीनते भी, जे अधम मांस भक्षण करते ।
ते पुनर्जन्म में गृध्र बनें, मृतपशु आमिष भक्षण करते ॥
जे एक जाति में कई भेद, करके वैमनस्य फैलाते हैं ।
वे नरक दुःख उपरांत जगत, चिमगादर का तन पाते हैं ॥

*** दोहा ***

बिन प्रणाम मीनेश को, जे नर भोजन खाहिं ।
ते प्रथमैं पर नर्क पुनि, मिलैं काग बपु ताहि ॥
अशुभकर्म्म भव में जिते, सो सब अति दुख दानि ।
तिन करि नर-प्रमदा परैं, संसृति के दुख आनि ॥

*** इति ***

卐

मीना क्षत्रिय जाति की बत्तीस तड़े

चौदह मन्वंतरों तथा युगों में भगवान् विष्णु ने कारण वश प्रसिद्ध मीन नाम से ३२ बार अवतार धारण किया है। यही कारण है कि अब तक मीना क्षत्रियों में ३२ सम्प्रदाय हैं वही ३२ सम्प्रदाय आजकल तड़े कही जाती हैं उनमें १४ मुख्य बड़े तथा १८ उपतड़े समझना चाहिये।

यथाः—

* दोहा *

पहली मन्वी दूसरी, प्रमारणी लो जान।
स्वारोचिषि है तीसरी, चौथो उत्तमि जान॥
बाण विशाखी षष्ठमी, हरिमेधसी सुजान।
सतईं तड़ है रैवती, वसईं वैष्णविमान॥
नवमी सुनहु इणावृती, दशईं मतिस्य प्रमान।
एका दशमो चाक्षुषी, बारहवि मैंनी जान॥
पृथुनी तेहरवि सज्जनों, चौदहवि सुनु धर ध्यान।
चौदवि काश्यपि जानिये, अष्टादश उप मान॥
चौदह तो हमने लिखी, अष्टादश नहिं याद।
अष्टादश बतलाय जे, तिन कहै धन्य सुबाद॥

★

मीना क्षत्रिय जाति के विष्णु भक्त श्री घाटमदास जी 'बलीग्राम' निवासी

* चौ० तर्ज तु० कृ० रा० की भाँति *

मीन ज्ञाति में घाटम मारण । कर हरि भक्ति भये त्रण तारण ॥
दक्ष स्तेय कर्म्म में घाटम । गनी लोग कहँ रोकै बाटम ॥

* दोहा *

तिनको सब धन छीनकर, अभ्यागत हित देहिं ।
घाटम घट में राम रखि, काल-क्षेप यों लेहिं ॥

एकबार घाटम बनमाहीं । मार्ग बाँधि बैठ्यो इक ठाहीं ॥
तेहि मग विष्णु भगत कोउ आवत। कौनेहुँ काज विपिन ह्वै जावत॥
विधि वश घाटम ते भई भेटा । घाटम पकरि कह्यो तेहि फेंटा ॥
कह घाटम सुनु द्विज सज्ञाना । जो धन पास तोर मैं जाना ॥
सो सब काढ़ि यहाँ धरि दीजै । अपर विचार न हिय में कीजै ॥
नाहि तु भिंदियाल के गोला । चलो जाय तब प्राण अमोला ॥
सुनि घाटम की अप्रिय वानी । द्विज मति विमल विकल बिलखानी।
पुनि धीरज धरि कह द्विजराई । मम समीप गथ नहिं कछु भाई ॥
मुधा तात मम जीवन हरई । यमघर जाय तूं का फल भरई ॥
भूत दया सम धर्म न भाई । जीव निधन सम अघ जग नाहीं ॥

सत्य वदन सम तप नहिं कोई । राम रटन सम जप नहिं कोई ॥
भक्ति समान सुगम नहिं साधन । जगति समान अपर नहिं बंधन ॥
ताते भक्ति विष्णु की कीजै । दुष्ट भाव मनसे तजि दीजै ॥
भूत दया तम मनमें धारो । दुष्ट भावना दूर निवारो ॥
काहू को सतगुरु चुनि लीजै । गुरु से मन्त्र दीक्षा लीजै ॥
करि हटि भक्ति सदा सुख पहि हैं। योग क्षेम तव सब हरि वहि हैं ॥

※ दोहा ※

घाटम सुनि द्विज के वचन, है सति है सति भाषि ।
तुम ही मम गुरु देवता, परचो चरण तजि माखि ॥

मेरो मंतु क्षमा अब करिये । शिष्य बनाय अविद्या हरिये ॥
कह द्विज काहुहिं शिष्य न करिये। घाटम क्यों द्विज कह भल सुनिये॥
जो कोउ शिष्य करै काहू को । पाप भार गुरु पर वाहू को ॥

ब्राह्मण की यह बात सुन घाटम जी क्रोधित होकर ब्राह्मण से कहते हैं:—

कह घाटम जो शिष्य न करहू, तो मम भिंदिपाल ते मरहू ॥

※ दोहा ※

तब द्विज ने घबराय कर, कृष्ण वरण इक टोप ।
इस प्रकार कहने लगा, घाटम के शिर रोप ॥
कृष्ण वरण को टोप यह, तू कर लाय सफेद ।
तो पुनि तुम कहँ शिष्य हम, अवशि करैं तजि खेद ॥
पता ठीक लै विप्र का, छाँड़ि दिया सज्ञान ।
किमि होवै यह श्वेत अब, करन लगे मन ज्ञान ॥

※ चौपाई ※

एक समय ग्रीषम ऋतु माहीं । घाटम निज घट राम बसाईं ॥

कार्य हेतु कहुं चल्यो सुजाना । चलत चलत दिनकर मध्याना ॥
काल दण्ड सम यष्ठि स्कन्धे । भिंदिपाल अँगुलिन कर मध्ये ॥

※ दोहा ※

उत्तरीय के छोर में, बाँधे पत्थर गोल ।
जिस करिकै धनि कृपण कह,शासै,धन कहं बोल॥

तरणि तेज अतिशय अनुमाना । आम्ब छाँह बैठचो घटमाना ॥
पुनि उठि गयो वीर उदपाना । तहँ जलसत्र भरै प्यौवाना ॥
ग्राम पशू जल पी पी जावे । जिन नहिं पियो सो पातुम आवै ॥
घाटम नीर पियो सुखपाई । यहि अंतर बालक इक आई ॥
बलद पशू सब बहुत पियासे । हिवनलगे जल भग अतुरा से ॥
इतने में दोरचो प्यौवारा । यष्ठि मारि सब पशु निरुवारा ॥
वलद पती विनवैं कर जोरे । पीने दे प्यासे पशु मोरे ॥
विनय न मानत इक प्यौवारा । यष्ठि सँभारि खेड़ा दुष्टारा ॥
घाटिक र्म्म जब घाटम चीन्हा । प्योवारे ते कह्यो प्रवीना ॥

※ दोहा ※

अहो तात् ! पशु दीन ये, प्यासे जल के आहि ।
क्यों रोकै जल पिवन दे, बिनु जल पशु मरि जाहि ॥

बड़ो पुण्य हरि मानैं तेरा । मृत्यु बाद तव स्वर्ग बसेरा ॥
जीवहिं प्यास लगै जब भारी । क्षण भर बाह तिष्ठै बिनु बारी ॥
तात समुझि अस पीने दे जल । जल बिनु मारि न कर निज अनभल॥
विविध भाँति घाटम समुझायो । रह्यो मूर्ख कछु मन नहिं आयो ॥
जिमि जिमि घाटन ज्ञान बखानै। तिमि खल रिसै यष्ठि गहि तानै ॥

प्यौवार। घाटम जी को झिड़क कर बोला—

कह्यो हटकि चुपऽलम दुष्टारा । कृत्य चौर कस ज्ञान बघारा ॥

तवियत अपनी न पीने दू जल । तीन चपट मतकर चल हट खल ॥

* दोहा *

सुनु तस्कर कठिनाँइ ते, धन संचहि श्रीमान् ।
अनायास तू सेंध दे, चोर खाहिं दुरज्ञान ॥

जलनिष्कासन अंत कठिनाई । तू का जानै पीर पराई ॥
अस कहि प्रवल एक लै धायो । तब घाटम मनअमरषछायो ॥
अति लाघव कछु उछल कुदक्कै । भिंदि पाल में ग्राव निधक्कै ॥
भ्राम्यकबार सु कीन्ह प्रहारा । फूटि कपाल मरचो प्योवारा ॥
पञ्चत्वमगत भयो कसाई । इत सुरभित जल पियो अघाई ॥
विसमउ रंच अनंद अपारा । घाटम घट में राम सँभारा ॥
पुनि घाटम उर कीन्ह विचारा । ईहाँ रहै प्रत्यूह अपारा ॥
खेद मही मारचो प्योवारा । मोर यही भा पर उपकारा ॥
असगुनि भिंदि पाल लाठी लै । त्वर घाटम नौ दो ग्यारह भै ॥

* सोरठा *

अति दुर्गम थल जाय, मारण कुल चूड़ामणी ।
सघन वरुन को छाँह,बैठि उतारचो शिरस्कम् ॥

* दोहा *

शुक्ल वर्ण टोपा निरखि,विस्मय भयउ अपार ।
रह्यो कृष्ण किमि श्वेत भो,घाटम करत विचार॥

* सोरठा *

महिमा पर उपकार, बड़ी बताई सन्त जन ।
टोपा शुक्ल हमार, ताहीं ते सत्वर भयो ॥

* चौपाई *

अघ वर्जित अब मोर शरीरा । चलु घाटम अब गुरु के तीरा ॥

गुरु ढिग जाय कियो परनामा । करिय शिष्य मोहिं प्रभु सुख धामा ॥
द्विज विस्मित पूछ्यो सब कारन। घाटम कह्यो सहित विस्तारन ॥

* दोहा *

तब द्विज कृपानिधान ने, घाटम लिय उर लाय ।
विष्णु मन्त्र दीन्हा दई, शिष्य सु लियो बनाय ॥

तबते राम राम रट लाई । घाटम संसृति मेटि बहाई ॥
अन्त राम में मिलिगे जाई । घाटम ऐसी भक्ति दृढ़ाई ॥
इनकी कथा बहुत है आगे । ग्रन्थ कलेवर बड़ भय लागै ॥
यहि ते समास कछु भाखी ! मम लेखनि अब बिल्कुल थाकी ॥
याकहँ अब विश्राम हौं देहौं । मीनायण पारंगत ह्वै हौं ॥

* दोहा *

—उपसङ्-हार—

शास्त्र-गगन-नभ पाख शुचि, सम्बत् मगसिर मास ।
असित पक्ष तिथि प्रतिपदा, अर्किवार के नाश ॥
मीनायण यह ग्रन्थवर, पूरण मौक्तिक राम ।
मीन क्षत्रियन कहँ मिले, याहि पढ़े आराम ॥
शिक्षित और सुसभ्य हो, लाञ्छन सब मिटि जाय ।
बुद्धि विमल याके पढ़े, संसृति दुख घटि जाय ॥
पण्डित राधेश्याम सुत, बन्दों तुलसी दास ।
तिनको पथ अनुसरण करि, ग्रन्थ सु पूरित आशु ॥
मीनाक्षत्रिय पाँचवीं, पाल कच्छावी जान ।
तिसमैं हरि अवतार मुख, रामचन्द्र भगवान् ॥
वे ही मेरे इष्ट वर, सब विधि मम आधार ।
उनका पावन नाम रटि, उतरूँ भव निधि पार ॥

मिन स्वरूप श्रीराम पद, अटल प्रेम हों नित्त।
बिपति गिरी कितने परें, तऊ न बिलगै चित्त॥
रामनाम मणि दीप को, पाय उजेरो जीव।
छोरि अविद्या ग्रन्थि तू, शीघ्र बनो सुख सींव॥
आसक्ती ते रहित सब, करिय जगत के काम।
हरि सुमिरण करते रहो, अवशि मिलैं श्रीराम॥
मिन स्वरूप श्रीराम ते, सबहि बात नजदीक।
ब्रह्मा को तिनका करै, तिनके को विधि ठीक।
नहिं विद्या नहि बाहुबल, नहीं पास में दाम।
मौक्तिक दर्भ गरीब की, तुम पत राखो राम॥
बार बार वर मागहूं, हर्षि देहु श्री रङ्ग।
पद सरोज अनपायिनी, भक्ति और सत्सङ्ग॥
यद्यपि जन्म कुग्राम में, मैं शठ सदा सदोष।
अपना जानि न छांडि हहिं, मोहिं श्रीराम भरोस॥
तुम्हरी किरपा ते कियो, यह मीनायण ग्रन्थ।
हे प्रभु इस कहँ आदरहिं, मीन वर्ग उत्संत॥
पतन कहाँ तक होयगा, मीन वर्ग का श्याम।
डूबी नैया जात है, लो पतवार सु थाम॥
मीनायण के पढ़े ते, खलु मिन जाति उद्धार।
यामें संशय रंच नहिं, मानों बात हमार॥
मीनायण के पढ़े ते, भुक्ति-मुक्ति लह लोय।
अज्ञ पढ़े अति सज्ञ हो, संशय करो न कोय॥
श्रवण मात्र इस ग्रन्थ के, पाप होंहि सब छार।
स्वर्ग माँहि बासा तिन्हैं, दें मीनेश उदार॥

★

हृत्तु भवज दुःखानि मीनेशो एकहि प्रभो।
नहि शाम्यति दावाग्नि, घनवृष्टि बिना क्वचित॥
राम त्वदीय पद पंकज पञ्जरान्ते।
अद्यैव में विशतु मानस राज हंस॥
प्राण प्रयाण समये कफ वात पित्ते।
कंठावरोधनविधौ स्मरणम् कुतस्ते॥

मीनेशो शं विदधातु
अलमधिकेन किम्

इति श्री जगन्नाथात्मज मौक्तिकराम दर्भ (डाभला)
परमार मारण क्षत्रिय सीमलखेड़ी वास्तव्य
विरचित मीनायणे पञ्चम शिक्षा सोपान

सम्पूर्णम्

सज्जनों का कृपा कांक्षीः—

मौक्तिकराम दर्भ (डाभला) परमार मारण क्षत्रिय सीमल खेड़ी निवासी तहसील व पोष्टाफिस खानपुर झालावाड़ जिला। प्रान्त राजस्थान हिंद।

समाप्तोऽयम् ग्रन्थः

卐

सौजन्य से
श्री सुग्रीव सिंह मीना
Ex IRS

PDF-BY
मोहर सिंह मीना
7014697306

मीना क्षत्रिय गोत्र संग्रह

अ अईच अऊत अंश अंशना अंशवा अंशवाल अंशु अंशुक अंशुमान अंशुमाली अकल अकाय अकाल अकाली अकुण्ठ अक्रूर अक्षय अक्षा अखवरिया अखया अखलू अखवैया अखावत अखेगोती अखेराजी अखेल अखेसिंहो अगरहा अगरिया अगसाला अगसिया अगस्त (अगस्त्य वाल) अग्नि अग्नि पाल अग्निपाली अग्निपोत्री अग्रोत अग्रदानी अग्रवाल अग्रसेनी अग्रहारी अघमर्षण अघोडा अघोर अङ्कुल अङ्का अङ्कुर अङ्ग अङ्गद अङ्ग देशी अङ्ग राजी अङ्ग रीय अङ्ग रीस अङ्ग वंशी अङ्ग सेना अङ्गार अङ्गारी अङ्गिरा अङ्गिरस अङ्गरी अङ्गरिय अङ्घासी अचल अचोरिया अच्युता अछड़ अछूता अज अजक (अजका) अजगर अजगोती अजमीढ़ (अजमीद) अजमेरा अजय अजयपाली अजय पुरिया अजरा अजलो अजा अजात अजातगोती अजिर (अजिरा) अजूरी अजोध्या अञ्जना अटल अटग्या अटाली अटिला अटोलिया अठकोलिया अठगया अठवाल अडविया अडाइया अडादानी अडोलिया अढ़ाई अणचाल अणवीह अण्ड अतारिया अतिजरिया

अतिथि अतिरथ अतिवाही अतीत अतैराव अतैवरिया
अत्थवाल अत्था अत्रि अथट अथल अथर्व अथर्ववाल
अथर्व वेदी अथर्वा (अथर्वाण) अदितवाल अदिति
अद्योरी अद्रोश अद्वैत (अद्वित्य) अध अधक अधन
अधन्या अधराजिया अधिकारी अधिपा अधीश अधैया
अधोंडा अध्वारु अनख अनखद अनङ्ग अनङ्गा
अनजरिया अन जूहा अनथवाल अनद्रो तरिया अनन्त
अनन्त गोती अनन्द गोती अन पथ अनपाल अन रण
अनरण्य अनल अनलोता अनलोती अनवा अनवारिया
अनवी अनाजिया अनादि अनाम अनामिया अनावाल
अनावाला अनाविल अनिरुद्ध अनिष्ठ अनिगोहिल
अनील अनील कौत अनु अनुचर अनूठा अनूप्या
अनेक अनौता अन्ति अन्धक अन्धा अन्धोली अन्ध्र
अन्नपूर्णा अपरा अपराजित अपल अपार अपोल गोता
अफग अवर अबरा अबला अबोल अब्बूत अभग
अभयराव अभाणी अभात अभिमन अभिष अभिषारा
अभिसार अभीक अभीर अभङ्ग अभ्यागत अमख
अमनेक अमर अमर गण अमर गोती अमर गोद
अमरपाल अमड़वाड़ अमरसिंही अमरसिंहोत अमराव
अमरोत अमल अमली अमङ्ग अमा अमान अमाया
अमारिया अमी अमीन अमीर अमीरा अमूर अमूल्य
अमृत अमेठिया अमेडिया अमेरिया अमोघ अमोघा
अमोरिया अमोलिया अम्बट्ट अम्बढ़ अम्बर अम्बरीष
अम्बल अम्बलवंशी अम्बष्ठ अम्बसार अम्बालिया
अम्बावत अम्बिका अम्वे अम्वेरिया अम्बोल अम्माला

अयरवाल अयल अयास अयुक्ता अरघड़ अरची
अरजनोता अरडबंशी अरन अरनी अरवेलू अरभण्ड
अरमनी अरर अरवत अरवा अरहल अराठ्य
अरिन्दम अरिया अरिहन्ता अरिहा अरुण अरुणगोत
अरुदवाल अरुश अरुशी अरंना अरोड अरौढ़ा अर्क
अर्कबँशी अर्क साला अर्क सेना अर्चण अर्जुन
अर्जुना अर्णव अर्राइन अलख अलदा अलबेचा
अलमेचा अलविया अलर्क अलक्ष अलिका अलिपुरिया
अलेया अल्ल अवटो अवध अवनि अवन्ति अर्वाति
अवलेचा अवसान अवस्थी अशोक अशोच अशोच्य
अश्वपति अश्वपाल अभ्रूण अष्ट वंशी अष्टान्न असटरी
असत असनावद असनावर असनेदिया असमञ्जस
असमार असवरिया असवाल असावाहु असित
असिताङ्ग असीरी असुर असुरिया असू असूद असैया
असोत असोपा अस्कानी अस्तानी अस्तानियाँ
अस्तिपालिया अस्त्रि अस्थान अहङ्गमाल अहना
अहर अहरवाड अहवन अहवासी अहितुण्ड अहिनगु
अहिनर अहिनरु अहिवंशी अहिक्षत्रा अहीरगोता
अहेरिया अहेवन अहोडिया अहोम अहोर अहोस

आ

आईचण आईश आँकन आँकल
आँका आँकारिया आँकेसिया आँगिरस आँचलिया
आँचा आँटी आँवत आकाशी आली आकेला आकोड़ू
आक्षाण आखण्डल आखा आगरी आघारिया आचार्य
आच्छा आजतेग आजन्मा आजा आडा आणा
आतापी आत्रेय आदम आदिगोता आदिगौड आदिनाग

आदिनाथ आदिवराह आदिशूर आदित्य आदेशिया आद्री आनन्द आनन्दपुरा आनव आन्ध्र आपा आपान आबी आबू आभड़ आभापुरा आभीर आभू आभङ्ग आमठ आमत्या आमदवाल आमदेवा आमूली आमेरिया आयति आयर आयरिया आयव ताया आयुगोता आयुवंशी आयङ्कर आयसा आरठ्ठ आरड आरमेनिया आरा आराकानी आरार्दी आर्य आर्हत आलावत आलीजा आलोत आवट आशाणी आशासूरा आशिया आशी आशु आशुगोता आसा (आशा) आसामी आसोपा आस्तीक आहाडा आहाडिया आहारु

इ इक्ष्वाकु इखाग इखागवंशी इच्छावत इत्था इदवाल इदा इदिगा इन्दा इन्दिवरा इन्दु इन्दोरिया इन्दोलिया इन्द्रगोता इन्द्रवंशी इन्द्रशाला इन्द्रावल इन्द्रोत इन्द्रौदर इधारा इराधी इला इवेरनी इषु

ई ईशा ईश्वरिया

उ उत्रृण उकरडिया उकरहा उकलेडा उकोसा उगा उग्रिया उघाडिया उचहरिया उचितवाल उच्चपुरिया उजला उजवाल उजारहा उज्जाल उज्जेनिया उटारिया उडरगोता उडिया उडेसरिया उतेरवा उत्कट उत्कोशिक उत्तम उत्तेरवा उदमतिया उदयसिंहोत उदावत उनडिया उन्नाय उपमा उपर

(उपरा) उपल उपलदेवा उपाका उपाध्याय उबडिया उम्मेदिया उम्मेरिया उम्रगोता उस्त्रिया उरक उराण उरु उर्बरा उर्वशी उषवाल उषा उषारा उसभ (उसिया) उसीवड उसेवा उस्रा उहडगोता

ऊ ऊँटड़िया ऊडेजा ऊध ऊमट ऊमरा

ऋ ऋद्धिगोता ऋषभवंशी

ए एकनामी एकलिङ्गिया एणगोता एरणपुरिया एरोडा एलची एलील एलीरिया

ऐ ऐबेल ऐरण ऐरावत ऐल

ओ ओककेतु ओखलिया ओछा ओछीला ओज ओजकरा ओझा ओझियार ओंड ओंडलिया ओडीट ओंडीसा ओंदगा ओदन ओदंडा ओबरा ओंबरिया ओम ओमना ओराडा ओरीस्त ओल ओसट ओसीयाल ओहन्द ओहिल

औ औघड औतन औदिच्य औरवाल (और्वलि) औलम औस्तवाल

क

कंसोत ककडीवाल ककन्या ककरोडा
ककावत ककुभ ककुत्स्थ (काकुत्स्थ) ककुद ककुभ
ककुह ककोड कंकवंशी (कंक) कड्वालिया
कड्वासिया कड्कोला कछवाहा (कुशवाहा) कच्छपारी
कच्छपघात कच्छी कछोटिया कछोलिया कजलोत
कजेडा कजोडा कजोंही कटक कटकनेरा कटरावत
कटारिया कटुकडा कटुमाल कटेडा कटोतरा कठकडा
कठकोडा कठगोता कठा कठालु कटियारा कठियालु
कठेरवाल कठेरिया कठोती कठोदिया कठोर (कठोड)
कठोलिया कडचल कडुआ कडेचा कढ़ेरा कण कणका
कणवा कणावी कणोर कण्ठपहाडी कण्डू कण्ववंशी-
(कण्व) कतनी कतरेनिया कतुवा कथक कथोरिया
कदम्ब कदली कदाबा कनक कनकन कनकसेना
कनकोडा कनपाल कनयोगी कनवी कनहेडा कनाडी
कनासी कनिष्क कनी कनोजिया कन्दा कन्दु कन्दौइया
कन्धारी कन्नवंशी कपटा कपटालिया कपरेला कपाल
कपासिया कपिञ्जल कपिशा कपोष्ट कपूरचन्दोत
कपूरिया कपोत कफगोता कबराई कबाडो कबीर
कमठा कमधाजिया कमनिया कमला कमलीवाल
कमाख कमाट कमाठी कमाड कमानगर कमारी
कमालिया कमाश (कमाशिया) कमिलगोता
कमीगोता कमोदिनी कमोला कम्बोज कयाल करक
करकलिया करंगा करट करड करडांवत करडिया

करनाम करवा करवाडा करविन्द करसोलिया
करहेडिया करादा करीर करुष करेक करेणु करेदोकर
करेलवाल करेला करेशा करोर करोलिया कर्णवंशी
कर्णावत कर्णाटियाँ कर्णिया कर्णी कर्णोत कर्दम कर्मकर
कर्मकार कर्मचन्दोत कर्मतोरा कर्षण कर्षा कलकर
कलकारिया कलकिया कलकी कलचूरी कलन्द कलन्दर
कलन्त्री कलमी कलवर (कलवार) कलश कलहंस
कलाप कलावत कलिया कलिञ्जर (कालिञ्जर)
कली कलूम कलूरा कलेरी कलेशिया कलोनिया
कलोलिया कल्याणमल्लोत कल्हण कवाला कवीश्वर
कशा कश्मीरा कश्यप कषाय कष्टी कसरती कसण्डा
कसन्धान कसाण कसिया कसुन्नार कस्ता कहाउ
कहार कहु कहुगा कहुधिया काँकडोलिया कांकणी
कांकरवाल काँकरिया काँकरोलिया काँकस कांचनिया
कांचलिया काँचिया कांटिया काँधला काँपलिया
काँसलवाल काई काऊका काकटेन काकड काकती
काकना काकरेचा काकलिया काकवर्ण काकसेना
काकेश काग कागोत कांग्या काचबंशी काचीवाल
काचोल्या काछलिया काछवा काछी काछील काजलिया
काजी काटी काठ (काठगोता) काठलिया कठियाल
काठियावाडी काठुडे काठेड काडिया काण काणुका
काती कातीला कात्यायन काथ कादरडा
कादरी कादिया कादिम्या कानड कानड़े काननचर
कानन्त कानपुरिया कानीन कानूगा कानूनी कानोडिया
कानोत कापडिया कापडोदिया काफला काबरा

कामकरिया कामखा कामपाट कामपालोत कामरूप
कामस कामसेना कामा कामु कायठी कायस्थ कायम
(कायमखानी) कारकी कारटपाल कारडग कारडा
कारलेकर कारागढ काराल कारु कार्तिक कालक
कालकूट कालपुसर कालमोह कालभोजी कालभण्डारी
काला कालाणी कालामोरी कालिया कालीदासोत
कालेचा कालेरा कालेश कालोत कालोतरा कालोली
कावडिया कावा काविस काशा काशिक काशी
काशीप काशीवाल काशेल काष्टा कासतवाल कासरा
कश्लीवाल कासल्या कासब कासिम कासिद कासिल काहला
किध्वाल किनवर किनारिया किनाश किन्नर किरजाला
किलेदार कीचक कीडवा कीडा कीर्तिया कीलिया कुंवारिया
कुवाल कुकट कुकड कुकडा कुकण कुकरेती कुकस्थ कुका
कुकुर कुक्षी कुगेर कुङ्कण कुंकुम कुङ्गाचिया कुचू
कुचेरा (कुचेला) कुजलकर कुञ्चालिया कुञ्जडा
कुञ्जर कुञ्जोली कुटल कुठारी कुडाल कुडालक
कुडी कुणिका कुण्ठगोता कुण्डया कुतीनेगा कुदण
कुदाल्या कुदावत कुनाल कुन्तल कुन्दा कुन्दी
कुन्दीगरा कुपीथ कुवडा कुवेरिया कुमठ कुमडिया
कुमरानी कुमरावत कुमार कुमारपालोत कुमारिया
कुमाल कुमायु कुमुद कुम्भराजिया कुम्भावत कुम्भिया
कुम्भेश्वरा कुरकचिया कुरड कुरपाल कुरारा कुरु
कुरुमार कुरुवंशी कुरुवीर कुरुविन्द कुरुक्षेत्री
कुर्जिया कुर्मी कुर्सीवाल कुलगुरु कुलकर्णी कुलमाण
कुलमी कुलरिया कुलवान कुलाल कुली कुलेश्वरी

कुल्या कुवाँला कुश कुशस्थली कुशध्वज कुशला
कुशानवंशी कुशानहा कुशी कुशीनगरा कुश्ती कुशकसा
कुसनाम कुसोत कुहण कुहया कुहवंशी कूचरा कूटा
कूतवाल कूप कूरवानी कूर्म कृपण कृपाण कृपाल
कृषक कृष्टी कृष्ण केडच केत केतल केरल (केरलवाल)
केलकर केलण केलवड केलवा केलोडा केवट केवड़ा
केवला केशगोत केशर केशचावणे केशी केशुलिया
केहरी कैकिय कंडवा कैथोला केदिया कैरव (कैरवत)
कैलपुरा कैलाया कैलारिया कैलाशा कोक कोकड़ा
कोकण कोचर कोचेटा कोटपाल कोटलिया कोटवाल
कटिक कोटिया कोटी कोठीफोडा कोठेचा कोडम
कोडीयारा कोडीवाल कोथालिया कोदव कोमद कोमल
कोमिन्न कोरट कोरटवाल कोरिपाल क्रोम कोल
कोलला कोश कोशल कोष्ठ कोसाली कोसी कोहड
कौजकर कौटिल्य कौण्डिन्य कोठारी कौडिया कौडियाला
कौतुक कौथुणाँ कौनेटी कौपरकर कौरस कोलटा
कौला कौली काहली क्रिमि क्रीट (क्रोधिया)
क्रौञ्चगोता क्षत्रप क्षत्रिय (छत्री) क्षेत्रपाल क्षेत्रवाल

ख

खक्कर खखर खखा खग खगगति
खगपति खगराडिया खगल खगोल खङ्गर खङ्गरावत
खङ्गरोत खङ्गल खङ्गोत खचर खचोहा खज
खजानची खजुआ खजूर खञ्जर खटकर्मी खटकुली
खटमल खटवा खटवाड्या खटोल खड खडक खडखेत
खडनर खडवड़ खडर खडरूप खडलोंहा खडायता
खडिया खडीवाल खड्डिया खडेत खणगोत खण्टवड

(खण्टवार) खण्डरेक खण्डलवाल खण्डहरा खण्डाहडा
खण्डोर (खण्डवीर) (खण्डेलवाल) खण्डेलिया
खतप खतमाल खति खतूरिया खत्रवार खत्री खदवड
खदिरा खद्योत खनहत खन्ना खन्नाडा खन्दनाग
खन्दवरी खन्दारी खपर खम्भर खम्भा खम्भाची
खम्मेरिया ख्यावत खरओस्ट खरकोला खरड खरडिया
खरतर खरदड खरदरा खरनालिया खरपशिया
खरला खरवासिया खरसाण खरहथ खराड़ खरादी
(खादरिया खरेटिया खरोत खल (खरा) खलकी
खलपू खलरिया खलासिया खलोडिया खवला खवास
खस खसतो खसीया खाँगड खाँगद खाँगी खाँटा
खाँडगोता खाँडा खाँडिलकर खाँडेराव खाँढोरा
खाँदरा खाँभी खागर खाजिया खाजो खाटरी खाटू
खाटोडा खाडरिया खातरवाल खातीमीणा खातोला
खादर खादी खाना खानी खानीराय खापरिवा
खारवाल खारी खारेड खालत खावर खावणो खास
खिजवाई खिड़कवाल खित खिपरिया खिसत खींची
खींचडिया खीमसरा खीर खीरा खीरावाल खीरी
खोलहरी खीला खोवजा खुँवडिया खचिया खुँवाल
(खुटमला) खुटोटा खुड्या खुण्डला खुदाली
खुनका खुडमोत खुमान खुरया खुरला खुरेत खुल
खुलारी खूँटा खूँटिया खूतडा खुन खूनतरा
खुमडा खेचर खेजड खेटा खेडा खेडूत खेतवाल खेतसी
खेताणी खेतावत खेदिया खेपोत खेभाणी खेमर
खेमचाल खेमला खेमानन्दी खेमासा खेमोत खेर खेरा
खेरुरथा खेरोवी खेलण खेलवाल खेलाउन खेला

खेलीवाल खेवडी खेवर खेसली खँका खोइया
खोकरवाल खोकड खोकरा खोंचडिया खोजी खोटा
खोटिङ्ग खोडला खोडा खोडावाल खोदा खोदासिया
खोमावत खोरा खोराना खोलवाल खोसरिया खोधर

ग

गगरा गगवाणी गंग गंगइच्या
गंगधार गंगराज गंगरोलिया गंगल गंगलावत गंगवाल
गंगाठ गंगापारी गंगारी गंगावत गंगेसरा गंगोजिया
गंगोली गंगोत्री गच्छगोती गच्छपाल गजका (गजराज)
गजनी गजा (गजानन्द) गजानन्दी गजेला (गजरूप)
गञ्जवारा (गजावत)गञ्जवर गञ्जिया गठणिया गठनायक
गठोलिया गडग्रोल गडरिया गडवाणो गडग्राली
गडाचिया गडिया गढ़चाँपिया (गढ़पाल) गढ़वाल
(गढ़पति) गण गणक गणगौरिया गणदेव गणधर
(गणधार) गणपति गणफूल गणेश गण्डका गण्डवारा
गदर गदा गदाधर गद्दी (गदी) गनिंग गनीगर
गनेआ गन्दला गन्धर्व गन्धार गपावाल गमडू गमला
गम्भीर गया गरगवागर गरगोत गरदोलिया गरल
गरसी गरसुगण गरिष्ठ गरोठ गरुडी गर्ग गर्गा
गर्त गर्दभ गर्दभसेना गर्भ गर्म गर्बिया गलणी
गलता (गलदा) गलवाणी गलोचिया गल्लानी गवन
गवीष्ट गसौरा गहरवार गहलडा गहला गहलाटा
गहलोत (गुहलोत) गहोई गहोतर गहौतर गाँगल
गाँगलीवाल गाँगलू गाँगेय गागरोनी गाछी गाजण
गाजर गाडा गडिया गाडोवाल गोडोलिया गाढ़ा

गाथा गाथपति गाधा गाधिया गानी गान्धी गामर
गाय गायकवाड़ गायन गायलवाल गारिया गाल
गालव गालिया गालू गाहा गाहिड गाहिडवाल
गिदोडिया गिरधर (गिरिधारी) गिरिधारोत
गिरिमण्डला गिरिवासी गिरीश गिलगचिया गिलोटिया
गिलोरिया गिहथ गीगल्या गीला गीर्वाण गुखेरा
गुगरजाल गुगली गुगेरी गुग्गल गुजराती गुजाखा
गुञ्जल गुञ्जा गुठलिया गुठा गुडगोता गुडिया
गुणधर गुणधूली गुणसेनिया गुणाधिप गुदावाल
गुनरिया गुनोधिया गुन्थी गुप्त गुरडा गुरावा गुरु
गुरोसिया (ग्रासिया) गुलचट गुलधूली गुलरिया
गुलवारिया गुवर गुसाँई (गोस्वामी) गुसिया गुहक
गुहील गूर्जरगोड गूजरमीणा गूर्जरवाल गूजेटिया
गूँडा गूढल गूदडा गूँदा गेलडा गेह गेहोरिया
गैकवाड गैरतेला गैरिक गोकर्ण गोकुल गोखर
गोखरु गोखल गोगलिया गोगवार गोगसेना गोगा
गोगाणी गोगावत गोगोरी गोचर गोठ गोठण गोठवाल
गोठडावाल गोडवाड गोणोगोता गोदण गोदानी
गोदेसा गोधरा गोधा (गोदा) गोधूम गोनस
गोनिया गोपाला गोपालोत गोपावत गोभदानी गोभिल
गोमती गोमय गोमलाडू गोमावत गोमुख गोयदाणी
गोयनका गोयल गोयलवाल गोयरा गोयूर गोरखपुरिया
गोरखा गोरला गोरसा गोरहा गोरक्षा गोरिया गोल
गोलन्दा गोलन्दाज गोलपुरा गोलवाला गोलार
गोलावत गोलास गोलोका गोलोटिया गोल्या गोवरिया
गोवर्द्धनिया गोविन्दा गोसल गोसिंगा (घुलींगा)

गोसीला गोहगिया गोहा गोहिल गोहेजा गौ गौठल
गौड़ गौडी गौतम गौदला गौधन गौबड़ गौभुज
गौर गौरी गौरव गौरवा गौलण गौली गौलेचा
गौविल गौशाला गौहरी ग्रह ग्रवा ग्राह ग्रीवायण
ग्रीष्म ग्रीस ग्वाला (गवालिया)

घ घंटमैला घठोतिया घटोत्कच घटोया
घटोलिया घडा घडिया घण्टेलिया घमोतिया घरगाँगी
घरूका घसकी घसेटिया घहुला घाघस घाँची
घाटमदासोत घाठमवंशी घाटोवाल घाड घाणी घाती
घालचोक घासमुना घासपुरिया घासी घिलदयाल घी
घीघल घीया घुघ घुघलोत घुडिया घुणावत
(घुनावत) घुनियार घुल्ल घेगरिया घेटा घेरवाल
घेरिया घेवरिया घैरवेश घेवुरा घोखा घोखाड़
घोडा घडाखुरा घोडावत घोडद्या घोतड घोबिहंगा
घोर घोरखोता घोरवाल घोंरी घोष घोषणीय
घोंसला घोसी घोटड घौदयाल

च चँवर चँवरगोड (चमरगौड) चँवाडा
चकचाप चकसेना चकित चकिया चकेरीवाल चकेपाल
चकोर चक्कड़िया चक्कीफेरा चकवे चक्रभुज चक्रवर्ती
चक्रीवाल चङ्गा चचावत चटिर चडक चडचर
चडसिया चडिया चणा चण्डक चतुर चतुर्भुज
चतुर्भुजोत चतुर्मुख चतेला चनहड चनावत चन्दणा
चन्दणावत चन्दराग चन्दवाडा चन्दवारिया चन्दिया
चन्देल (चन्देरीवाल) चन्देवा चन्धियल चन्द्र (चान्दिया)

चन्द्रगुप्ता चन्द्रदन्ती चन्द्रभड चन्द्रभागा चन्द्रमौली चन्द्रवाल चन्द्रवंशी चन्द्रसेनिया चन्द्राणी चन्द्रावत चप चमडिया चमरूबारिया चमावाल चमोली चम्प चरखा चरखीवाल चरडा चरपरिया चरर चरावडिया चरिया चरुवा चरोड चलवार चलैया चहरवाल चहत्रवाल चहिर चहू चाँगू चाँचरा चाँदपुरिया चाँदरा चाँदवाल चाँदा चाँदू चाँदोलिया चाँपटा चाँपावत चाँवक चाँवडा चाँवलिया चाँवोडा चाखन चाचक चाचीन चाचूण चाचोनिया चाडी चाण चापोत्कट चामकूटिया चामड चामलिया चामिकर चारकरिया चारङ्गा चारु चाल चालक चालुक्य चासट चाह चाहड चाहना चाहिल चिगनोडा चिडचिडा चिडावा चिडावत चिणगारा चितरावा चितलङ्गी चित्तोडा चित्रगुप्त चित्ररथ चित्रवाल चिथड चियू चिनक्या चिनोरिया चिन्नुवाल चिमन चिरावडा चिरैया चिवमा चीता चीतारा चीपट चीवड चील चीलमौता चीवडा चीवा चुकलेडा चुङ्गुल चुन्चु चुटवेली चुटिया चुरादिया चुरेला चुस्मी चुहल चूडा चूडासमा चूनिया चूर्ण चूलिया चेङ्गल चेचाणी चेडवाल चेत चेदी चेनिय चेरु चेवावा चेहर चैला चोखा चोखेडिया चोघा चोज चोटीस्या चोपडा चोन्धा चोरडिया चोराला चौकना चौड (चौडा) चौडावत चौधरी चौपड चौपडा चौमुँह चौरपाल चौरवोला चौरा चौरास्या चौलक चौलु चौहड चौहान चौहिल

छ

छकडा छक्कड छगल छछीयाल छछोहा छजलाणी छडकिया छडगण छता छतेरा छत्रवाल छत्रसाल छदिया छना छन्दवाल छवडा छवडोता छब्बे छमछर छमुँहा छम्म छरकलोंत छल छलेरवरिया छविया छांट छाँडवाल(छाँदवाल) छाक छागा छाछिया छाजलोत छाजल्या छाजिर छाजेड छाडा छाण छातरीवाल छायकलिया छापरवा छापरवेत छापोला छारोटा छाल छालम छालवार छालिया छालेचा छावडा छाहडिया छिणगारा छिदकहाला छिलोदिया छिव्वर छीतर छीपा छीलिया छूतवन छेना छेर छेलवाल छैल छौलक छौगा छौडोरिया छौहरिया

ज

जँवारा जकली जकवाल जखणावत जखोतरा जग जगतसिंह जगतीधर जगतुङ्ग जगदेवमल्ल जगन्नाथ जगमालोत जगरवाल जगरोत जगवान जगायन जङ्गजीता जङ्गम जङ्गारा जङ्गावत जङ्गी जचरे जजरीवा जञ्जया जञ्जुहा जट [जटरे] जटलावत [सुरेतवाल] जटानी जटीचा जङ्गोता जडवाल जडिया जडेवा जणेजा जण्डू जति [यति] जदरोला जनक जनवारा जनवाला जनहू जनारा जनिया जन्नजो जम [जमवई] जमीपा जम्बूर [जमूर] जम्बूसरा जम्बूनिया जयगोता जयचन्दा जयदेवा जयभट्ट जयमला जयरथ जयसिंह जयस्वामी जरडा जरधाल जराल जल जलकट जलचर जलवीजा जलभेज जलमांछिया जलमानुष जलमीणा जलहरी जलवाणी जलवाल जलावत जलोतरा जलोदार जशठड जस जसकरण जसकोटी जसथोरा जसरैया जसाहाडा जसुइवाल जसेरा जसोदिया जसोदी जाइलवाल जांगडा जांगी जांगेडा जाकवा जाकवाल जाखल जाखीवाल जाखेटिया जागल जाचक जाजू जाजोधा जाटल [जाटलिया] जाटू जाटेडा जाटेचा जाना जानी जातूकरण जानेचा जापलवाल जापस जाम [जामका] जामावाल जारजवाल जारवाल (जालवाल) जालपोता जालानी जालिया जालोदरी जावजा जावा जावाला (जावाली) जासावत जिञ्जघा जिञ्जल जिटा जिनसेना जिनेटपालिया जिन्दल जिन्दा जीजाठी जीत जीतरा जीनहुआ जीनहारा जीभूत जीर जीरावाल जीर्णवाल जीवता जीवन जीवनेचा जीवाणी जुगलिया जुजेतसया जुजेसरी जुनगरी जुनीवाल जुम्बाइया जुल्मी जुस्टल जूझाणा जूडवाल जूणद्या जुनवाल (जोणवाल) जूनासव जूवल जूहरी जेटी जेठिया जेतमला जेतली जेतवा जेतसी जेजा जेतावट जेदरोठिया जेलमी जेवगा जेसहरिया जेसानी जैडवा जैथलवाल जैथला जैनावत जैनी जैफ जैमनी जैरवाल जैरामा जैशला जहुल जोइया जोकडा जोगदीना जोगनेरा जोगिया जोगीदासोत जोगू जोजा जोडजा जोडा जोंतक जोधा जोधाणी जोनवाड जोपाल जोरवाल जोरा जोराठी जोलदा जोला जोशी जोहा ज्योति

झ

झंकारा झँगसिया झँगाणा झँझराजा झँडेला झँवर झँवरी झँकोलवा झँगाला झगडोला झझूवाडिया झमाला झरवाल झरोला झरियाला झाँक झाँकल झागड झगरा झाजडा झाटलवाल झाडवा झाडझूडा झाडोदा झापला झापावत झाबू झारेडा झालरिया झाला झालाई झालोरा झावड झावरवाल झावला झावावत झिकारा झींगण झीगद झीतडा झूंझा झोइया झोटा झोटिंग झोपडा झोला झोवाल झारावत (झुरावत)

ट

टँक टंकरिया टँगिया टंच टँटोर टंटोरिया टकचाल टकला टकशालिया टक्कीवाल टगल टटवाडा टडेया टपगोता टनिक टहुलिया टाँक टाँकरिया टाँकसिया टांकू टाँगी टाँटिया टाँटू (टांटूण) टाड टापरिया टानी टावरिया टावाणी टिकोरा टिलक टिहरिया टीक्र टीकायता टीटोडा टीडा टीमरा टीला टीलावत टुगरोला टूकलिया टूजकी टूडाडा टूडिया टूवाणी टेका टेटिया टेढा टेलिया टोंगस टोडरमल्लोत टोडवाल टोडरिया टोडिया टोपीवाल टोवर टौंगे

ठ

ठंठवाल ठकुरिया ठकुरोत ठग ठगाणा ठठोलिया ठमेला ठाँईया ठाकुर ठाकुराणा ठाकुरी ठोकालिया ठोडेसरिया ठामला ठामा ठाला ठावा ठीक ठीकरिया ठीगड़ ठीगण ठींगा ठीमर ठूंठा ठेकेदार ठेठू ठेलेवाल ठोडला ठोलिया

ड

डकाई (डकेती) डकोती डगरहा डगरावत डगरिया डगसरिया डगौर डचकोडा डचेलिया डठियाला डडगोता डडवाणिका डडवासी डढावत डण्डावत डण्डी डण्डोनिया डण्डोलिया डफगोता डफरिया डभा डभाई डला डवाँच्या डहत्था डहरा डाँकरहा डाँकल डाँकलिया डाँकी डाँकूपालिया डाँगट डाँगमार डाँगार डाँगरगोता डाँगरा डाँगलिया डाँगसरिया डाँगा डाँगी डाँड डाडरवाल डाढ़ाला डाढेला डपेडा डाबी डाभला डाभी डामा डायोढा डायनीं डाल्या डावलिया डाहडा डाहली डाहिय'

डिगोला डिडियल डिडूता डिडूल डींगा डींडू डीघर डीलण डुमेला डूँगर डूंगरजाला डूंगरपुरिया डूंगरवाला डूंगरसिंह डूंगरावत डूंगरिया डूंगरीपाल डूंगरेचा डूंगरोत डूंगवारिया डूंगोत डूंमरिया डूराणा डेचरवाल डेडरिया डेहरवाल डेहरी डेचवाल डोकर डोकरिया डोग डोगरा डोड डोडवाडिया डोडा डोडिया डोंडी डोबवाल (डोभवाल) डोवा डोरवाल डोरिया डोलरवा डोलीवाल (डोली) डोसी डोही डौहा डौरगोता डौलण ड्योढी वाल

ढ

ढँढिया ढड्ढा ढनाक ढमोला ढलचा ढाईगोता ढांकरिया ढाँकिया ढांडर ढांडल ढाँडा ढांढू ढाण ढावरिया ढाही ढिल्लीवल ढींक ढीडा ढीमरी ढूँढक ढूंढेरिया ढेलठिया ढेलरिया ढेंकुलिया ढैया ढेरिया ढोंकरिया ढोलवारिया ढोलूकिया ढोढा ढौर ढौल

त

तँवर [तमर] तँग तक्षशिला तक्षक तणगिया तणोत तनोटिया तन्तुवाय तपा तबलिया तमकूरिया तमाली तम्बोली तरकरे तरट तरसिया तरसिंह तराड तराला तरेडिया तलावडा तलिया तलेडा तवाह तसेला [तसेरा] तहनानी ताँबावत ताँबी ताँबोला ताखा तागडिया तागेर ताजी ताडिया ताण तातमार तातहड तातिया तातेडा ताप तापडा] ताप्ती तामडी ताम्रपर्णी तायल तारक तारण तारा तारानमोली तारियाल तारोडिया तालजङ्घ तालड ताला तासोरिया तिकना तिजारा तिमिगल तियोरा तिरंगी [तरङ्गी] तिलखान तिलिङ्गी तिलवाहा तिला तिलाञ्जलिया तिलारा तिलावी तिलोडिया तिलोणी तिलोत्तमा तिलोवा तिवाडी [त्रिवेदी] तिकडिया तीखा तीडा तीतल तीगमार तीर्थ तीर्थंकरिया [तीर्थङ्करिया] तीवडा तीशाली तीसमार तीसला तीसरा तुगर तुङ्ग तुङ्गी तुताडिया तुनाग तुनार तुरङ्गी तुरुष्क तुलसारा तुलसिया तुलावत तुलवा तुषार तूंघा तूंवड तूवरा तूरा तेजाणी तेजावत तेराला तेरोडा तेलडिया तेलाणी तेसरिया

तेहरिया तेहा तैतीग तैमूरा तैरवा तैत्रीमीणा तौंगी तौडरवाल तौडावाल तोम' तौरण तौरोहिया तौलिया तौसीला तौहिया त्रागु त्रिगुणा त्रिजाल त्रिनोली त्रिपुरा त्रिशूलिया त्रेता त्रैलिङ्ग

थ थँडिल थँडिया थडीवाल थणवाल थंदवाल थनधवाल थँभा थधड़ थत्ता थमकोडा थमकोरिया थरगोती थरगोलिया थरवाल थरावत थरेरा थलवाल थलीवाल थहीम थाँदवाल थाना थापड़ थापल थामणा थामला थारु थारोवार थावरिया थाहर थिनाणी थिपकिया थिरचा थिरदेवा थिरावाल थुरवाल थेटू थेपाडिया थोक थोहरी

द दंगवल दंगवाडा दंडावा दंडी दंतारा दक दक्खनाडा दक्ष दखनी दगा दजारा दडकीवाल दडजा दडरथ दतवरिछा दतिया दतोरिया दत्तपुरिया दथवर दधिमत दनवट दनूलिया दन्ती दमलका दमाणी दयाधाता दयालदामोत दरगडा दरगद दरगेरा दरभावत दरावरिया दरिया दरुकेल [जगरवाल] दरोग दर्दगाइया दलगण दलथंत्र दलपत दलपिंगल दलसुरखा दलाल दलावत दविडवाल दशा दसपुरा दसनामी दसानी दसेरा [दशहरा] दसेरु दसोतर दसौंदी दसोध दहलावत दहिया दहीवाल दाइम दाँतालिया दाँतीवाल दांतोलिया दाँत्राणी दांदडा दांदिया दागड दाडई दाता दातार दानव दानिक दानी दानू दानोला दाभी दामडी दामडे दामोदर दायमा दायमेचा दारा दालासी दालिया दालेया दावक दावी दास दासानी दासोत दाहराया दिति दिपारिया दिल्लिया दिल्लीत दिलोतिया दीक्षित दीगा दीप [दीपक] दिपसिंही दीबडवाल दीतरिया दीवोदासी दीहा दुण्डा दुदवेहा दुदा दुदावत दुधगाल दुधा दुधारी दुवलिया दुलबे [द्विवेदी] दुमाला दुमोही दुरडा [दुराडा] दुरावत दुर्गपाल दुर्गपालोत दुर्गवंशी दुर्जनशाली दुत्राणी दुर्लभ दुलैत दुलैल दुलहावत दुसरिया दुसाध्य [दुसाधोत] दुसेना दुहाना दूगड दूजावत दूजे दूढानी दूदवाल दूतूलिया दूमवाल दूरा दगवंशी देगडा देगरहा देगल देडरिया देदावत

देधोत देरडा देरवाल देलरवाल देलादा देवखत्री देवगढा देवट देवडवाल देवदत्तिया देवनाथ देवपालोत देवपुरा देवभीड देवर देवराज [देवराजाणी] देवरात देवल देवलसखा देवा देवाँदा देवादीत देवानन्दी देवारी देवासी देवीदास देशलहरा देशरडा देशरला देसाई देसोत देहगया देहतोडा देहरु देहीवाल दैगंड दैत्य दोण्डा दोदा दीनावत दोरोडिया दौरैया दोलरिया दोवडा दोवत दोवरमाल दोववाल दोवाल दोषी दोहरिया दोहा (दोहिया) दौडवाल दौवर दौहर द्रवालिया द्रुपद द्रोण द्वारकाणी

ध धंग धंद धंदपाल धंधूका धकेरा धजिया धडवाही धडीवाल धतड धतूरिया धनगरा धनचाह धनडाय धनधड धनपति धनपाल धनसुरा धनेहरिया धनालिया धनावडा धनावत धनुषिया धनुर्वेद धनोटा धनोरा धनञ्जय धन्नानी धमियां धम्मकिया धम्मल धम्मनियाँ (धम्मानी) धम्मी धर धरनीचर धरसेना धराणा धरानी धरापट्टा धराया धरीयोच धर्म धर्मघोष धर्मदेवा धर्मध्वजी धर्मवत धर्मा धर्मञ्जिदो धवल (धवली) धाँगा (धांगी) धागेलिया धांदिया धांधलोत धांधी धांधू धाकड (धागर) धाखा धाखाड धाडेवा धातिग धानमाली धाना धानेरिया धामट धामनेचा धामनोदिया धामवान धामी धामुइया धामुड धामोटिया धामोरिया धाया धारकर धारा धाराणी धरासिण धारिया धारी धारु (धारुका) धावदोचा धावणिया (ध्यावणा) धावमान धावाई धासरोडा धींग धींगड (धींगा) धीरण धीरतराटी धीवर धुवेवा धुदेसेना धुदेटिया धुमर धुमोनिया धुरमनि धूरेला धुलिका धुवादिया धूंदमा धूंघडा धूकड धूट धूत (धूता) धूंधूमार धूपड धूमानी धूमावत धूमौण धूम्रराया धूम्रवत धूहड धृति धैगल धैनावत धैस धोखिया धोरनिया धोराण धोलजी धोवरी धौकिया धौटा धौधींगा धौल (धोलक) धौलकिया धौलपुरिया धौरिया धौलिया धौहर ध्रुलक ध्रुलेखी ध्रुवगोता ध्रुवण ध्रुवराज ध्रुववाल ध्रुविया

न न नईजाला नईता नकवाल नकीम नकुल नकोतर नक्षत्र नखचेत नगमोता नगयोचिया नगवाडा नगोधा नटनागर नटरावत नडला नत्थावत ननकाना ननवग ननियाल नंढ़ावा नन्दगोता नन्दीगोता नन्दीवर्धन नभ नमावलिया नमोड नर नरड नरथ नरवण नरवत नरवतपोल नरवरा नरवर्म्म नरवाडिया नरवानी नरवाइन नरा नरानी नरायण नरीद नरुका नरुदय नरेशन नरोदिया नलचा नलवाहिया नलवंशी नलोत नवग्रह नवनीता नवरथ नवाल नवामरा नहरवाल नहरूका नहहर नहुष नाईमीणा नाका नाग नागकेशी नगजी नागडा नागदी नागनवाल नागनोचा नागपुरिया नागर नागरकोटी नागरिया नागल नागलोत नागवान नागवंशी नागसेना नागार्जुन नागाणी नागादित्य नागेटा नागौरी नाचण नाटाणी नाडला नाडागर नाडिया नाडुलिया नाडोलिया नाणी नाथ नाथचल नाथू नादेडचा नादनी नादरिवाल नादूडा नादेचा नाबोतिया नानकशाही नानगाणी नानण नानधरानी नानवट नानावट नानीवाल नानेगाणी नानोली नापावत नामका नामदे नामावाल नायक नारण नारद नारायण नारिया नारेला नारोली नालछा नावटी नावडिया नावदोला नावनधर नावरण नावरिया नावेडा नावेडार नाहटा नाहड नाहर नाहरेडा (नारेडा) निकलङ्क निकाम निकुम्प निकुम्प निकुम्भ निखरिया निगम निद्रुम निधि निनव निनियाखोर निम्बावत निम्बेडा निरपोल निरूप निरूपम् निर्खी निर्भय निर्मला निर्मोह निर्वाणा निलङ्गद निवहरिया निविण निशीथ निषध निषाद निष्ठा नीचडदा नीमवाल नीमाणी नीमावत नीमी नीयक नीलकोवंश नुगरा नुजा · नुरावतिया नूनेजा नूरिया नृपाला नृपालिया नृसिंह नृसिंहपुरिया नृहर (नरहर) नेक नेकधर्म नेगमी नेगी नेणवाल नेतसोत नेनसरा नेनहरा नेना नैरगोल नेवर नेवरा नेवल नेवाला नैखा नैतानी नैध्रुव नैपालिया (नैपालों) नैयायिक नैरालिया नैषध नैसतोत नोकथा नोगाडा नोघरा नोटिया नोनगा नोनहारिया नोहदा नौकुदाल नौगडा नौटङ्की नौट-ङ्कीला नौनन्दा नोपाड नौमास नौरावत नौलया नौहृडा

प पईता पँवार (परमार) पखडिया पगरिया पङ्खी पङ्गा पचज्ञाना पचवारिया पचीसा पकेवरिया पचोन्या पचो-रिया पंछरिया पञ्चकण्ठीपञ्चकुछा पञ्चगण्य पञ्चगोती पञ्चतोरिया पञ्चन पंञ्चभडा पञ्चभदा पञ्चम पञ्चमवाल पञ्चमू पञ्चराया पञ्चलिङ्गिया पञ्चहाय पञ्चा पञ्चादी पञ्चायण पञ्चासिया पञ्चोलो पञ्जड पडगोती पटनी पटवा पटवारी पटवाल पटसारिया पटविद्या पटाका पटल पटोल पट्टधर पट्टी पट्टीश पटकोलिया पडसल्या पडाइया पडागा पडैया पडोल्या पण पण्डयाल पण्डित पण्डिया पतिक पतिया पत्ती पत्थर पदार्थी पतावत पद्मावती पधरत पधाड पनवारिया पनाणी पन्त पन्तलोसा तन्ध पपैया पवडी पमार पम्पोली पयाल परताणी परतीपो परधण परधाला परनामी परमसभा परशु पराहु परिमाण परिहार परोसा पर्वतसरिया पर्वतिया पलबाल पलासिया पल्लथ पल्ला पल्लीवाल (पालीवाल) पवनमथा पवनसुत पवनिया पवल पवाई पवेसिय पशुपति पसला पसाल पसावती (पुष्पवती) पसारी (पंसारी) पहडवा (पहरवा) पहनेडा पहलावत पहाडा पाँचा पांचावत पांड्या पांडवा पांडववंशी पाकल (प्राक्कुल) पाचीस्या पाजी पाट पाटणकर पाटणी पाटीदार पोटोद्या पाटोल्या पाठ पाठक पाठाय पाडी पाण पाणिनी पातल पाताणी पातीवाल पाथानिया पाथोलिया पादमोता पानी पापडिया पापडोला पापल्या पाबू-वाल पारख पारधी पारस पाराशर पारिया पारु पर्बूतिय पार्वतिय पालक पालवास पालमपुरा पालवंशी पाला पालाडी पालानी पालावत पालाश पालिया पालीबांध पालु पालेडचा पावगी पावड पावडा पावेचा पाहण पाहणिया पाहा पाहोडा पिकास पिङ्गला पिङ्गलिया पिचोनिया पितलर पितेकर पिथुरा पिपरोंना पिलोरिया पीडिया पीतल्या पीथाणी पीनाणी पीपडा पीपलिदा पीपलिया पीपा पीपाड पीपणी पीरा पीहरेचा पुखर पुगरिया पुछार पुछाल पुनतरा पुनसिया पुनरखिया पुनिया पुमोर पुरनिया पुरमीठ पुरवार पुरवंशी पुराणबंशी पुराणी पुराब पुरापा पुरिया पुरीमान पुरीवाल पुरीश पुरीशा पुरुका पुरुकुत्स

पुरुरवा पुरुजित् पुरुवंशी पूरुहोत्र पुरेजय पुरेयार पुरोहित (प्रोहित) पुलगतर पुलन्दा पुलस पुलस्त पुलिन्द पुष्प पुष्पवान पूआ पूखान पूज्य पूदडा पूदवाल पूया पूलवाल पूर्विया पृथ्वीराजिया पेखडा पेचिया पेठाल पेडीवाल पैतीसा पैलोरा पेंस पैसना पैसवाल पोकरण पोकरवाल पोकरा पोखली पोखरिया पोडल्या पोतियार पोत्था पोपाणी पोमाणी पोरवाल पोरुवाल पोरवंशी पौडरा पौडरिया पौडवाल पौतक पौरच पौरिवा पोरिया पौरस पौरिस पौलस्या पौलिक पौलीत पौसरिया प्याज प्याल प्यालठाकुर प्रातापिया प्रतिहार प्रधान प्रधोत प्रसेन प्रहराव प्रह्लाद प्रागाणी प्रामी प्रुहुत

फ

फडक फडदे फडा फणेटया फतहसिहोत फतेपुरिया फरवाल फरशु फरसावत फरसीधर फरसोला फरुरिया फलबाछिया फलपहु फलसा फलसावत फलासला फलासा फलोदिया फसला फाकरिया फाटक फाफट फाफू फाल फुमडा फुलवर फुलेरिया फुसला फुहीहार फूल फूलकचोल्या फूलगर फुलधरा फूलपगर फूलमाली फूलवासी फूलाणी फुसफान (पुष्पान) फेरीवाल फेलडा फोकटिया फौकरा फौगीफाल फौजदार फौटा फौफलिया

ब

बँग बंगड बँगला बंगलाना बंगवंशी बंगवासी बँदवाल बँदरा बँदकी बँदुइन बँबूली बंबोडा बकरिया बकायला बक्सर बक्सरिया बगछी रगडा बगडावत बगतिया बगदानी बगदाद बगराणा बगरेचा बगरोवा बगसरिया बगाड बघा बघेरवाल बघेला बघेलिया बचगेजा बचूहा बछमी बछावत बछिया बछोरु बच्छगोती बजडावत बजाज बजीफनी बट बडकूल बडगया बडगरा बडगूजर बडगोती बडगोरिया बडडेचा बडदावत बडनाई बडफूली बडमोआ बडल बडलोया बडवार बडवा बडवाल बडसाली बडसिंही बडहुल बडहेल बडा बडेर बडेला बडोदिया बढेर बढेरवाल बणफट्ट बणेयला बतमाँ बतामी

बतिया बत्तसाला बदला बदरेह बदिया बनजारा बनवाल बनसट बनाफर बनेडा बनेरिया बनोदा बनोधिया बन्द बन्दीछोडा बबाल बबेरवाल बब्बर बमनावत (बहमणावत) बमरिया बमसा बम्बादा बम्बेला बम्भ बरड बरोदिया बर्मिया बलोदिया बल्ला बाऊल बाँका बाँकलिया बाँकावत बांकेता बाँचा बाँसखोहा बाँसल बाँकण बाकल बाकला बागल बागडी बागला बागरिया बागाणी बाघवार बाघमार बछकपुरी बाछल बाछोडा बाजना बाजपना बाजरा बाजावाल बटोलिया बाड बाडा बाडिया बाण बाणेढा बाणावत बाधानी बानपुरिया बाफण बाफूर बाबल बाबलिया बाबाजी बाम बामन (बामन) बामानी बामेवत बारवाल बारहट बारा बारासेनी बारी बारीका बालकी बालम बालवग बालाक बालाजी बालावत बालिया बालोत बालोतरा बालोला बाल्हिक बावीवाल बासठ बासणवाल (बासनवातो) बासनी बाहका बाहला बाहवी बाहा बाहुक बाहुमान बिगमूना बित्रोलिया बिछूनिया बिजयनगरा [बिजयनगरा] बिजयराजिया बिजोरिया बिजोला बिडाला बिडोरिया बिदवार बिदामिया बिन बिनौला बिम्भसार बिम्भोसार बिरगया बिरुद किलकरिय बिलसिया बिलादरा बिलेटिया बिलोविया बिवालिया बिसारा बिसावल बिसोरिया बिस्मेछा बिहानी बिहॅल बिहोरिया बीच बीचड बीछीदाण बीजडा बीजल बीडवाल बीडा बीदा बीदावत बीमरोट बीरत बीरपालिया बीरमपालोत बीरहट्ट बीरानी बीलवाल बीसा बुक्रचिया बुगली बुचीवाल बुच्चा बुछा बुजेटी बुडार बुडेलिया बुणवत बुन्दचा बुन्देला बुन्देलखण्डी बुरड बुबुरा बुसा बूड बूतवाल बूरिया बेकट बेखण्डी बेगराकी बेजारा बेड बेडातया बेडरिया बेडब बेडा बेडीवाल बेदाला बेफलावत बेरहा बेरीबाल बेलदार बेलीमा बेवाल बेसर बेमबार बेसा बेहछ बेहट बेहट बेहडवाल बेहया बेहालिया बेंगाणी बैठवाल बैडवाल बैताला बैंहडा (बैनाड़ा) बैंरल बैरोठिया बोगडा बोछ बोटन बोडा बोड़ान बोढाई बोत्था बोथरा बोदा बोधनी बोनस बोंदस बोन्दिया बोपीचा बोया बोरदिया बोरधा बोरोचा बोल बोसा बोहरना बोहरा बहरायत बोहा बौंल ब्रजबासी ब्याडवाल ब्राह्मण

भ भँड भडा भक्कड भवत (भगत) भक्तिया (भगतिया) भखण्ड भगल भगवा भगवानोत भंग भंगर भंगवाल भंगिया भगोरिया भछेल भजन भट भटगौड भटड भटनेरा भटपाला भटवाल भटारिया भटूरिया भटेवरा भट्टरा भट्टारक भट्टाचार्य भटीगूंजर भड भडक भडकोली भडख्यावत भडगनिया भडगोती भडभूँजा भडली भडसाली भडसरा भडाज भडासरा भणक भण्डसुरा भण्डामा भण्डारी भतारिया भतेड भदरा भदरावत भदरोग भदावल भदसा भदेनी भदेसरा भदोरिया भनवग भमाली भयान भरकना भरजन भरडिया भरत भरतिया भरथान भरवाल भरवाहा भरसी भरेड भरोच भरोत भर्तृहरि भलनी भलयेच भल्लडिया भल्ला भल्लाट भसूगरिया भाइया भाँगड भाँगू भाँड भाँकर भाकेडवाल भाखूदी भागडोल भागराणी भागल भागवत भागीरथ भाज भाजी भाट भाटिया भाटी भाण्डगा भाण्डभोंक भाण्डावत भाण्डी भादर भादानी भादूपोता भानु भानेश भाभट भाभा भाभू भामडा भाभरवाल भाभरिया भामा भामावत भामिला भायक भायल भारखारी भारत भारतखण्ड भारद्वाज भारु भार्गव भालदा भालर भालवा भावजिया भावडा भावर भावला भावासिया भासचोल भास्कर भाहुआ भिजेनिया भिजोठिया भिढ़ग भिवाल भीडिया भीनमाल भीम भीमनोसा भीमपुरिया भीमल्ला भीमसार भीमसेन भीमेसर भीमोवत भील (भिल्ल) भीलग्वाल भीलगाड भीलदेवा भीसवरा भीहका भुआल भुजङ्ग भुरद भुरया भुरी भुरेचा भुरेतवाल भुगेतिया भुसावडा भुसावरिया भूक्ज भूकजवाल भूखण्ड भूखमारिया भूखा भूङ्गी भून्जा भूटक भूटा भूडंगा भूडां भूत भूनडा भूतवाल भूतेडिया भूदेव भूमा भूमिया भूमित्र भूरटिया भूरता भूरमुण्ड भूरा भूल भूलना भूवर भूषण भूषिक भृगुवंशी भेडरा भेडवाल भेडारिया भेडिया भेडोला भेरवा भेलाड भेजिया भेव भैंडुवा भैंस भैंसरोडा भैंसवा भैंसा भैंसोटा भैंसोडा भैसोदिया भोकुली भोग भोगदेवा भोगर भोगरा भोगवंशी भोगा भोजक भोजकरा भोजना भोथा भोपा भोपाल भोपाली भोवरा भोमपालोत भोमर भोरडिया भोरदा भोरवा भौंरायत भौंल भौलानी भौलावत

म मकर मकवाण मकवाल मखरिया मखानिया मग मगध मगर (मगरीय) मगसेलिया मङ्क मङ्गल मङ्गलोत मङ्गावाल मङ्गाल मचा मचिरा मचीया मछर मछालवार मछिया मच्छा मजठिया मजमलिया मझवारी मझूरी मञ्जु मट मटकाल मटरवाउ मटरिवसण मट्टड मट्टा मडकरा मड्या मडियाल मडैया मणगट मणहरा मण्डलोई मण्डावत मण्डावरिया मण्डाहूल मण्डियाल मण्डोवर मतकोला मत्तगज मत्स्य मथाण मदगज मदनपुरिया मदनवंशी मदना मदपाल मदलावत मदवंशी मदही मदारिया मदुरा मदोरिया मद्य मद्रक मधु मधुकरा मधुसूदन मनक्या मनभावक मनस्यु मनापी मनियारा मनु मनोरथ मनोल मन्त्री मन्यु मयण (मयणका) मयाणी मयाल मयूर मरड मरणंरा मरदावत मरदूला मरमट मरमर मरवट मरवण मरवाडा मरहठी मरीचि मरुत मरुधर मरोठी मरोड मरोला मलधार मलनी मलया मलयार मलसिया मलार मलिया मल्ल (मल्लड) मल्लहण मल्लावत मल्ली मल्लोई मसानी महकम महका महतवाल महता महतियाण महना महर महरवार महलोनिया महाग महागङ्ग महाजन महाजोध महाडिक महातुर महादेवा महधृति महानन्द (महानन्दी) महानसिंह महापाल महाभद्र महाभोजी महार महारथी महाराष्ट्र महावर महावीर महावीर्य महासिंहोत महासेना महिमवत महिमवाल महिराणा महिसर महीदेवा महीनाथ महीपा महीर महीसोर महेच महेन्द्र महेपावत महेश्वरी माइया माईथानी माँकड माँगलिया माँचिया माँची माँझी माँडावत माँडी माँडोत माँदड मांधता मावस्या माक्षिया माखण मागध माचीवाल माचोडिया माचोलिया माच्छया माच्छी मोटकोल माडन्य मांडल (माडलिया) माडवा मांडिया माडेसा माडोत माड्च माढर माण माणक माणकराजी माणकवाल माणकिया माणतवाल माणवा मातेशरा मात्या माथरा माथुर माथेश्वरा मादजा मादल मादा माद्री माधव माधोटी मानदेवा मानरवाल मानव मानावत मानास मानिया मानुधन्दा मामडिया मामुल मामोरी मारग मारवा मारवाडी मारस्था मारस्या मारु मारुनी मारेलिया मालकश मालदे

मालनेशा मालपुरिया मालवारी मालवी (मालव) मालहड़ा माला मालाणी माली (मालीवाल) मालु (मालुनी) मालेती मालोती माष (मनास) मासेटा मासोल्या माहप माहिल माहिली माहीरी (माहीर) माहेला माहोथी माहोर मिछेला मिढवान मितल मित्रायु मिथी मित्री मिपाल मिग्य मिर्चा मिर्जापुरिया मिलया मिलैसी मिश्र मिहर मिहरस मिहिर मीठलिया मीढ़ मीतेडा मीन मीनोयार मीनैडर मीमरोट मीमाणी मीरमार मीराण मीरा मुँहतोडा मुईवाल मुकट मकलाटा मुकराना मकीम मुकनाणी मुखतरपाल मुखर मुँगरवाल मुँगेण मुँगेरिया मुछाल मुँजवान मूँजी मुणेत मुत्थड मुदगल मुंदडा मुधडा मुनानेगी मुनिवर मुमाई मुमारगी मुरबया मुरछा (मूर्छा) मुरदिया मुरलीधर मुरशल्य मुराड मुराणा मुरारी मुराव मुरावे मुलतानी मुसानी मुसारा मुहाल मुहिलाणा मूँज मूँजाणी मूँडिया मूँढ मुतोतिया मूथा मूरक मूलगौड मूलपसाव मूलमेर मूलराज मूलराजोत मूलस्थानी मूसल (मोसल) मूँसा मृत्युञ्जया मेघजी मेघनाथ मेच मेचा मेझमराव मेठतिया मेडत मेडनिया मेडी मेढ मेढावत मेणबाँध मेता मेद मेधपुरिया मेनी मेनीवाल मेर (मेरनी) मेरावत मेव (मेंवरिया) मेवाडी मेवाती मेवाल मेहना मेहर मेहला मेहशर मैडी मैणावत मैत्रक मैत्रिय मैत्री (मेतरी) मैथली मैदला मैदानी मनकोली मैनपुरिया मैनर मैना मैनाल मैपावत मैया मैयाल (मेवाल) मैरावत मैव मैहरी मोअस मोकम मोकर मोकरडा मोकल्य मोकलो मोखर मोखरी मोगरा मोजाणी मोठ्या मोडेचा मोर्डिया मोतदान मोतिया मोतीवाल मोदावत मोनस मोरेडा मोरया मोहडा मोहनोत मोहव्वा मोहरी मोहित मोहीवाल मौगा मौधा मौजा मौठीस मौड मौथा मौदी मौधारा मौर मौरच मौरजाल (मौरजवाल) मौरडिया मौरण मौगणी मोरेला मौराक्ष मौरीशा मौर्यवंशी [मौर्य] मौलशिरा

य

यंग यंगरी यक्ष यजुर्वेदी यज्ञवाल यज्ञी यज्ञेश्वर यदु यदुवंशी यमदग्नि [जन्मदग्नि] यमराज ययाति यवन यवनगोती याग याजुप यातुधान यादव [यादू जादू]

यान्ववंशी यामूवार यार यास्क युगधर युगधान योगड योगो योगेश्वरी योद्धा योद्धेय यवित यौवनाश्व [युवनाश्व]

र

रखवाल रघुरावत रघुवरिया रघुवीरोत रघुवंशी रङ्क रङ्गरोट रजका रजोद रट्ट रठपाल रणजीता रणथम्म रणधीरा रणधीरोत रणपाल रणपलिया रणभल्लगोता रणमल्लोत रणवीर रणवीरोत रणवाली रतन [रत्न] रतनपुरा रतनसिंह रतन-सिंहोत रतनसूरा रतनावत रतपालिया रतवैया रत्ताणी रदबोल रधोल रन्ति रमधेनिया रविगोता रविया रविवंशी रसभ रसवासना रसिया रसूलपुरिया रहदोली रहलिया रहवार रहेस राईन्न राउत राओका राँका राँकला राकुण्ठा राक्षस राखडिया राखिया राकेचाह राघव राघोरिया राजकुमार राजगौड गाजगोता राजड राजपालक राजपाली राजपुरा राजपूत राजलवाल राजलोत राजवार राजहँस राजा राजावत राजिया राजोद राजोरा राजोरिया राट राटगोता राठगोता राठधी राठी राठोर राठोरिया राणकरा राणा राणाकुल रणावत राणेचा रातडिया रथक राँदेला रानगोता रानमद्रोत रानापोर रानैटा रानोटा रानौत रावृत रामका रामट रामगोता रामपाद रामपुरिया रामसैन्या रामनन्दी रामावत रामोत रामौला राय रायक रायकवाल रायका रायगवाल रायगोता रायथला रायधरिया रायपलिया रायवरेलिया रायमल्लोत रायली रायोणती राषका रावगौता रावण रावणा रावत रावतशीरा रावल रावलिया रावली राहड राहुगोआ रिखाल रिखोला रिगवार रिजोलिया रिठेरिया रिडगोता रींगरोट रीछा रीजल रीसाण रीहड रुकमा रुचिराश्व रुछा रुणवाल रुद्रोलिया रुद्रगण रुद्रोगोता रुद्रदत्ता रुधनिया रुपाखेती रुहडा रुहेरिया रूपगोत रूपधर रूपावत रेगामी रेणुका रेतक रेदिया रेवडा रेवडिया रेहवर रैकड्ड रैकवाल रैकरवाल रैत्र रैलिया रैवा रोकडिया रोखी रोगल रोटा रोटिया रोडा [रोडिया] रोणिया रोतीवाल रोदश्व रोपसली रोयला रोला रोशनगोता रोषिया रोषियाल रोहेचा रोहड रोहेडा रोहडिया रोहन्दे रोहा रोहित रौथान रौष

ल

लई लकड लकपत लकरहा लंकेश लक्ष्मण
लक्ष्मणावत लक्ष्मीवाल लखनपाल लखनभाल लखनोत लखपाल
लखवाल लखामी लखेश्वरी लखोमी लखोरी लखोस्या लघु
लघुश्रेष्ठ लङ्कवान लङ्केश्वर लङ्गा लङ्घा लटकण लट्टूरिया
लडावत लदड लध्या लबन्ध लबोज लम्पावत लखकरण
लम्बावत ललवाणी ललित ललितपुरिया ललोत्र लववंशो लवाण
लवार लवारगा लह लहडिया लहू लहेरिया लाखणसन लाखणपुरिया
लाखरिया लाखा लाखावत लाङ्ग लाङ्गर लाङ्गलोत लाचपुरिया
लाटा लाटोरिया लाड लाडआ लाडका लाडला लाडवा लाडूटा
लाडोत लातक लापसा लायलपुरिया लालचन्दोत लालत
लालसुरिया लालसोटिया लाला लालवन लालोयत लावनकर
लावल लावा लाहरिला लाहा लाहेटी लाहोरी लिकासण
लिखमी लिङ्गा लिङ्गायन लिच्छवी लिवया लिलोरिया लिहाली
लील लुकड लुणावत लुण्डा लुण्डीवाल लुद्रवा लुनराव लुम्बा
लुबेचा लुम्बुक लुलानी लूलोरा लुलोरिया लुबधक लुसड
लुहाडिया लुहिलवाल लूटण लूटमारिया लूण लूणिया लूसलिया
लेकुखास लेखनिया लेधोरिया लेलो लेवा लेहल लैगया लोइका
लोक लोगई लोगण लोगाक्षी लोग्या लोटण लोणेढा लोध
लोधी लोम लोमपाद लोमश लोलसुरिया लोह लोहकरेला
लोहखुरा लोहणी लोहना लोहमिया लोहरण लोहराज लोहागर लोहार-
मीणा लोहारण लोहित लौका लौग लौगर लौढा लौदवाल
लौधा लौलक लौला

व

वंशी वकट वखेरा वगदीवान वङ्कावत
वङ्गल वङ्गारी वछा वच्छ वज्र वाज्रिया वटण्डा वडला
वडेला वडोदिया वण्डोत वत्सर वथवाल वदनोर वदला वधेरवा
वनचर वनमाली वनिहारी वनसिया वयाला वयच्छवाल वरण
वरथन वरदवार वरनामी वरनारिया ववमाका वरमेचा वरलद
वरलाग वरवाल वरहर वराह (वराह) वरियान वरुद्ध वरेश्वर
वरैया वर्गी वलदेवा वलभद्रोत वलही वलोदा वशिष्ठ वसुगोता

वसुदेवानी वसुर वहडा वहाला वहिया वहेडवाल वाकाटक
वागद वागरी वाग्रीव वाघनाला वाघेला वाजल वाडव वात्सल्य
वातापी वानत वानर वानिया (वाणिया) वापी वाफली
वामदेव वाममार्गी वायच वायडा वायस वायसराय वायुदेव
बारवाल वारिधि वार वाल वाला वालि वालिया वाल्मीकि
वावरिया वावलवाल वाशल वास वासव वासलवाल वासानी
वासुदेवा वास्ती वाहड वहिती वाहोरा विगड बि.य विजयन्त
विजयसेनी बिजोहरा विठल विडानी वितथ विथिल विदमन
विर्दभ विदुर विदेहा विद्याधर विनछल विनिय विनायक बिनोद
विपु विप्र विवडा विभाडा विरलाल विरोलिया विलाडा विवल
विवाल विवाह विशनोली विशाक विशुद्ध विशेष विश्वजीत
विश्मामित्र विश्मावशु विष विष्णु विष्णोई विष्टि विसटी
विसद (विशद) विसेन विसंग विसर्व विहद वीका वीजा
वीजानी वीजावर्गी (विजयवर्गी) वीजासन वितहव्य वीथर वीर
वीरगूजर वीरभहोत (वीरभद्रोत) वीरलोग वील वुगडाल
वुतोलारावत वुलहर वृन्दावानिया वृशनी वृषभ वृषल वृषसेना
वृहदहस्त वेगडा वेठेला वेडनोरा वेडवाल वेडिया वेण वेद
वेदिया वेदंगा वेपालिया वेर वेवा वेश वेहिल वैद्य वैश्यम्पायन
वोकडिया वोगडा वोरसंड वोरा व्याल व्यास

श

शक शङ्ख शङ्खवाल शङ्खवेचा शङ्खलेचा
शङ्खार शनिगुरा शरण शलरिया शलवंशी शाक्य शाकसेनी
शामोली शाला शालिवाहन शाली शालीभट्टा शालोत शासन
शिवगण (स्यौगण) शिवदासोत शिवरिया शिवि शिशुनाग
शिशुनाथ शिशुपालवंशी शिहरी शीकरवाल शींगडिया शींद
शीदी शीशोद शीशोदिया शुगं शुनक शून्ना शैलर शैलवासी
शैलाण शैलारा शोदा शौनक श्राद्धा श्रावक श्रीमाते श्रीमान्
श्रीमाल श्रीमाली श्रीवास्तव श्रोत्रिय

ष

षोढा

स संगजी संगारिया सगेला संघवई संघो
संजारण संत्राणा सकचिया सकटा सकर सकरना सकरवा
सकरेचा सकरेठा सकरेला सकल सकसेना सखहिया सगजाला
सगरायचा सगरिय सगरिया सगहा सचेती सचोपा सचोप
सजमेला सटक सठिया सण सतरवारिया सतला सतावत
सतीपाल सदव्रती सदावर सदिया सदिल संदेश सद्दा सद्द
सनाढ्य सपडा सपावत सपाहा सफला सबर सबरला सबलमना
सबलसिंही सभरी समदरिष समरगोता समरथला समरसिंही
समरूप समरोचक समुरा समे समेचा सम्राट सरदा सरदार
सरपरवरिया सरपाल सरयूपारी सरला सरवरिया सरवाहिया
सरवाडा सरवंगी सरसगाल सरसा सरसालिया सराज सराहा
सरिया सरांज सराद सरूपा (स्वरूपा) सरेला सलारिया
सलोरिया सवरवार सवरा सवा सवाडा सवाया ससिल सहता
सहर सहसमल्लोत सहाय सही सहूरिया साँईदरसिया (साँई-
दर्शिया) साँकरिया साँकला साँखला साँख्य साँगाणी साँगावत
साँगिया साँचा साँचारा साँचोरा साँड साँडाला साँडी साँडेरा
साडेला साँभर साँभूरु साँभरेडा साँवरा साँवरिया साँवला साँसिया
सागर सागरा सागरिया सागवाल साजन साजवान साजानिया
साधुका सानवा सामवाल सामवंशी सामा सामेरा सामोरा सायच सायण
साँरग सारजा सारणिया सारणोता सारविया सारिया सारोचा
सारोलिया सावणिया साहा साहिव सिंगल सिंहड सिंहवच्छा
सिंहा सिक्ख सिखरवाड सिखरिया (शिखरिया) सिखेत
सिगरोरिया सिघराव सिघरिया सिघियाल सिंघेल सिणगार
सिद्ध सिद्धराव सिधाडिया सिनसिनया सिन्द सिन्दूरिया सिन्दूल
सिन्धराव सिन्धु सिपरा सिपाणी सिपाही सिभरिया सिमाल
सियत सियरा सियाल सियावत सिरथुमन सिरमौर सिरनामी
सिरदिया सिरोसा सिरोहिया सिलवाल सिलर सिलारा सिलावट
सिलाहडा सिलोइया सिलोनी सिवाणिया सिवारिया सिबाल
सींकवान सींगणवाल सींगी सीख सीखा सीखी सीगोटा
सीणोल्या सीतोल्या सीधका सीधड सीमला सील सीलभण्डारी
सीलामा सीहरा (शीहिरा) (शीरा) सुकाली सुखा सुखाणी

सुखावत सुग सुचेचा सुठानिया सुत्तिया सुत्ता सुथार सुदेवा
सुधरा सुनाई सुन्दर सुन्दरिया सुमर सुमेरा सुरजव सुरदेवा
सुरपुरा सुराणा सुराष्ट्र सुराहा सुलाणा सुलाल सुलाला सुवरहा सूँघा
सूँडा सूका सूकेडा सूतबेचा सूत्रधार सूँदेडा सूँधरेडा सूर
(शूर) सूरज सूरसामन्त (सूरसाँवत) सूरसेनी सूर्यवंशी सूर्या
सूसावत [सुसुहावत सूसाला सेख (शेष) सेखाणी सेठगोता
सेठी सेढ्या सेत [शवेत] स्वेताम्बर सेतुरावा सेनजीता सेनी
सेपाट सेमट सेरा सेरावत सेरीयार सलिया सेलोत सेवट
सेवडा सेवल सेवरिया सेवा सेहलोत सैंगर सैणवा सैणा सैंभटा
सैलवाद सैलहत्थ सैलाना सोकन्दा सोखला सोजतिया सोटिला
सोडवाल सोतीपाल सोवरा सोनगण सोनपालिया सोनेसरिया सोभावत
[शोभावत] सोमवंशी सोमारा सोरीपार सोलक सोलंकी सोला
सोवतसी सोहा सोहागिन [सुहागिन] सौगर सौगला सौजनिया
सौठनिया सौटियासौढा सौढरा सौधा सौधिया सौनगरा सौनगिरा
सौनी सौनेत सौपाल [शिवपाल] सौरठ सौरठिया सौरा सौह
सौहर सौहाल स्थूला स्नानी स्याणा

ह हँताल हँस हँसावत हँसरिया हँसाला
हकाण हगुडिया हजारी हजूरी हटारिया हटीला हडका हडचूरा
हडया हडिया हडिपाल हण [हन] हतवाल हताई हत्थुडिया
हद्दा हनुमान हबूरा हम हमदर हम्मीरिया हयवर हयँश्व
हयाति हर हरकट हरखा हरखाणी हरखावत हरगदा हरगौड
हरजील हरतिया हरदतिया हरद्वारी हरदा हरदुआ हरदुल्हा
हरदेवा हरदोल हनहर हरवाल हरवंशी हरसा हरसाना
हरसाला हरसिंहोत हरसौरा हरि हरिश्चन्द्रा हरिश्चन्द्राणी
हरिण हरिद्रिया [हल्दिया] हरितस हरिदासोत हरिया हरियाणा
हरिवंशी हरीती हरीतवाल हलटा हलद हलधर हलीशा हलौरा
हल्ला हसला हसलाथ हस्ती हाकरिया हाटवाल हाडा हाडीगण
हाथाला हापडा हाहा हारा हारावल हारीत हाला हाली
हाँसिया हाहा हिंसक हिगोवा हिडौला हिन्दू हिन्दुवंशी हिन्दोइया
हिमकर हींगडा हीडा हीडोया हीमतसी हीरणा हीरावत

हीरावत हीराणी हीरोली हुडकिया हुडिया हुण हुवह हुमड हुरेर हुल हुल्लड हुल्ला हेजस हेडाऊ हेडिया हेतर हेमपुरिया हेमावत हेमाचल हेमु हेरगिया हेरना हेरिया हेलवा हैहल हैहय होराठाकुर होरिया होरिसा होहरण होहल